Index

S.No.	Name	Page No
1.	Shri Kabir Bhajans	2 -5
2.	Hindi Bhajans	6-25
3.	Satsang Bhajans	26-40
4.	Shri Ram,Krishan,Mata Ji Bhajans	41-62
5.	Sant Sagramdas Ji Ke Sakhi	63-87
6.	Shri Sudama Charit	88-91
7.	Shri Hari Geeta	92-109

संत कबीर भजन संग्रह

१ करम गति टारै २

२ रे दिल गाफिल २

३ झीनी झीनी बीनी चदरिया २

४ दिवाने मन २

५ केहि समुझावौ ३

६ बहुरि नहिं ३

७ मन लाग्यो मेरो यार ३

८ भजो रे भैया ३

९ बीत गये दिन ३

१० नैया पड़ी मंझधार ३

११ तूने रात गँवायी ३

१२ राम बिनु ४

Introduction to Sant Kabir

Kabirdas, a great devotee, was greatly attracted to the Hindu spiritual tradition though by birth he was not one and was drawn to saint Ramananda, whom he recognised as his Guru. Every day he used to stand outside the gates of the saint's Ashram since he could not muster enough courage to enter the premises with the fond hope that his presence would be noticed by his disciples who would convey the matter to the saint.

Days rolled on and his wish remained unfulfilled. At last God Himself decided to intercede. The saint while going out for his bath overheard the idols of Rama and Lakshmana in his worship speaking to one another, to the effect that they should leave the Ashram because a great devotee had not been welcomed there.

The saint who was not aware of Kabir's daily visit to his Ashram found him weeping on the banks of the river and in the darkness of the morning hour stumbled on him and invountarily utterred "Rama". Kabir fell prostrate at his feet in gratitude for he received this utterance as his initiation and the touch of his Guru's feet as the greatest blessing and became a great saint in due course. Such was his devotion and faith.

From 'Religion' brief of 'The Hindu' 'Devotion alone matters to God' dated December 29, 1997

---

१ करम गति टारै

करम गति टारै नाहिं टरी ॥ टेक॥
मुनि वसिष्ठ से पण्डित ज्ञानी, सिधि के लगन धरि ।
सीता हरन मरन दसरथ को, बनमें बिपति परी ॥१॥
कहँ वह फन्द कहाँ वह पारधि, कहँ वह मिरग चरी ।
कोटि गाय नित पुन्य करत नृग, गिरगिटस्जोन परि ॥२॥
पाण्डव जिनके आप सारथी, तिन पर बिपति परी ।
कहत कबीर सुनो भै साधो, होने होके रही ॥३॥

२ रे दिल गाफिल

रे दिल गाफिल गफलत मत कर,
एक दिना जम आवेगा ॥ टेक॥
सौदा करने या जग आया,
पूँजी लाया, मूल गँवाया,
प्रेमनगर का अन्त न पाया,
ज्यों आया त्यों जावेगा ॥१॥
सुन मेरे साजन, सुन मेरे मीता,
या जीवन में क्या क्या कीता,
सिर पाहन का बोझा लीता,
आगे कौन छुडावेगा ॥२॥
परलि पार तेरा मीता खडिया,
उस मिलने का ध्यान न धरिया,
टूटी नाव उपर जा बैठा,
गाफिल गोता खावेगा ॥३॥
दास कबीर कहै समुझाई,
अन्त समय तेरा कौन सहाई,
चला अकेला संग न कोई,
कीया अपना पावेगा ॥४॥

३ झीनी झीनी बीनी चदरिया

झीनी झीनी बीनी चदरिया ॥ टेक॥
काहे कै ताना काहे कै भरनी,
कौन तार से बीनी चदरिया ॥१॥
इडा पिङ्गला ताना भरनी,
सुखमन तार से बीनी चदरिया ॥२॥
आठ कँवल दल चरखा डोलै,
पाँच तत्त्व गुन तीनी चदरिया ॥३॥
साँ को सियत मास दस लागे,
ठोंक ठोंक कै बीनी चदरिया ॥४॥
सो चादर सुर नर मुनि ओढी,
ओढि कै मैली कीनी चदरिया ॥५॥
दास कबीर जतन करि ओढी,
ज्यों कीं त्यों धर दीनी चदरिया ॥६॥

४ दिवाने मन

दिवाने मन, भजन बिना दुख पैहौ ॥ टेक॥
पहिला जनम भूत का पै हौ, सात जनम पछिताहौउ ।
काँटा पर का पानी पैहौ, प्यासन ही मरि जैहौ ॥१॥
दूजा जनम सुवा का पैहौ, बाग बसेरा लैहौ ।
टूटे पंख मँडराने अधफड प्रान गँवैहौ ॥२॥
बाजीगर के बानर होइ हौ, लकडिन नाच नचैहौ ।
ऊँच नीच से हाय पसरि हौ, माँगे भीख न पैहौ ॥३॥
तेली के घर बैला होइहौ, आँखिन ढाँपि ढँपैहौउ ।
कोस पचास घरै माँ चलिहौ, बाहर होन न पैहौ ॥४॥
पँचवा जनम ऊँट का पैहौ, बिन तोलन बोझ लदैहौ ।
बैठे से तो उठन न पैहौ, खुरच खुरच मरि जैहौ ॥५॥
धोबी घर गदहा होइहौ, कटी घास नहिं पैंहौ ।
लदी लादि आपु चढि बैठे, लै घटे पहुँचैंहौ ॥६॥
पंछिन माँ तो कौवा होइहौ, करर करर गुहरैहौ ।

उडि के जय बैठि मैले थल, गहिरे चोंच लगैहौ ॥ ७॥
सत्तनाम की हेर न करिहौ, मन ही मन पछितैहौउ ।
कहै कबीर सुनो भइ साधो, नरक नसेनी पैहौ ॥ ८॥

५ केहि समुझावौ

केहि समुझावौ सब जग अन्धा ॥ टेक॥
इक दुइ होयँ उन्हैं समुझावौं,
सबहि भुलाने पेटके धन्धा ।
पानी घोड पवन असवरवा,
ढरकि परै जस ओसक बुन्दा ॥ १॥
गहिरी नदी अगम बहै धरवा,
खेवन-हार के पडिगा फन्दा ।
घर की वस्तु नजर नहि आवत,
दियना बारिके ढूँढत अन्धा ॥ २॥
लागी आगि सबै बन जरिगा,
बिन गुरुज्ञान भटकिगा बन्दा ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो,
जाय लिङ्गोटी झारि के बन्दा ॥ ३॥

६ बहुरि नहिं

बहुरि नहिं आवना या देस ॥ टेक॥
जो जो गए बहुरि नहि आए, पठवत नाहिं सँस ॥ १॥
सुर नर मुनि अरु पीर औलिया, देवी देव गनेस ॥ २॥
धरि धरि जनम सबै भरमे हैं ब्रह्मा विष्णु महेस ॥ ३॥
जोगी जङ्गम औ संन्यासी, दीगंबर दरवेस ॥ ४॥
चुंडित, मुंडित पंडित लोई, सरग रसातल सेस ॥ ५॥
ज्ञानी, गुनी, चतुर अरु कविता, राजा रंक नरेस ॥ ६॥
कोइ राम कोइ रहिम बखानै, कोइ कहै आदेस ॥ ७॥
नाना भेष बनाय सबै मिलि ढूऊंढि फिरें चहुँ देस ॥ ८॥
कहै कबीर अंत ना पैहो, बिन सतगुरु उपदेश ॥ ९॥

७ मन लाग्यो मेरो यार

मन लाग्यो मेरो यार फ़कीरी में ॥
जो सुख पाऊँ राम भजन में
सो सुख नाहिं अमीरी में
मन लाग्यो मेरो यार फ़कीरी में ॥
भला बुरा सब का सुनलीजै
कर गुजरान गरीबी में
मन लाग्यो मेरो यार फ़कीरी में ॥
आखिर यह तन छार मिलेगा
कहाँ फिरत मग़रूरी में
मन लाग्यो मेरो यार फ़कीरी में ॥
प्रेम नगर में रहनी हमारी
साहिब मिले सबूरी में
मन लाग्यो मेरो यार फ़कीरी में ॥
कहत कबीर सुनो भयी साधो
साहिब मिले सबूरी में
मन लाग्यो मेरो यार फ़कीरी में ॥

८ भजो रे भैया

भजो रे भैया राम गोविंद हरी ।
राम गोविंद हरी भजो रे भैया राम गोविंद हरी ॥
जप तप साधन नहिं कछु लागत, खरचत नहिं गठरी ॥
संतत संपत सुख के कारन, जासे भूल परी ॥
कहत कबीर राम नहीं जा मुख, ता मुख धूल भरी ॥

९ बीत गये दिन

बीत गये दिन भजन बिना रे ।
भजन बिना रे, भजन बिना रे ॥
बाल अवस्था खेल गवांयो ।
जब यौवन तब मान घना रे ॥
लाहे कारण मूल गवाँयो ।
अजहुं न गयी मन की तृष्णा रे ॥
कहत कबीर सुनो भई साधो ।
पार उतर गये संत जना रे ॥

१० नैया पड़ी मंझधार

नैया पड़ी मंझधार गुरु बिन कैसे लागे पार ॥
साहिब तुम मत भूलियो लाख लो भूलग जाये ।
हम से तुमरे और हैं तुम सा हमरा नाहिं ।
अंतरयामी एक तुम आतम के आधार ।
जो तुम छोड़ो हाथ प्रभुजी कौन उतारे पार ॥
गुरु बिन कैसे लागे पार ॥
मैं अपराधी जन्म को मन में भरा विकार ।
तुम दाता दुख भंजन मेरी करो सम्हार ।
अवगुन दास कबीर के बहुत गरीब निवाज़ ।
जो मैं पूत कपूत हूं कहौं पिता की लाज ॥
गुरु बिन कैसे लागे पार ॥

११ तूने रात गँवायी

तूने रात गँवायी सोय के दिवस गँवाया खाय के ।
हीरा जनम अमोल था कौड़ी बदले जाय ॥
सुमिरन लगन लगाय के मुख से कछु ना बोल रे ।
बाहर का पट बंद कर ले अंतर का पट खोल रे ।
माला फेरत जुग हुआ गया ना मन का फेर रे ।
गया ना मन का फेर रे ।
हाथ का मनका छाँड़ि दे मन का मनका फेर ॥
दुख में सुमिरन सब करें सुख में करे न कोय रे ।
जो सुख में सुमिरन करे तो दुख काहे को होय रे ।
सुख में सुमिरन ना किया दुख में करता याद रे ।
दुख में करता याद रे ।
कहे कबीर उस दास की कौन सुने फ़रियाद ॥

१२ राम बिनु

राम बिनु तन को ताप न जाई ।
जल में अगन रही अधिकाई ॥
राम बिनु तन को ताप न जाई ॥
तुम जलनिधि मैं जलकर मीना ।
जल में रहहि जलहि बिनु जीना ॥
राम बिनु तन को ताप न जाई ॥

तुम पिंजरा मैं सुवना तोरा ।
दरसन देहु भाग बड़ मोरा ॥
राम बिनु तन को ताप न जाई ॥
तुम सद्गुरु मैं प्रीतम चेला ।
कहै कबीर राम रमूं अकेला ॥
राम बिनु तन को ताप न जाई ॥

Please send corrections to Sunder Hattangadi (gourish@internet1.net)
Last updated February 12, 1999

.. hindi bhajan ..

॥ हिंदी भजन ॥

Ram Bhajan

shrii raamachandra kRipaalu
श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणम् ।
नवकञ्ज लोचन कञ्ज मुखकर कञ्जपद कञ्जारुणम् ॥१॥

कंदर्प अगणित अमित छबि नव नील नीरज सुन्दरम् ।
पटपीत मानहुं तड़ित रुचि सुचि नौमि जनक सुतावरम् ॥२॥

भजु दीन बन्धु दिनेश दानव दैत्यवंशनिकन्दनम् ।
रघुनन्द आनंदकंद कोशल चन्द दशरथ नन्दनम् ॥३॥

सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु उदार अङ्ग विभूषणम् ।
आजानुभुज सर चापधर सङ्ग्राम जित खरदूषणम् ॥४॥

इति वदति तुलसीदास शङ्कर शेष मुनि मनरञ्जनम् ।
मम हृदयकञ्ज निवास कुरु कामादिखलदलमञ्जनम् ॥५॥

Thumak chalat raamacha.ndra
ठुमक चलत रामचंद्र बाजत पैंजनियां ॥

किलकि किलकि उठत धाय गिरत भूमि लटपटाय ।
धाय मात गोद लेत दशरथ की रनियां ॥

अंचल रज अंग झारि विविध भांति सो दुलारि ।
तन मन धन वारि वारि कहत मृदु बचनियां ॥

विद्रुम से अरुण अधर बोलत मुख मधुर मधुर ।
सुभग नासिका में चारु लटकत लटकनियां ॥

तुलसीदास अति आनंद देख के मुखारविंद ।
रघुवर छबि के समान रघुवर छबि बनियां ॥

---

bhaj man raam charaN
भज मन राम चरण सुखदाई ॥

जिन चरनन से निकलीं सुरसरि शंकर जटा समायी ।
जटा शन्करी नाम पड्यो है त्रिभुवन तारन आयी ॥

शिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक शेष सहस मुख गायी ।
तुलसीदास मारुतसुत की प्रभु निज मुख करत बढ़ाई ॥

---

jaanakii naath sahaay kare.n
जानकी नाथ सहाय करें जब कौन बिगाड़ करे नर तेरो ॥

सुरज मंगल सोम भृगु सुत बुध और गुरु वरदायक तेरो ।
राहु केतु की नाहिं गम्यता संग शनीचर होत हुचेरो ॥

दुष्ट दुःशासन विमल द्रौपदी चीर उतार कुमंतर प्रेरो ।
ताकी सहाय करी करुणानिधि बढ़ गये चीर के भार घनेरो ॥

जाकी सहाय करी करुणानिधि ताके जगत में भाग बढ़े रो ।
रघुवंशी संतन सुखदायी तुलसीदास चरनन को चेरो ॥

---

raghukul pragaTe hai.n
रघुकुल प्रगटे हैं रघुबीर ॥

देस देस से टीको आयो रतन कनक मनि हीर ।

घर घर मंगल होत बधाई भै पुरवासिन भीर ।

आनंद मगन होइ सब डोलत कछु ना सौध शरीर ।

मागध ब ह्मी सबै लुटावैं गौ गयंद हय चीर ।

देत असीस सूर चिर जीवौ रामचन्द्र रणधीर ।

---

badhaiyaa baaje
बधैया बाजे आंगने में बधैया बाजे ॥

राम लखन शत्रुघन भरत जी झूलें कंचन पालने में ।
बधैया बाजे आंगने में बधैया बाजे ॥

राजा दसरथ रतन लुटावै लाजे ना कोउ माँगने में ।
बधैया बाजे आंगने में बधैया बाजे ॥

प्रेम मुदित मन तीनों रानि सगुन मनावैं मन ही मन में ।
बधैया बाजे आंगने में बधैया बाजे ॥

राम जनम को कौतुक देखत बीती रजनी जागने में
बधैया बाजे आंगने में बधैया बाजे ॥

paayo jii mai.nne

पायो जी मैंने राम रतन धन पायो ॥

वस्तु अमोलिक दी मेरे सतगुरु किरपा करि अपनायो ।

जनम जनम की पूंजी पाई जग में सभी खोवायो ।

खरचै न खूटै चोर न लूटै दिन दिन बढ़त सवायो ।

सत की नाव खेवटिया सतगुरु भवसागर तर आयो ।

मीरा के प्रभु गिरिधर नागर हरष हरष जस गायो ।

---

paayo nidhi raam naam

पायो निधि राम नाम पायो निधि राम नाम ।
सकल शांति सुख निधान सकल शांति सुख निधान ।
पायो निधि राम नाम ॥

सुमिरन से पीर हरै काम क्रोध मोह जरै ।
आनंद रस अजर झरै होवै मन पूर्ण काम ।
पायो निधि राम नाम ॥

रोम रोम बसत राम जन जन में लखत राम ।
सर्व व्याप्त ब्रह्म राम सर्व शक्तिमान राम ।
पायो निधि राम नाम ॥

ज्ञान ध्यान भजन राम पाप ताप हरण नाम ।
सुविचारित तथ्य एक आदि मध्य अंत राम ॥
पायो निधि राम नाम ॥

पाया पाया पाया मैंए राम रतन धन पाया ॥
राम रतन धन पाया मैने राम रतन धन पाया ॥

---

man laagya mero yaar

मन लाग्यो मेरो यार फ़कीरी में ॥

जो सुख पाऊँ राम भजन में
सो सुख नाहिं अमीरी में
मन लाग्यो मेरो यार फ़कीरी में ॥

भला बुरा सब का सुन्लीजै
कर गुजरान गरीबी में
मन लाग्यो मेरो यार फ़कीरी में ॥

आखिर यह तन छार मिलेगा
कहाँ फिरत मगरूरी में
मन लाग्यो मेरो यार फ़कीरी में ॥

प्रेम नगर में रहनी हमारी
साहिब मिले सबूरी में
मन लाग्यो मेरो यार फ़कीरी में ॥

कहत कबीर सुनो भयी साधो
साहिब मिले सबूरी में
मन लाग्यो मेरो यार फ़कीरी में ॥

---

pa.Dho pothii me.n

पढ़ो पोथी में राम लिखो तख्ती पे राम ।
देखो खम्बे में राम हरे राम राम राम ॥

राम राम राम राम राम ॐ । (२)
राम राम राम राम राम राम । (२)
राम राम राम राम हरे राम राम राम ॥

देखो आंखों से राम सुनो कानों से राम ।
बोलो जिव्हा से राम हरे राम राम राम ॥
राम राम ...

पियो पानी में राम जीमो खाने में राम ।
चलो घूमने में राम हरे राम राम राम ॥
राम राम ...

बाल्यावस्था में राम युवावस्था में राम ।
वृद्धावस्था में राम हरे राम राम राम ॥
राम राम ...

जपो जागृत में राम देखो स्वपन में राम ।
पाओ सुषुप्ति में राम हरे राम राम राम ॥
राम राम ...

---

siitaa raam siitaa raama

सीता राम सीता राम सीताराम कहिये ।
जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये ॥

मुख में हो राम नाम राम सेवा हाथ में ।
तू अकेला नाहिं प्यारे राम तेरे साथ में ।
विधि का विधान जान हानि लाभ सहिये ।

किया अभिमान तो फिर मान नहीं पायेगा ।
होगा प्यारे वही जो श्री रामजी को भायेगा ।
फल आशा त्याग शुभ कर्म करते रहिये ।

ज़िन्दगी की डोर सौंप हाथ दीनानाथ के ।
महलों मे राखे चाहे झोंपड़ी मे वास दे ।
धन्यवाद निर्विवाद राम राम कहिये ।

आशा एक रामजी से दूजी आशा छोड़ दे ।
नाता एक रामजी से दूजे नाते तोड़ दे ।
साधु संग राम रंग अंग अंग रंगिये ।
काम रस त्याग प्यारे राम रस पगिये ।

सीता राम सीता राम सीताराम कहिये ।
जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये ॥

---

haariye na himmat

हारिये न हिम्मत बिसारिये न राम ।
तू क्यों सोचे बंदे सब की सोचे राम ॥

दीपक ले के हाथ में सतगुरु राह दिखाये ।
पर मन मूरख बावरा आप अँधेरे जाए ॥

पाप पुण्य और भले बुरे की वो ही करता तोल ।
ये सौदे नहीं जगत हाट के तू क्या जाने मोल ॥

जैसा जिस का काम पाता वैसे दाम ।
तू क्यों सोचे बंदे सब की सोचे राम ॥

---

prem mudit man se kaho

प्रेम मुदित मन से कहो राम राम राम ।
राम राम राम श्री राम राम राम ॥

पाप कटें दुःख मिटें लेत राम नाम ।
भव समुद्र सुखद नाव एक राम नाम ॥

परम शांति सुख निधान नित्य राम नाम ।
निराधार को आधार एक राम नाम ॥

संत हृदय सदा बसत एक राम नाम ।
परम गोप्य परम इष्ट मंत्र राम नाम ॥

महादेव सतत जपत दिव्य राम नाम ।
राम राम राम श्री राम राम राम ॥

मात पिता बंधु सखा सब ही राम नाम ।
भक्त जनन जीवन धन एक राम नाम ॥

---

raam se ba.Daa

राम से बड़ा राम का नाम ।
अंत में निकला ये परिणाम ये परिणाम ।

सिमरिये नाम रूप बिन देखे कौड़ी लगे न दाम ।
नाम के बाँधे खिंचे आयेंगे आखिर एक दिन राम ॥

जिस सागर को बिना सेतु के लाँघ सके ना राम ।
कूद गये हनुमान उसीको ले कर राम का नाम ॥

वो दिलवाले क्या पायेंगे जिन में नहीं है नाम ।
वो पत्थर भी तैरेंगे जिन पर लिखा हुआ श्री राम ॥

---

meraa raam

मेरा राम सब दुखियों का सहारा है ॥

जो भी उसको टेर बुलाता उसके पास वो दौड़ के आता ।
कह दे कोई वो नहीं आया यदि सच्चे दिल से पुकारा है ॥

जो कोई परदेस में रहता उसकी भी वो रक्षा करता ।
हर प्राणी है उसको प्यारा अपना बस यही नारा है ॥

---

bole bole re raam

बोले बोले रे राम चिरैया रे ।
बोले रे राम चिरैया ॥

मेरे साँसों के पिंजरे में
घड़ी घड़ी बोले
घड़ी घड़ी बोले ॥
बोले बोले रे राम चिरैया रे ।
बोले रे राम चिरैया ॥

ना कोई खिड़की ना कोई डोरी
ना कोई चोर करे जो चोरी
ऐसा मेरा है राम रमैया रे ॥
बोले बोले रे राम चिरैया रे ।
बोले रे राम चिरैया ॥

उसी की नैया वही खिवैया
बह रही उस की लहरैया
चाहे लाख चले पुरवैया रे ॥
बोले बोले रे राम चिरैया रे ।
बोले रे राम चिरैया ॥

---

raam kare so hoy

राम झरोखे बैठ के सब का मुजरा लेत ।
जैसी जाकी चाकरी वैसा वाको देत ॥

राम करे सो होय रे मनवा राम करे सो होये ॥

कोमल मन काहे को दुखाये काहे भरे तोरे नैना ।
जैसी जाकी करनी होगी वैसा पड़ेगा भरना ।
काहे धीरज खोये रे मनवा काहे धीरज खोये ॥

पतित पावन नाम है वाको रख मन में विश्वास ।
कर्म किये जा अपना रे बंदे छोड़ दे फल की आस ।
राह दिखाऊँ तोहे रे मनवा राह दिखाऊँ तोहे ॥

---

raam raam raT re
राम राम राम राम राम राम रट रे ॥
भव के फंद करम बंध पल में जाये कट रे ॥

कुछ न संग ले के आये कुछ न संग जाना ।
दूर का सफ़र है सिर पे बोझ क्यों बढ़ाना ।
मत भटक इधर उधर तू इक जगह सिमट रे ॥
राम राम राम राम राम राम रट रे ॥

राम को बिसार के फिरे है मारा मारा ।
तेरे हाथ नाव राम पास है किनारा ।
राम की शरण में जा चरण से जा लिपट रे ॥
राम राम राम राम राम राम रट रे ॥

---

raam naam ras piije
राम नाम रस पीजे मनुवाँ राम नाम रस पीजै ।
तज कुसंग सत्संग बैठ नित हरि चर्चा सुन लीजै ॥
काम क्रोध मद लोभ मोह को बहा चित्त से दीजै ।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर ताहिके रंग में भीजै ॥

---

mere man me.n hai.n
मेरे मन में हैं राम मेरे तन में है राम ।
मेरे नैनों की नगरिया में राम ही राम ॥

मेरे रोम रोम के हैं राम ही रमैया ।
सांसो के स्वामी मेरी नैया के खिवैया ।
गुन गुन में है राम झुन झुन में है राम ।
मेरे मन की अटरिया में राम ही राम ॥

जनम जनम का जिनसे है नाता
मन जिनके पल छिन गुण गाता ।
सुमिरन में है राम दर्शन में है राम
मेरे मन की मुरलिया में राम ही राम ॥

जहाँ भी देखूँ तहाँ रामजी की माया
सबही के साथ श्री रामजी की छाया ।
त्रिभुवन में हैं राम हर कण में है राम
सारे जग की डगरिया में राम ही राम ॥

---

he rom rom me.n
हे रोम रोम में बसने वाले राम ।
जगत के स्वामी हे अंतर्यामी ।
मैं तुझसे क्या माँगू ॥

भेद तेरा कोई क्या पहचाने ।
जो तुझसा हो वो तुझे जाने ।
तेरे किये को हम क्या देवे ।
भले बुरे का नाम ॥

---

raam sumir raam sumir
राम सुमिर राम सुमिर यही तेरो काज है ॥

मायाको संग त्याग हरिजू की शरण राग ।
जगत सुख मान मिथ्या झूठो सब साज है ॥१॥

सपने जो धन पछान काहे पर करत मान ।
बारू की भीत तैसे बसुधा को राज है ॥२॥

नानक जन कहत बात बिनसि जैहै तेरो दास ।
छिन छिन करि गयो काल तैसे जात आज है ॥३॥

---

teraa raamajii kare.nge
तेरा रामजी करेंगे बेड़ा पार उदासी मन काहे को करे ॥

नैया तेरी राम हवाले लहर लहर हरि आप सम्हाले
हरि आप ही उठायें तेरा भार उदासी मन काहे को करे ॥

काबू में मंझधार उसी के हाथों में पतवार उसी के
तेरी हार भी नहीं है तेरी हार उदासी मन काहे को करे ॥

सहज किनारा मिल जायेगा परम सहारा मिल जायेगा
डोरी सौंप के तो देख एक बार उदासी मन काहे को करे ॥

तू निर्दोष तुझे क्या डर है पग पग पर साथी ईश्वर है ।
सच्ची भावना से कर ले पुकार उदासी मन काहे को करे ॥

From Ram Charit Manas

---

bhaye pragaT kRipaalaa
From baalakaa.nD
भये प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी ।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप बिचारी ॥

लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुज चारी ।
भूषन वनमाला नयन बिसाला सोभासिन्धु खरारी ॥

कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि बिधि करौं अनंता ।
माया गुन ग्यानातीत अमाना वेद पुरान भनंता ॥

करुना सुख सागर सब गुन आगर जेहि गावहिं श्रुति संता ।
सो मम हित लागी जन अनुरागी भयउ प्रकट श्रीकंता ॥

ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति बेद कहै ।
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै ॥

उपजा जब ग्याना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै ।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै ॥

माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा ।
कीजे सिसुलीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनूपा ॥

सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा ।
यह चरित जे गावहि हरिपद पावहि ते न परहिं भवकूपा ॥

बिप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार ।
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार ॥

---

namaami bhakt vatsalaM
From araNyakaa.nD
stuti by atri muni

नमामि भक्त वत्सलं । कृपालु शील कोमलं ॥
भजामि ते पदांबुजं । अकामिनां स्वधामदं ॥
निकाम श्याम सुंदरं । भवाम्बुनाथ मंदरं ॥
प्रफुल्ल कंज लोचनं । मदादि दोष मोचनं ॥
प्रलंब बाहु विक्रमं । प्रभोऽप्रमेय वैभवं ॥
निषंग चाप सायकं । धरं त्रिलोक नायकं ॥
दिनेश वंश मंडनं । महेश चाप खंडनं ॥
मुनींद्र संत रंजनं । सुरारि वृन्द भंजनं ॥
मनोज वैरि वंदितं । अजादि देव सेवितं ॥
विशुद्ध बोध विग्रहं । समस्त दूषणापहं ॥
नमामि इंदिरा पतिं । सुखाकरं सतां गतिं ॥
भजे सशक्ति सानुजं । शची पति प्रियानुजं ॥
त्वदंघ्रि मूल ये नराः । भजंति हीन मत्सराः ॥
पतंति नो भवार्णवे । वितर्क वीचि संकुले ॥
विविक्त वासिनः सदा । भजंति मुक्तये मुदा ॥
निरस्य इंद्रियादिकं । प्रयांति ते गतिं स्वकं ॥
तमेकमद्भुतं प्रभुं । निरीहमीश्वरं विभुं ॥
जगद्गुरुं च शाश्वतं । तुरीयमेव केवलं ॥
भजामि भाव वल्लभं । कुयोगिनां सुदुर्लभं ॥
स्वभक्त कल्प पादपं । समं सुसेव्यमन्वहं ॥
अनूप रूप भूपतिं । नतोऽहमुर्विजा पतिं ॥
प्रसीद मे नमामि ते । पदाब्ज भक्ति देहि मे ॥
पठंति ये स्तवं इदं । नरादरेण ते पदं ॥
व्रजंति नात्र संशयं । त्वदीय भक्ति संयुताः ॥

---

shyaam taamaras daam
From araNyakaa.nD
stuti by muni sutiixshhN - shishhya of agatsya Rishhi

कह मुनि प्रभु सुन बिनती मोरी । अस्तुति करौं कवन बिधि तोरी ॥
महिमा अमित मोरि मति थोरी । रबि सन्मुख खद्योत अंजोरी ॥

श्याम तामरस दाम शरीरं । जटा मुकुट परिधन मुनिचीरं ॥
पाणि चाप शर कटि तूणीरं । नौमि निरंतर श्री रघुवीरं ॥
मोह विपिन घन दहन कृशानुः । संत सरोरुह कानन भानुः ॥
निशिचर करि बरूथ मृगराजः । त्रातु सदा नो भव खग बाजः ॥
अरुण नयन राजीव सुवेशं । सीता नयन चकोर निशेशं ।
हर हृदि मानस बाल मरालं । नौमि राम उर बाहु विशालं ॥
संसय सर्प ग्रसन उरगादः । शमन सुकर्कश तर्क विषादः ॥
भव भंजन रंजन सुर यूथः । त्रातु नाथ नो कृपा वरूथः ॥
निर्गुण सगुण विषम सम रूपं । ज्ञान गिरा गोतीतमनूपं ॥
अमलमखिलमनवद्यमपारं । नौमि राम भंजन महि भारं ॥
भक्त कल्पपादप आरामः । तर्जन क्रोध लोभ मद कामः ॥
अति नागर भव सागर सेतुः । त्रातु सदा दिनकर कुल केतुः ॥
अतुलित भुज प्रताप बल धामः । कलि मल विपुल विभंजन नामः ॥
धर्म वर्म नर्मद गुण ग्रामः । संतत शं तनोतु मम रामः ॥

जदपि बिरज ब्यापक अबिनासी । सब के हृदयं निरंतर बासी ॥
तदपि अनुज श्री सहित खरारी । बसतु मनसि सम काननचारी ॥
जे जानहिं ते जानहुं स्वामी । सगुन अगुन उर अंतरजामी ॥
जो कोसलपति राजिव नयना । करौ सो राम हृदय मम अयना ॥
अस अभिमान जाइ जनि भोरे । मैं सेवक रघुपति पति मोरे ।

---

jay raam ramaaramanaM
From uttarakaa.nD
stuti after raama's raajyaabhishheka

जय राम रमारमनं शमनं । भव ताप भयाकुल पाहि जनं ॥
अवधेस सुरेस रमेस विभो । शरनागत मांगत पाहि प्रभो ॥
दससीस विनासन बीस भुजा । कृत दूरि महा महि भूरि रुजा ॥
रजनीचर बृंद पतंग रहे । सर पावक तेज प्रचंड दहे ॥
महि मंडल मंडन चारुतरं । धृत सायक चाप निषंग बरं ॥
मद मोह महा ममता रजनी । तम पुंज दिवाकर तेज अनी ॥
मनजात किरात निपात किये । मृग लोग कुभोग सरेन हिये ॥
हति नाथ अनाथनि पाहि हरे । विषया बन पांवर भूलि परे ॥
बहु रोग बियोगिन्हि लोग हये । भवदंघ्रि निरादर के फल ए ॥
भव सिंधु अगाध परे नर ते । पद पंकज प्रेम न जे करते ॥
अति दीन मलीन दुःखी नितहीं । जिन्ह कें पद पंकज प्रीत नहीं ॥
अवलंब भवंत कथा जिन्ह कें । प्रिय संत अनंत सदा तिन्ह कें ॥
नहिं राग न लोभ न मान मदा । तिन्ह कें सम बैभव वा बिपदा ॥
एहि ते तव सेवक होत मुदा । मुनि त्यागत जोग भरोस सदा ॥

करि प्रेम निरंतर नेम लियें । पद पंकज सेवत शुद्ध हियें ॥
सम मानि निरादर आदरही । सब संत सुखी बिचरंति मही ॥
मुनि मानस पंकज भृंग भजे । रघुवीर महा रनधीर अजे ॥
तव नाम जपामि नमामि हरी । भव रोग महागद मान अरी ॥
गुन सील कृपा परमायतनं । प्रनमामि निरंतर श्रीरमनं ॥
रघुनंद निकंदय द्वंद्व घनं । महिपाल बिलोकय दीन जनं ॥

बार बार बर मागउं हरषि देहु श्रीरंग ।
पद सरोज अनपायानी भगति सदा सतसंग ॥

Ram Dhun

---

sarva shaktimate
From Amrit Vani
By Swami Satyanandjii Maharaj

सर्व शक्तिमते परमात्मने श्री रामाय नमः ॥

---

raam dhun
From Amrit Vani
By Swami Satyanandjii Maharaj

बोलो राम बोलो राम बोलो राम राम राम ।

श्री राम श्री राम श्री राम राम राम ।

जय जय राम जय जय राम जय जय राम राम राम ।

जय राम जय राम जय जय राम ।
राम राम राम राम जय जय राम ॥

पतित पावन नाम भज ले राम राम राम ।
भज ले राम राम राम भज ले राम राम राम ॥

अशरण शरण शांति के धाम मुझे भरोसा तेरा राम ।
मुझे भरोसा तेरा राम मुझे सहारा तेरा राम ॥

रामाय नमः श्री रामाय नमः ।
रामाय नमः श्री रामाय नमः ॥

अहं भजामि रामं सत्यं शिवं मंगलं ।
सत्यं शिवं मंगलं सत्यं शिवं मंगलं ॥

वृद्धि आस्तिक भाव की शुभ मंगल संचार ।
अभ्युदय सद्धर्म का राम नाम विस्तार ॥ (२)

---

paavan teraa naam hai
From Bhakti Prakash
By Swami Satyanandjii Maharaj
पावन तेरा नाम है पावन तेरा धाम ।
अतिशय पावन रूप तू पावन तेरा काम ॥

मुझे भरोसा राम का रहे सदा सब काल ।
दीन बंधु वह देव है हितकर दीनदयाल ॥

मुझे भरोसा राम तू दे अपना अनमोल ।
रहूँ मस्त निश्चिन्त मैं कभी न जाऊं डोल ॥

जो देवे सब जगत को अन्न दान शुभ प्राण ।
वही दाता मेरा हरि सुख का करे विधान ॥

मुझे भरोसा परम है राम राम श्री राम ।
मेरी जीवन ज्योति है वही मेरा विश्राम ॥

गूँजे मधुमय नाम की ध्वनि नाभि के धाम ।
हृदय मस्तक कमल में राम राम श्री राम ॥

---

apanaa kari ke raakhihai.n
अपना करि के राखिहैं शरण गहे की लाज ।
शरण गहे की राम ने कबहुँ न छोड़ी बाँह ॥

---

prem ke pu.nj dayaa ke dhaam
प्रेम के पुंज दया के धाम मुझे भरोसा तेरा राम ।
मुझे भरोसा तेरा राम मुझे सहारा तेरा राम ॥

---

tan hai teraa man hai teraa
तन है तेरा मन है तेरा प्राण हैं तेरे जीवन तेरा ।
सब हैं तेरे सब है तेरा मैं हूं तेरा तू है मेरा ॥

---

raam apanii kRipaa se
राम अपनी कृपा से मुझे भक्ति दे ।
राम अपनी कृपा से मुझे शक्ति दे ॥

नाम जपता रहूँ काम करता रहूँ ।
तन से सेवा करूँ मन से संयम करूँ ॥

नाम जपता रहूँ काम करता रहूँ ।
श्री राम जय राम जय जय राम ॥

---

raam japo raam dekho
राम जपो राम देखो राम के भरोसे रहो ।
राम काज करते रहो राम के भरोसे रहो ॥

राम जपो राम देखो राम के भरोसे रहो ।
राम काज करते रहो राम को रिझाते रहो ॥

aaraadhy shriiraam
आराध्य श्रीराम त्रिकुटी में ।
प्रियतम सीताराम हृदय में ॥

श्री राम जय राम जय जय राम ।
राम राम राम राम रोम रोम में ॥
श्री राम जय राम जय जय राम ।
राम राम राम राम जन जन में ॥
श्री राम जय राम जय जय राम ।
राम राम राम राम कण कण में ॥
श्री राम जय राम जय जय राम ।
राम राम राम राम राम मुख में ॥
श्री राम जय राम जय जय राम ।
राम राम राम राम राम मन में ॥
श्री राम जय राम जय जय राम ।
राम राम राम राम स्वांस स्वांस में ॥
श्री राम जय राम जय जय राम ।
राम राम राम राम राम राम राम ॥
राम राम राम राम राम राम राम ।
राम राम राम राम राम राम राम ॥

---

paayaa paayaa paayaa
पाया पाया पाया मैंने राम रतन धन पाया ।
राम रतन धन पाया मैंने राम रतन धन पाया ॥

kRishhNa Bhajan

---

jaago ba.nsiivaare lalanaa
जागो बंसीवारे ललना जागो मोरे प्यारे ॥

रजनी बीती भोर भयो है घर घर खुले किवाड़े ।
गोपी दही मथत सुनियत है कंगना की झनकारे ॥

उठो लालजी भोर भयो है सुर नर ठाड़े द्वारे ।
ग्वालबाल सब करत कोलाहल जय जय शब्द उचारे ॥

माखन रोटी हाथ में लीजे गउअन के रखवारे ।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर शरण आया को तारे ॥

---

na.nd baabaajii ko chhaiyaa
नंद बाबाजी को छैया वाको नाम है कन्हैया ।
कन्हैया कन्हैया रे ॥
बड़ो गेंद को खिलैया आयो आयो रे कन्हैया ।
कन्हैया कन्हैया रे ॥

काहे की गेंद है काहे का बल्ला
गेंद मे काहे का लागा है छल्ला
कौन ग्वाल ये खेलन आये खेलें ता ता थैया ओ भैया ।
कन्हैया कन्हैया रे ॥

रेशम की गेंद है चंदन का बल्ला
गेंद में मोतियां लागे हैं छल्ला
सुघड़ मनसुखा खेलन आये बृज बालन के भैया कन्हैया ।
कन्हैया कन्हैया रे ॥

नीली यमुना है नीला गगन है
नीले कन्हैया नीला कदम्ब है
सुघड़ श्याम के सुघड़ खेल में नीले खेल खिलैया ओ भैया ।
कन्हैया कन्हैया रे ॥

---

banavaarii re
बनवारी रे

जीने का सहारा तेरा नाम रे
मुझे दुनिया वालों से क्या काम रे

झूठी दुनिया झूठे बंधन, झूठी है ये माया
झूठा साँस का आना जाना, झूठी है ये काया
ओ, यहाँ साँचा तेरा नाम रे
बनवारी रे ॥।

रंग में तेरे रंग गये गिरिधर, छोड़ दिया जग सारा
बन गये तेरे प्रेम के जोगी, ले के मन एकतारा
ओ, मुझे प्यारा तेरा धाम रे
बनवारी रे ॥।

दर्शन तेरा जिस दिन पाऊँ, हर चिन्ता मिट जाये
जीवन मेरा इन चरणों में, आस की ज्योत जगाये
ओ, मेरी बाँहें पकड़ लो श्याम रे
बनवारी रे ॥।

---

jay kRishhNa hare
जय कृष्ण हरे श्री कृष्ण हरे ।
दुखियों के दुख दूर करे जय जय जय कृष्ण हरे ॥

जब चारों तरफ़ अंधियारा हो आशा का दूर किनारा हो ।
जब कोई ना खेवन हारा हो तब तू ही बेड़ा पार करे ।
तू ही बेड़ा पार करे जय जय जय कृष्ण हरे ॥

तू चाहे तो सब कुछ कर दे विष को भी अमृत कर दे ।
पूरण कर दे उसकी आशा जो भी तेरा ध्यान धरे ।
जो भी तेरा ध्यान धरे जय जय जय कृष्ण हरे ॥

---

prabal prem ke paale

प्रबल प्रेम के पाले पड़ कर प्रभु को नोयम बदलते देखा ।
अपना मान भले टल जाये भक्त मान नहीं टलते देखा ॥

जिसकी केवल कृपा दृष्टि से सकल विश्व को पलते देखा ।
उसको गोकुल में माखन पर सौ सौ बार मचलते देखा ॥

जिस्के चरण कमल कमला के करतल से न नैकलते देखा ।
उसको ब्रज की कुंज गलिन में कंटक पथ पर चलते देखा ॥

जिसका ध्यान विरंचि शंभु सनकादिक से न सम्भलते देखा ।
उसको ग्वाल सखा मंडल में लेकर गेंद उछलते देखा ॥

जिस्की वक्र भृकुटि के डर से सागर सप्त उछलते देखा ।
उसको माँ यशोदा के भय से अश्रु बिंदु दृग ढ़लते देखा ॥

OM jay shrii raadhaa

ॐ जय श्री राधा जय श्री कृष्ण
श्री राधा कृष्णय नमः ॥

घूम घुमारो घामर सोहे जय श्री राधा
पट पीताम्बर मुनि मन मोहे जय श्री कृष्ण ।
जुगल प्रेम रस झम झम झमकै
श्री राधा कृष्णय नमः ॥

राधा राधा कृष्ण कन्हैया जय श्री राधा
भव भय सागर पार लगैया जय श्री कृष्ण ।
मंगल मूरति मोक्ष करैया
श्री राधा कृष्णय नमः ॥

---

aao aao yashodaa ke laal

आओ आओ यशोदा के लाल ।
आज मोहे दरशन से कर दो निहाल ।
आओ आओ आओ आओ यशोदा के लाल ॥

नैया हमारी भंवर मे फंसी ।
कब से अड़ी उबारो हरि ।
कहते हैं दीनों के तुम हो दयाल ॥(२)
आओ आओ आओ आओ यशोदा के लाल ॥

अबतो सुनलो पुकार मेरे जीवन आधार ।
भवसागर है अति विशाल ।
लाखों को तारा है तुमने गोपाल ॥(२)
आओ आओ आओ आओ यशोदा के लाल ॥

यमुना के तट पर गौवें चराकर ।
छीन लिया मेरा मन मुरली बजाकर ।
हृदय हमारे बसो नन्दलाल ।(२)
आओ आओ आओ आओ यशोदा के लाल ॥

---

kanhaiyaa kanhaiyaa

कन्हैया कन्हैया तुझे आना पड़ेगा आना पड़ेगा ।
वचन गीता वाला निभाना पड़ेगा ॥

गोकुल में आया मथुरा में आ
छवि प्यारी प्यारी कहीं तो दिखा ।
अरे सांवरे देख आ के ज़रा
सूनी सूनी पड़ी है तेरी द्वारिका ॥

जमुना के पानी में हलचल नहीं ।
मधुबन में पहला सा जलथल नहीं ।
वही कुंज गलियाँ वही गोपिआँ ।
छनकती मगर कोई झान्झर नहीं ।

---

aao kRishhNa kanhaiyaa

आओ कृष्ण कन्हैया हमारे घर आओ ।
माखन मिश्री दूध मलाई जो चाहो सो खाओ ॥

---

karuNaa bharii pukaar sun

करुणा भरी पुकार सुन अब तो पधारो मोहना ॥

कृष्ण तुम्हारे द्वार पर आया हूँ मैं अति दीन हूँ ।
करुणा भरी निगाह से अब तो पधारो मोहना ॥

कानन कुण्डल शीश मुकुट गले बैजंती माल हो ।
सांवरी सूरत मोहिनी अब तो दिखा दो मोहना ॥

पापी हूँ अभागी हूँ दरस का भिखारी हूँ ।
भवसागर से पार कर अब तो उबारो मोहना ॥

---

darshan do ghanshyaam

दर्शन दो घन्श्याम नाथ मोरी अँखियाँ प्यासी रे ॥

मंदिर मंदिर मूरत तेरी फिर भी न दीखे सूरत तेरी ।
युग बीते ना आई मिलन की पूरनमासी रे ॥
दर्शन दो घन्श्याम नाथ मोरि अँखियाँ प्यासी रे ॥

द्वार दया का जब तू खोले पंचम सुर में गूंगा बोले ।
अंधा देखे लंगड़ा चल कर पँहुचे काशी रे ॥
दर्शन दो घन्श्याम नाथ मोरि अँखियाँ प्यासी रे ॥

पानी पी कर प्यास बुझाऊँ नैनन को कैसे समजाऊँ ।
आँख मिचौली छोड़ो अब तो घट घट वासी रे ॥
दर्शन दो घन्श्याम नाथ मोरि अँखियाँ प्यासी रे ॥

tuu hii ban jaa

तू ही बन जा मेरा मांझी पार लगा दे मेरी नैया ।
हे नटनागर कृष्ण कन्हैया पार लगा दे मेरी नैया ॥

इस जीवन के सागर में हर क्षन लगता है डर मुझ्को ।
क्या भला है क्या बुरा है तू ही बता दे मुझ्को ।
हे नटनागर कृष्ण कन्हैया पार लगा दे मेरी नैया ॥

क्या तेरा और क्या मेरा है सब कुछ तो बस सपना है ।
इस जीवन के मोहजाल में सबने सोचा अपना है ।
हे नटनागर कृष्ण कन्हैया पार लगा दे मेरी नैया ॥

---

raam kRishhNa hari

राम कृष्ण हरि मुकुंद मुरारि ।
पांडुरंग पांडुरंग राम कृष्ण हरि ॥

विट्ठल विट्ठल पांडुरंग राम कृष्ण हरि ।
पांडुरंग पांडुरंग राम कृष्ण हरि ॥

---

mukund maadhav govinda

मुकुन्द माधव गोविन्द बोल
केशव माधव हरि हरि बोल ॥

हरि हरि बोल हरि हरि बोल ।
कृष्ण कृष्ण बोल कृष्ण कृष्ण बोल ॥

राम राम बोल राम राम बोल ।
शिव शिव बोल शिव शिव बोल ।

---

bhaj man govi.nd govi.nd

भज मन गोविंद गोविंद गोपाला ॥

Hari Bhajan

---

jo bhaje hari ko sadaa

जो भजे हरि को सदा सो परम पद पायेगा ॥

देह के माला तिलक और भस्म नहिं कुछ काम के ।
प्रेम भक्ति के बिना नहिं नाथ के मन भायेगा ॥

दिल के दर्पण को सफ़ा कर दूर कर अभिमान को ।
ख़्वाक हो गुरु के चरण की तो प्रभु मिल जायेगा ॥

छोड़ दुनिया के मज़े और बैठ कर एकांत में ।
ध्यान धर हरि के चरण का फिर जनम नहीं पायेगा ॥

दृढ़ भरोसा मन में रख कर जो भजे हरि नाम को ।
कहत ब्रह्मानंद ब्रह्मानंद में ही समायेगा ॥

---

hari tum bahuta

हरि तुम बहुत अनुग्रह कीन्हो ।
साधन धाम विविध दुर्लभ तनु मोहे कृपा कर दीन्हो ॥

कोटिन्ह मुख कहि जात न प्रभु के एक एक उपकार ।
तदपि नाथ कछु और मांगिहे दीजो परम उदार ॥

---

hari naam sumir

हरि नाम सुमिर हरि नाम सुमिर हरि नाम सुमिर
सुख धाम जगत में जीवन दो दिन का ।
जगत में जीवन दो दिन का ॥

सुंदर काया देख लुभाया लाड़ करे तन का ।
छूटा साँस विगत भयी देही ज्यों माला मनका ॥

पाप कपट कर माया जोड़ी गर्व करे धन का ।
सभी छोड़ कर चला मुसाफिर वास हुआ वन का ॥

ब्रह्मानन्द भजन कर बंदे नाथ निरंजन का ।
जगत में जीवन दो दिन का ॥

---

jo ghaT a.ntara

जो घट अंतर हरि सुमिरै ।
ताको काल रूठि का करिहै जे चित चरन धरे ॥

सहस बरस गज युद्ध करत भयै छिन एक ध्यान धरै ।
चक्र धरै वैकुण्ठ से धायै बाकी पैंज सरै ॥

जहँ जहँ दुसह कष्ट भगतन पर तहं तहँ सार करै ।
सूरजदास श्याम सेवै ते दुष्तर पार करै ॥

---

hari hari hari hari sumiran

हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो हरि चरणारविन्द उर धरो ॥
हरि की कथा होये जब जहाँ गंगा हू चलि आवे तहां ॥
यमुना सिंधु सरस्वती आवे गोदावरी विलम्ब न लावे ॥
सर्व तीर्थ को वासा तहाँ सूर हरि कथा होवे जहां ॥

---

naaraayaN jinake hiraday

नारायण जिनके हिरदय में सो कछु करम करे न करे रे ॥

पारस मणि जिनके घर माहीं सो धन संचि धरे न धरे ।
सूरज को परकाश भयो जब दीपक जोत जले न जले रे ॥

नाव मिली जिनको जल अंदर बाहु से नीर तरे न तरे रे ।

ब्रह्मानंद जाहि घट अंतर काशी में जाये मरे न मरे रे ॥

---

bhajo re bhaiya
भजो रे भैया राम गोविंद हरी ।
राम गोविंद हरी भजो रे भैया राम गोविंद हरी ॥

जप तप साधन नहिं कछु लागत खरचत नहिं गठरी ॥

---

hari OM hari OM
हरि ॐ हरि ॐ मेरा बोले रोम रोम ।
हरि ॐ हरि ॐ हरि ॐ हरि ॐ ॥

Ambe Bhajan

---

namaami ambe diin vatsale
नमामि अम्बे दीन वत्सले तुम्हे बिठाऊँ हृदय सिंहासन ।
तुम्हे पहनाऊँ भक्ति पादुका नमामि अम्बे भवानि अम्बे ॥

श्रद्धा के तुम्हे फूल चढ़ाऊँ श्वासों की जयमाल पहनाऊँ ।
दया करो अम्बिके भवानी नमामि अम्बे ...

बसो हृदय में हे कल्याणी सर्व मंगल मांगल्य भवानी ।
दया करो अम्बिके भवानी नमामि अम्बे ...

---

jay ambe jay jay durge
जय अम्बे जय जय दुर्गे दयामयी कल्याण करो ॥

आ जाओ माँ आ जाओ आ कर दरस दिखा जाओ ।
जय अम्बे ...

कब से द्वार तिहारे ठाड़े मैया मेरी मुझ पर कृपा करो ।
जय अम्बे ...

तेरे दरस के प्यासे नैना दरस हमें दिखला जाओ ।
जय अम्बे ...

Vividh Bhajan

---

biit gaye din
बीत गये दिन भजन बिना रे ।
भजन बिना रे, भजन बिना रे ॥

बाल अवस्था खेल गवांयो ।
जब यौवन तब मान घना रे ॥

लाहे कारण मूल गवा यो ।
अजहुं न गयी मन की तृष्णा रे ॥

कहत कबीर सुनो भैइ साधो ।
पार उतर गये संत जना रे ॥

---

jab se lagan lagii prabhu terii
जब से लगन लगी प्रभु तेरी सब कुछ मैं तो भूल गयी हूँ ॥

बिसर गयी क्या था मेरा बिसर गयी अब क्या है मेरा ।
अब तो लगन लगी प्रभु तेरी तू ही जाने क्या होगा ॥

जब मैं प्रभु में खो जाती हूं मेघ प्रेम के घिर आते हैं ।
मेरे मन मंदिर मे प्रभु के चारों धाम समा जाते हैं ॥

बार बार तू कहता मुझसे जग की सेवा कर तू मन से ।
इसी में मैं हूं सभी में मैं हूं तू देखे तो सब कुछ मैं हूं ॥

---

bhagavaan merii naiyaa
भगवान मेरी नैया उस पार लगा देना ।
अब तक तो निभाया है आगे भी निभा देना ॥

सम्भव है झंझटों में मैं तुम को भूल जाऊँ ।
पर नाथ कहीं तुम भी मुझको न भुला देना ॥

तुम देव मैं पुजारी तुम ईश मैं उपासक ।
यह बात सच है तो फिर सच कर के दिखा देना ॥

---

sharaN me.n aaye hai.n
शरण में आये हैं हम तुम्हारी
दया करो हे दयालु भगवन ।
सम्हालो बिगड़ी दशा हमारी
दया करो हे दयालु भगवन ॥

न हम में बल है न हम में शक्ति
न हम में साधन न हम में भक्ति ।
तभी कहाओगे ताप हारी
दया करो हे दयालु भगवन ॥

जो तुम पिता हो तो हम हैं बालक
जो तुम हो स्वामी तो हम हैं सेवक ।
जो तुम हो ठाकुर तो हम पुजारी
दया करो हे दयालु भगवन ॥

प्रदान कर दो महान शक्ति
भरो हमारे में ज्ञान भक्ति ।
तुम्हारे दर के हैं हम भिखारी
दया करो हे दयालु भगवन ॥

---

re man prabhu se

रे मन प्रभु से प्रीत करो ।
प्रभु की प्रेम भक्ति श्रद्धा से अपना आप भरो ॥

ऐसी प्रीत करो तुम प्रभु से प्रभु तुम माहिं समाये ।
बने आरती पूजा जीवन रसना हरि गुण गाये ।
राम नाम आधार लिये तुम इस जग में विचरो ॥

---

sur kii gati mai.n
सुर की गति मैं क्या जानूँ ।
एक भजन करना जानूँ ॥
अर्थ भजन का भी अति गहरा
उस को भी मैं क्या जानूँ ॥
प्रभु प्रभु प्रभु कहना जानूँ
नैना जल भरना जानूँ ॥

गुण गाये प्रभु न्याय न छोड़े
फिर तुम क्यों गुण गाते हो
मैं बोला मैं प्रेम दीवाना
इतनी बातें क्या जानूँ ॥
प्रभु प्रभु प्रभु कहना जानूँ
नैना जल भरना जानूँ ॥

फुल्वारी के फूल फूल के
किस्के गुन नित गाते हैं ।
जब पूछा क्या कुछ पाते हो
बोल उठे मैं क्या जानूँ ॥
प्रभु प्रभु प्रभु कहना जानूँ
नैना जल भरना जानूँ ॥

---

har saa.ns me.n har bol me.n
हर सांस में हर बोल में हरि नाम की झंकार है ।
हर नर मुझे भगवान है हर द्वार मंदिर द्वार है ॥

ये तन रतन जैसा नहीं मन पाप का भण्डार है ।
पंछी बसेरे सा लगे मुझको सकल संसार है ॥

हर डाल में हर पात में जिस नाम की झंकार है ।
उस नाथ के द्वारे तू जा होगा वहीं निस्तार है ॥

अपने पराये बन्धुओं का झूठ का व्यवहार है ।
मनके यहां बिखरे हुये प्रभु ने पिरोया तार है ॥

---

prabhu ko bisaar
प्रभु को बिसार किसकी आराधना करूं मैं ।
पा कल्पतरु किसीसे क्या याचना करूं मैं ॥

मोती मिला मुझे जब मानस के मानसर में ।
कंकड़ बटोरने की क्यों चाहना करूं मैं ॥

मुझको प्रकाश प्रतिपल आनंद आंतरिक है ।
जग के क्षणिक सुखों की क्या कामना करूं मैं ॥

---

kisakii sharaN me.n jaauu.n
किसकी शरण में जाऊं अशरण शरण तुम्हीं हो ॥

गज ग्राह से छुड़ाया प्रह्लाद को बचाया ।
द्रौपदी का पट बढ़ाया निर्बल के बल तुम्हीं हो ॥

अति दीन था सुदामा आया तुम्हारे धामा ।
धनपति उसे बनाया निर्धन के धन तुम्हीं हो ॥

तारा सदन कसाई अजामिल की गति बनाई ।
गणिका सुपुर पठाई पातक हरण तुम्हीं हो ॥

मुझको तो हे बिहारी आशा है बस तुम्हारी ।
काहे सुरति बिसारी मेरे तो एक तुम्हीं हो ॥

---

pitu maatu sahaayak svaamii
पितु मातु सहायक स्वामी सखा तुमही एक नाथ हमारे हो ।
जिनके कछु और आधार नहीं तिन्ह के तुमही रखवारे हो ॥

सब भांति सदा सुखदायक हो दुःख दुर्गुण नाशनहारे हो ।
प्रतिपाल करो सिगरे जग को अतिशय करुणा उर धारे हो ॥

भुलिहै हम ही तुमको तुम तो हमरी सुधि नाहिं बिसारे हो ॥
उपकारन को कछु अंत नही छिन ही छिन जो विस्तारे हो ।

महाराज! महा महिमा तुम्हरी समुझे बिरले बुधवारे हो ।
शुभ शांति निकेतन प्रेम निधे मनमंदिर के उजियारे हो ॥

यह जीवन के तुम्ह जीवन हो इन प्राणन के तुम प्यारे हो ।
तुम सों प्रभु पाइ प्रताप हरि केहि के अब और सहारे हो ॥

---

tumhii ho maataa pitaa
तुम्ही हो माता पिता तुम्ही हो तुम्ही हो बंधु सखा तुम्ही हो ॥

तुम्ही हो साथी तुम्ही सहारे कोई न अपना सिवा तुम्हारे ।
तुम्ही हो नैय्या तुम्ही खेवैय्या तुम्ही हो बंधु सखा तुम्ही हो ॥

जो कल खिलेंगे वो फूल हम हैं तुम्हारे चरणों की धूल हम हैं ।
दया की दृष्टि सदा ही रखना तुम्ही हो बंधु सखा तुम्ही हो ॥

---

tum taji aur kaun pai jaauu.n
तुम तजि और कौन पै जाऊं ।

काके द्वार जाइ सिर नाऊं पर हाथ कहां बिकाऊं ॥

ऐसो को दाता है समरथ जाके दिये अघाऊं ।
अंतकाल तुम्हरो सुमिरन गति अनत कहूं नहिं पाऊं ॥

रंक अयाची कियू सुदामा दियो अभय पद ठाऊं ।
कामधेनु चिंतामणि दीन्हो कलप वृक्ष तर छाऊं ॥

भवसमुद्र अति देख भयानक मन में अधिक डराऊं ।
कीजै कृपा सुमिरि अपनो पन सूरदास बलि जाऊं ॥

---

ra.ngavaale der kyaa hai
रंगवाले देर क्या है मेरा चोला रंग दे ।
और सारे रंग धो कर रंग अपना रंग दे ॥

कितने ही रंगो से मैने आज तक है रंगा इसे ।
पर वो सारे फीके निकले तू ही गाढ़ा रंग दे ॥

तूने रंगे हैं ज़मीं और आसमां जिस रंग से ।
बस उसी रंग से तू आख़्हिर मेरा चोला रंग दे ॥

मैं तो जानूंगा तभी तेरी ये रंगन्दाज़ियां ।
जितना धोऊं उतना चमके अब तो ऐसा रंग दे ॥

---

he jagatraataa
हे जगत्राता विश्वविधाता हे सुखशांतिनिकेतन हे ।
प्रेमके सिंधो दीनके बंधो दुःख दरिद्र विनाशन हे ।
नित्य अखंड अनंत अनादि पूर्ण ब्रह्मसनातन हे ।
जगआश्रय जगपति जगवंदन अनुपम अलख निरंजन हे ।
प्राण सखा त्रिभुवन प्रतिपालक जीवन के अवलंबन हे ।

---

darashan diijo aay pyaare
दरशन दीजो आय प्यारे तुम बिनो रह्यो ना जाय ॥

जल बिनु कमल चंद्र बिनु रजनी वैसे तुम देखे बिनु सजनी ।
आकुल व्याकुल फिरूं रैन दिन विरह कलेजो खाय ॥

दिवस न भूख नींद नहीं रैना मुख सों कहत न आवे बैना ।
कहा कहूँ कछु समुझि न आवे मिल कर तपत बुझाय ॥

क्यूं तरसाओ अंतरयामी आय मिलो किरपा करो स्वामी ।
मीरा दासी जनम जनम की पड़ी तुम्हारे पाय ॥

---

naiyaa pa.Dii ma.njhadhaar
नैया पड़ी मंझधार गुरु बिन कैसे लागे पार ॥

साहिब तुम मत भूलियो लाख लो भूलग जाये ।
हम से तुमरे और हैं तुम सा हमरा नाहिं ।
अंतरयामी एक तुम आतम के आधार ।
जो तुम छोड़ो हाथ प्रभुजी कौन उतारे पार ॥
गुरु बिन कैसे लागे पार ॥

मैन अपराधी जन्म को मन में भरा विकार ।
तुम दाता दुख भंजन मेरी करो सम्हार ।
अवगुन दास कबीर के बहुत गरीब निवाज़ ।
जो मैं पूत कपूत हूं कहौं पिता की लाज ॥
गुरु बिन कैसे लागे पार ॥

---

tuune raat ga.Nvaayii
तूने रात गँवायी सोय के दिवस गँवाया खाय के ।
हीरा जनम अमोल था कौड़ी बदले जाय ॥

सुमिरन लगन लगाय के मुख से कछु ना बोल रे ।
बाहर का पट बंद कर ले अंतर का पट खोल रे ।
माला फेरत जुग हुआ गया ना मन का फेर रे ।
गया ना मन का फेर रे ।
हाथ का मनका छँड़ि दे मन का मनका फेर ॥

दुख में सुमिरन सब करें सुख में करे न कोय रे ।
जो सुख में सुमिरन करे तो दुख काहे को होय रे ।
सुख में सुमिरन ना किया दुख में करता याद रे ।
दुख में करता याद रे ।
कहे कबीर उस दास की कौन सुने फ़रियाद ॥

---

nainahiin ko raah dikhaa
नैन हीन को राह दिखा प्रभु ।
पग पग ठोकर खआऊँ मैं ॥

तुम्हरी नगरिया की कठिन डगरिया ।
चलत चलत गिर जाऊँ मैन ॥

चहूँ ओर मेरे घोओर अंधेरा ।
भूल न जाऊँ द्वार तेरा ।
एक बार प्रभु हाथ पकड़ लो । (३)
मन का दीप जलाऊँ मैं ॥

---

prabhu ham pe kRipaa
प्रभु हम पे कृपा करना प्रभु हम पे दया करना ।
वैकुण्ठ तो यहीं है इसमें ही रहा करना ॥

हम मोर बन के मोहन नाचा करेंगे वन में ।
तुम श्याम घटा बनकर उस बन में उड़ा करना ॥

होकर के हम पपीहा पी पी रटा करेंगे ।

तुम स्वाति बूंद बनकर प्यासे पे दया करना ॥

हम राधेश्याम जग में तुमको ही निहारेंगे ।
तुम दिव्य ज्योति बन कर नैनों में बसा करना ॥

---

tere dar ko chho.D ke

तेरे दर को छोड़ के किस दर जाऊं मैं ।

देख लिया जग सारा मैने तेरे जैसा मीत नहीं ।
तेरे जैसा प्रबल सहारा तेरे जैसी प्रीत नहीं ।
किन शब्दों में आपकी महिमा गाऊं मैं ॥

अपने पथ पर आप चलूं मैं मुझमे इतना ज्ञान नहीं ।
हूँ मति मंद नयन का अंधा भला बुरा पहचान नहीं ।
हाथ पकड़ कर ले चलो ठोकर खाऊं मैं ॥

---

uddhaar karo bhagavaan

उद्धार करो भगवान तुम्हरी शरण पड़े ।
भव पार करो भगवान तुम्हरी शरण पड़े ॥

कैसे तेरा नाम धियायें कैसे तुम्हरी लगन लगाये ।
हृदय जगा दो ज्ञान तुम्हरी शरण पड़े ॥

पंथ मतों की सुन सुन बातें द्वार तेरे तक पहुंच न पाते ।
भटके बीच जहान तुम्हरी शरण पड़े ॥

तू ही श्यामल कृष्ण मुरारी राम तू ही गणपति त्रिपुरारी ।
तुम्ही बने हनुमान तुम्हरी शरण पड़े ॥

ऐसी अन्तर ज्योति जगाना हम दीनों को शरण लगाना ।
हे प्रभु दया निधान तुम्हरी शरण पड़े ॥

---

mailii chaadar o.Dh ke

मैली चादर ओढ़ के कैसे द्वार तुम्हारे आऊँ ।
हे पावन परमेश्वर मेरे मन ही मन शरमाऊं ॥

तूने मुझको जग में भेजा निर्मल देकर काया ।
आकर के संसार में मैंने इसको दाग लगाया ।
जनम जनम की मैली चादर कैसे दाग छुड़ाऊं ॥

निर्मल वाणी पाकर मैने नाम न तेरा गाया ।
नयन मूंद कर हे परमेश्वर कभी न तुझको ध्याया ।
मन वीणा की तारें टूटीं अब क्या गीत सुनाऊं ॥

इन पैरों से चल कर तेरे मन्दिर कभी न आया ।
जहां जहां हो पूजा तेरी कभी न शीश झुकाया ।
हे हरि हर मैं हार के आया अब क्या हार चढ़ाऊं ॥

---

sha.nkar shiv shambhu saadhu

शंकर शिव शम्भु साधु संतन हितकारी ॥

लोचन त्रय अति विशाल सोहे नव चन्द्र भाल ।
रुण्ड मुण्ड व्याल माल जटा गंग धारी ॥

पार्वती पति सुजान प्रमथराज वृषभयान ।
सुर नर मुनि सेव्यमान त्रिविध ताप हारी ॥

Aaratii Giit

---

jaya gaNesha jaya gaNesha

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा ।
माता जाकी पारवती पिता महादेवा ॥

एकदन्त दयावन्त चारभुजाधारी
माथे पर तिलक सोहे मूसे की सवारी ।
पान चढ़े फल चढ़े और चढ़े मेवा
लड्डुअन का भोग लगे सन्त करें सेवा ॥

अंधे को आँख देत कोढ़िन को काया
बाँझन को पुत्र देत निर्धन को माया ।
'सूर' श्याम शरण आए सफल कीजे सेवा
जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा ॥

---

om jaya jagadiisha hare

ओम जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे ॥

जो ध्यावे फल पावे, दुख बिनसे मन का ।
सुख सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तन का ॥

मात पिता तुम मेरे, शरण गहूं मैं किसकी ।
तुम बिन और न दूजा, आस करूं मैं जिसकी ॥

तुम पूरण परमात्मा, तुम अंतर्यामी ।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सब के स्वामी ॥

तुम करुणा के सागर, तुम पालनकर्ता ।
मैं सेवक तुम स्वामी, कृपा करो भर्ता ॥

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति ।
किस विधि मिलूं दयामय, तुमको मैं कुमति ॥

दीनबंधु दुखहर्ता, तुम रक्षक मेरे ।
करुणा हस्त बढ़ाओ, द्वार पडा तेरे ॥

विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा ॥

OM jay laxmii maataa

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता
तुम को निस दिन सेवत, मैयाजी को निस दिन सेवत
हर विष्णु विधाता ।
ॐ जय लक्ष्मी माता ॥

उमा रमा ब्रह्माणी, तुम ही जग माता
ओ मैया तुम ही जग माता ।
सूर्य चन्द्र माँ ध्यावत, नारद ऋषि गाता
ॐ जय लक्ष्मी माता ॥

दुर्गा रूप निरन्जनि, सुख सम्पति दाता
ओ मैया सुख सम्पति दाता ।
जो कोई तुम को ध्यावत, ऋद्धि सिद्धि धन पाता
ॐ जय लक्ष्मी माता ॥

तुम पाताल निवासिनि, तुम ही शुभ दाता
ओ मैया तुम ही शुभ दाता ।
कर्म प्रभाव प्रकाशिनि, भव निधि की दाता
ॐ जय लक्ष्मी माता ॥

जिस घर तुम रहती तहँ सब सद्गुण आता
ओ मैया सब सद्गुण आता ।
सब संभव हो जाता, मन नहीं घबराता
ॐ जय लक्ष्मी माता ॥

तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न कोई पाता
ओ मैया वस्त्र न कोई पाता ।
खान पान का वैभव, सब तुम से आता
ॐ जय लक्ष्मी माता ॥

शुभ गुण मंदिर सुंदर, क्षीरोदधि जाता
ओ मैया क्षीरोदधि जाता ।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता
ॐ जय लक्ष्मी माता ॥

महा लक्ष्मीजी की आरती, जो कोई जन गाता
ओ मैया जो कोई जन गाता ।
उर आनंद समाता, पाप उतर जाता
ॐ जय लक्ष्मी माता ॥

OM jay shiv OMkaaraa

ॐ जय शिव ॐकारा, स्वामी हर शिव ॐकारा ।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्धांगी धारा ॥
जय शिव ॐकारा ॥

एकानन चतुरानन पंचानन राजे
स्वामी पंचानन राजे ।
हंसासन गरुड़ासन वृष वाहन साजे ॥
जय शिव ॐकारा ॥

दो भुज चारु चतुर्भुज दस भुज से सोहे
स्वामी दस भुज से सोहे ।
तीनों रूप निरखते त्रिभुवन जन मोहे ॥
जय शिव ॐकारा ॥

अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी
स्वामि मुण्डमाला धारी ।
चंदन मृग मद सोहे भाले शशि धारी ॥
जय शिव ॐकारा ॥

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे
स्वामी बाघाम्बर अंगे ।
सनकादिक ब्रह्मादिक भूतादिक संगे ॥
जय शिव ॐकारा ॥

कर में श्रेष्ठ कमण्डलु चक्र त्रिशूल धरता
स्वामी चक्र त्रिशूल धरता ।
जगकर्ता जगहर्ता जग पालन कर्ता ॥
जय शिव ॐकारा ॥

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका
स्वामि जानत अविवेका ।
प्रणवाक्षर में शोभित यह तीनों एका ।
जय शिव ॐकारा ॥

निर्गुण शिव की आरती जो कोई नर गावे
स्वामि जो कोई नर गावे ।
कहत शिवानंद स्वामि मन वाँछित फल पावे ।
जय शिव ॐकारा ॥

---

aaratii ku.Nj bihaariikii

आरती कुँज बिहारी की
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥

गले में वैजन्ती माला, माला
बजावे मुरली मधुर बाला, बाला
श्रवण में कुण्डल झलकाला, झलकाला
नन्द के नन्द, श्री आनन्द कन्द, मोहन बृज चन्द

राधिका रमण बिहारी की
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥

गगन सम अंग कान्ति काली, काली
राधिका चमक रही आली, आली
लसन में टाड़े वनमाली, वनमाली
भ्रमर सी अलक, कस्तूरी तिलक, चन्द्र सी झलक
ललित छवि श्यामा प्यारी की
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥

जहाँ से प्रगट भयी गंगा, गंगा
कलुष कलि हारिणि श्री गंगा, गंगा
स्मरण से होत मोह भंगा, भंगा
बसी शिव शीश, जटा के बीच, हरे अघ कीच
चरण छवि श्री बनवारी की
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥

कनकमय मोर मुकुट बिलसै, बिलसै
देवता दरसन को तरसै, तरसै
गगन सों सुमन राशि बरसै, बरसै
अजेमुरचन मधुर मृदंग मालिनि संग
अतुल रति गोप कुमारी की
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥

चमकती उज्ज्वल तट रेणु, रेणु
बह रही बृन्दावन वेणु, वेणु
चहुँ दिसि गोपि काल धेनु, धेनु
कसक मृद मंग, चाँदनि चन्द, खटक भव भन्ज
टेर सुन दीन भिखारी की
श्री गिरिधर कृष्ण मुरारी की ॥

---

jaya ambe gaurii
जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी
तुम को निस दिन ध्यावत
मैयाजी को निस दिन ध्यावत
हरि ब्रह्मा शिवजी ।
बोलो जय अम्बे गौरी ॥

माँग सिन्दूर विराजत टीको मृग मद को
मैया टिकोओ मृगमद को
उज्ज्वल से दो नैना चन्द्रवदन नीको
बोलो जय अम्बे गौरी ॥

कनक समान कलेवर रक्ताम्बर साजे
मैया रक्ताम्बर साजे
रक्त पुष्प गले माला कण्ठ हार साजे
बोलो जय अम्बे गौरी ॥

केहरि वाहन राजत खड्ग कृपाण धारी
मैया खड्ग कृपाण धारी
सुर नर मुनि जन सेवत तिनके दुख हारी
बोलो जय अम्बे गौरी ॥

कानन कुण्डल शोभित नासाग्रे मोती
मैया नासाग्रे मोती
कोटिक चन्द्र दिवाकर सम राजत ज्योति
बोलो जय अम्बे गौरी ॥

शम्भु निशम्भु बिडारे महिषासुर धाती
मैया महिषासुर धाती
धूम्र विलोचन नैना निशदिन मदमाती
बोलो जय अम्बे गौरी ॥

चण्ड मुण्डा शोणित बीज हरे
मैया शोणित बीज हरे
मधु कैटभ दोउ मारे सुर भय दूर करे
बोलो जय अम्बे गौरी ॥

ब्रह्माणी रुद्राणी तुम कमला रानी
मैया तुम कमला रानी
आगम निगम बखानी तुम शिव पटरानी
बोलो जय अम्बे गौरी ॥

चौंसठ योगिन गावत नृत्य करत भैरों
मैया नृत्य करत भैरों
बाजत ताल मृदंग और बाजत डमरू
बोलो जय अम्बे गौरी ॥

तुम हो जग की माता तुम ही हो भर्ता
मैया तुम ही हो भर्ता
भक्तन की दुख हर्ता सुख सम्पति कर्ता
बोलो जय अम्बे गौरी ॥

भुजा चार अति शोभित वर मुद्रा धारी
मैया वर मुद्रा धारी
मन वाँछित फल पावत देवता नर नारी
बोलो जय अम्बे गौरी ॥

कन्चन थाल विराजत अगर कपूर बाती
मैया अगर कपूर बाती
माल केतु में राजत कोटि रतन ज्योती
बोलो जय अम्बे गौरी ॥

माँ अम्बे की आरती जो कोई नर गावे
मैया जो कोई नर गावे
कहत शिवानन्द स्वामि सुख सम्पति पावे
बोलो जय अम्बे गौरी ॥

---

jay santoshhii maataa

जय सन्तोषी माता, मैया जय सन्तोषी माता ।
अपने सेवक जन की सुख सम्पति दाता ।
मैया जय सन्तोषी माता ।

सुन्दर चीर सुनहरी माँ धारण कीन्हो
मैया माँ धारण कींहो
हीरा पन्ना दमके तन शृंगार कीन्हो
मैया जय सन्तोषी माता ।

गेरू लाल छटा छबि बदन कमल सोहे
मैया बदन कमल सोहे
मंद हँसत करुणामयि त्रिभुवन मन मोहे
मैया जय सन्तोषी माता ।

स्वर्ण सिंहासन बैठी चँवर दुले प्यारे
मैया चँवर दुले प्यारे
धूप दीप मधु मेवा, भोज धरे न्यारे
मैया जय सन्तोषी माता ।

गुड़ और चना परम प्रिय ता में संतोष कियो
मैया तामें सन्तोष कियो
संतोषी कहलाई भक्तन विभव दियो
मैया जय सन्तोषी माता ।

शुक्रवार प्रिय मानत आज दिवस सो ही,
मैया आज दिवस सो ही
भक्त मंडली चाई कथा सुनत मो ही
मैया जय सन्तोषी माता ।

मंदिर जग मग ज्योति मंगल ध्वनि छाई
मैया मंगल ध्वनि छाई
बिनय करें हम सेवक चरनन सिर नाई
मैया जय सन्तोषी माता ।

भक्ति भाव्मय पूजा अंगीकृत कीजै
मैया अंगीकृत कीजै
जो मन बसे हमारे इच्छित फल दीजै
मैया जय सन्तोषी माता ।

दुखी दरिद्री रोगी संकट मुक्त किये
मैया संकट मुक्त किये
बहु धन धान्य भरे घर सुख सौभाग्य दिये
मैया जय सन्तोषी माता ।

ध्यान धरे जो तेरा वाँछित फल पायो
मनवाँछित फल पायो
पूजा कथा श्रवण कर घर आनन्द आयो
मैया जय सन्तोषी माता ।

चरण गहे की लज्जा रखियो जगदम्बे
मैया रखियो जगदम्बे
संकट तू ही निवारे दयामयी अम्बे
मैया जय सन्तोषी माता ।

सन्तोषी माता की आरती जो कोई जन गावे
मैया जो कोई जन गावे
ऋद्धि सिद्धि सुख सम्पति जी भर के पावे
मैया जय सन्तोषी माता ।

---

aarati kiijai hanumaan

आरति कीजै हनुमान लला कीइ ।
दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ॥

जाके बल से गिरिवर काँपे
रोग दोष जाके निकट न झाँके
अंजनि पुत्र महा बलदायी
संतन के प्रभु सदा सहायी ॥
आरति कीजै हनुमान लला कीइ ।

दे बीड़ा रघुनाथ पठाये
लंका जाय सिया सुधि लाये
लंका सौ कोटि समुद्र सी खाई
जात पवनसुत बार न लाई ॥
आरति कीजै हनुमान लला कीइ ।

लंका जारि असुर संघारे
सिया रामजी के काज संवारे
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे
आन संजीवन प्राण उबारे ॥
आरति कीजै हनुमान लला कीइ ।

पैठि पाताल तोड़ि यम कारे
अहिरावन की भुजा उखारे
बाँये भुजा असुरदल मारे
दाहिने भुजा संत जन तारे ॥
आरति कीजै हनुमान लला कीइ ।

सु नर मुनि जन आरति उतारे
जय जय जय हनुमान उचारे
कंचन थार कपूर लौ छाई
आरती करत अंजना माई ॥
आरति कीजै हनुमान लला कीइ ।

जो हनुमान जी की आरति गावे
बसि वैकुण्ठ परम पद पावे ।
आरति कीजै हनुमान लला कीइ ।
दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ॥

---

saaii.N baabaa kii aarati
आरती उतारे हम तुम्हारी सैइँ बाबा ।
चरणों के तेरे हम पुजारी साईं बाबा ॥

विद्या बल बुद्धि, बन्धु माता पिता हो
तन मन धन प्राण, तुम ही सखा हो
हे जगदाता अवतारे, साईं बाबा ।
आरती उतारे हम तुम्हारी सैइँ बाबा ॥

ब्रह्म के सगुण अवतार तुम स्वामी
ज्ञानी दयावान प्रभु अंतरयामी
सुन लो विनती हमारी साईं बाबा ।
आरती उतारे हम तुम्हारी सैइँ बाबा ॥

आदि हो अनंत त्रिगुणात्मक मूर्ति
सिंधु करुणा के हो उद्धारक मूर्ति
शिरडी के संत चम्त्कारी साईं बाबा ।
आरती उतारे हम तुम्हारी सैइँ बाबा ॥

भक्तों की खातिर, जनम लिये तुम
प्रेम ज्ञान सत्य स्नेह, मरम दिये तुम
दुखिया जनों के हितकारी साईं बाबा ।
आरती उतारे हम तुम्हारी सैइँ बाबा ॥

Bhajans from ISB 3.1

---

hamako manakii shakti
प्रार्थना

हमको मनकी शक्ति देना, मन विजय करें ।
दूसरोंकी जयसे पहले, खुदकी जय करें ।
हमको मनकी शक्ति देना ॥

भेदभाव अपने दिलसे, साफ कर सकें ।
दूसरोंसे भूल हो तो, माफ कर सकें ।
झूठसे बचे रहें, सचका दम भरें ।
दूसरोंकी जयसे पहले, ...

मुश्किलें पडें तो हमपे, इतना कर्म कर ।
साथ दें तो धर्मका, चलें तो धर्म पर ।
खुदपे हौसला रहे, सचका दम भरें ।
दूसरोंकी जयसे पहले, ...

---

gauriina.ndana gajaananaa
गौरीनंदन गजानना हे दु:खभंजन गजानना ।

मूषक वाहन गजानना बुद्धीविनायक गजानना ।

विघ्नविनाशक गजानना शंकरपूत्र गजानना ।

---

ai maalik tere ba.nde ham
ऐ मालिक तेरे बंदे हम
ऐसे हो हमारे करम
नेकी पर चलें
और बदी से टलें
ताकि हंसते हुये निकले दम

जब जुलमों का हो सामना
तब तू ही हमें थामना
वो बुराई करें
हम भलाई भरें
नहीं बदले की हो कामना
बढ़ उठे प्यार का हर कदम
और मिटे बैर का ये भरम
नेकी पर चलें ...

ये अंधेरा घना छा रहा
तेरा इनसान घबरा रहा
हो रहा बेखबर
कुछ न आता नज़र
सुख का सूरज छिपा जा रहा
है तेरी रोशनी में वो दम
जो अमावस को कर दे पूनम
नेकी पर चलें ...

बड़ा कमज़ोर है आदमी
अभी लाखों हैं इसमें कमीं
पर तू जो खड़ा
है दयालू बड़ा
तेरी कृपा से धरती थमी
दिया तूने हमें जब जनम

तू ही झेलेगा हम सबके ग़म
नेकी पर चलें ...

---

jyota se jyota jagaate

ज्योत से ज्योत जगाते चलो प्रेम की गंगा बहाते चलो
राह में आए जो दीन दुखी सबको गले से लगाते चलो ॥

जिसका न कोई संगी साथी ईश्वर है रखवाला
जो निर्धन है जो निर्बल है वह है प्रभू का प्यारा
प्यार के मोती लुटाते चलो, प्रेम की गंगा ...

आशा टूटी ममता रूठी छूट गया है किनारा
बंद करो मत द्वार दया का दे दो कुछ तो सहारा
दीप दया का जलाते चलो, प्रेम की गंगा ...

छाया है छाओं और अंधेरा भटक गई हैं दिशाएं
मानव बन बैठा है दानव किसको व्यथा सुनाएं
धरती को स्वर्ग बनाते चलो, प्रेम की गंगा ...

---

allaah tero naam

अल्लाह तेरो नाम, ईश्वर तेरो नाम
अल्लाह तेरो नाम, ईश्वर तेरो नाम
सबको सन्मति दे भगवान
सबको सन्मति दे भगवान
अल्लाह तेरो नाम ॥।

माँगों का सिन्दूर ना छूटे
माँगों का
सिन्दूर ना छूटे
माँ बहनो की आस ना टूटे
माँ बहनो की
आस ना टूटे
देह बिना, दाता, देह बिना
भटके ना प्राण
सबको सन्मति दे भगवान
अल्लाह तेरो नाम, ईश्वर तेरो नाम,

ओ सारे जग के रखवाले
ओ सारे जग के रखवाले
निर्बल को बल देने वाले
निर्बल को बल देने वाले
बलवानो को,
ओ, बलवानो को देदे ज्ञान
सबको सन्मति दे भगवान
अल्लाह तेरो नाम
ईश्वर तेरो नाम
अल्लाह तेरो नाम

---

jaise suuraj kii garmii

जैसे सूरज की गर्मी से जलते हुए तन को
मिल जाये तरुवर कि छाया
ऐसा ही सुख मेरे मन को मिला है
मैं जबसे शरण तेरी आया, मेरे राम

भटका हुआ मेरा मन था कोई
मिल ना रहा था सहारा
लहरों से लड़ती हुई नाव को
जैसे मिल ना रहा हो किनारा, मिल ना रहा हो किनारा
उस लड़खड़ाती हुई नाव को जो
किसी ने किनारा दिखाया
ऐसा ही सुख ॥।

शीतल बने आग चंदन के जैसी
राघव कृपा हो जो तेरी
उजियाली पूनम की हो जाएं रातें
जो थीं अमावस अंधेरी, जो थीं अमावस अंधेरी
युग-युग से प्यासी मरुभूमि ने
जैसे सावन का संदेस पाया
ऐसा ही सुख ॥।

जिस राह की मंज़िल तेरा मिलन हो
उस पर कदम मैं बढ़ाऊं
फूलों में खारों में, पतझड़ बहारों में
मैं न कभी डगमगाऊं, मैं न कभी डगमगाऊं
पानी के प्यासे को तक़दीर ने
जैसे जी भर के अमृत पिलाया
ऐसा ही सुख ॥।

---

man ta.Dapat hari darasan

मन तड़पत हरि दरसन को आज
मोरे तुम बिन बिगड़े सकल काज
आ, विनती करत, हूँ, रखियो लाज, मन तड़पत॥।

तुम्हरे द्वार का मैं हूँ जोगी
हमरी ओर नज़र कब होगी
सुन मोरे व्याकुल मन की बात, तड़पत हरी दरसन॥।

बिन गुरू ज्ञान कहाँ से पाऊँ
दीजो दान हरी गुन गाऊँ
सब गुनी जन पे तुम्हारा राज, तड़पत हरी॥।

मुरली मनोहर आस न तोड़ो
दुख भंजन मोरे साथ न छोड़ो
मोहे दरसन भिक्षा दे दो आज दे दो आज, ॥।

---

na mai.n dhan chaahuu.N
न मैं धन चाहूँ, न रतन चाहूँ
तेरे चरणों की धूल मिल जाये
तो मैं तर जाऊँ, हाँ मैं तर जाऊँ
हे राम तर जाऊँ॥।

मोह मन मोहे, लोभ ललचाये
कैसे कैसे ये नाग लहराये
इससे पहले कि मन उधर जाये
मैं तो मर जाऊँ, हाँ मैं मर जाऊँ
हे राम मर जाऊँ

थम गया पानी, जम गयी कायी
बहती नदिया ही साफ़ कहलायी
मेरे दिल ने ही जाल फैलाये
अब किधर जाऊँ, मैं किधर जाऊँ - २
अब किधर जाऊँ, मैं किधर जाऊँ॥।

लाये क्या थे जो लेके जाना है
नेक दिल ही तेरा खज़ाना है
शाम होते ही पंछी आ जाये
अब तो घर जाऊँ अपने घर जाऊँ
अब तो घर जाऊँ अपने घर जाऊँ॥।

---

raghupati raaghava
रघुपति राघव राजा राम
पतित पावन सीता राम

सीता राम सीता राम
भज प्यारे तू सीता राम
रघुपति ॥।

ईश्वर अल्लाह तेरे नाम
सबको सन्मति दे भगवान
रघुपति ॥।

रात को निंदिया दिन तो काम
कभी भजोगे प्रभु का नाम
करते रहिये अपने काम
लेते रहिये हरि का नाम
रघुपति ॥।

---

torA man darpaN kahalAye
तोरा मन दर्पण कहलाये - २
भले बुरे सारे कर्मों को, देखे और दिखाये
तोरा मन दर्पण कहलाये - २

मन ही देवता, मन ही ईश्वर, मन से बड़ा न कोय
मन उजियारा जब जब फैले, जग उजियारा होय
इस उजले दर्पण पे प्राणी, धूल न जमने पाये
तोरा मन दर्पण कहलाये - २

सुख की कलियाँ, दुख के कांटे, मन सबका आधार
मन से कोई बात छुपे ना, मन के नैन हज़ार
जग से चाहे भाग लो कोई, मन से भाग न पाये
तोरा मन दर्पण कहलाये - २

---

vaishNav jan to
वैश्णव जन तो तेने कहिये जे
पीड़ परायी जाणे रे

पर-दुख्खे उपकार करे तोये
मन अभिमान ना आणे रे
वैश्णव जन तो तेने कहिये जे ॥।

सकळ लोक मान सहुने वंदे
नींदा न करे केनी रे
वाच काछ मन निश्चळ राखे
धन-धन जननी तेनी रे
वैश्णव जन तो तेने कहिये जे ॥।

सम-द्रिष्टी ने तृष्णा त्यागी
पर-स्त्री जेने मात रे
जिह्वा थकी असत्य ना बोले
पर-धन नव झाली हाथ रे
वैश्णव जन तो तेने कहिये जे ॥।

मोह-माया व्यापे नही जेने
द्रिढ़ वैराग्य जेना मन मान रे
राम नाम सुन ताळी लागी
सकळ तिरथ तेना तन मान रे
वैश्णव जन तो तेने कहिये जे ॥।

वण-लोभी ने कपट-रहित छे
काम-क्रोध निवार्या रे
भणे नरसैय्यो तेनुन दर्शन कर्ता
कुळ एकोतेर तारया रे
वैश्णव जन तो तेने कहिये जे ॥।

.. satsang bhajan ..

॥ सत्संग भजन ॥

गणेश भजन

ॐ गं गणपतये नमः ॥

गजाननं भूत गणाधिसेवितम् ।
कपित्थजम्बूफलसारभक्षितम् ।
उमासुतं शोकविनाशकारणम् ।
नमामि विघ्नेश्वर पाद पंकजम् ॥

गजानन, ॐ गजवदन ।
हेरम्ब गजानन ॥
मूषक वाहन गजानन ।
मोदक हस्त गजानन ॥
पाहि पाहि, गजानन ।
पार्वति नन्दन गजानन॥

गणेश शरणं, शरणं गणेश ।
गणेश शरणं, शरणं गणेश ॥
वागीश शरणं, शरणं वागीश ।
वागीश शरणं, शरणं वागीश ॥
सारीश शरणं, शरणं सारीश ।
सारीश शरणं, शरणं सारीश ॥

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश पाहि माम् ।
जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश रक्ष माम् ॥
श्री गणेश, श्री गणेश, श्री गणेश पाहि माम् ।
श्री गणेश, श्री गणेश, श्री गणेश रक्ष माम् ॥

ताण्डव नृत्य करे गजानन,
ताण्डव नृत्य करे ।
धिमिकिट धिमिकिट ताल मृदंग,
ब्रह्मा ताल हरे गजानन ।
शंकर पुत्र सुरनर स्तोत्र,
मध्ये शिवगौरी गजानन ।
तेजस कोटि गुणगण साटि,
इष्ट पूर्ति करे गजानन ।

पाही पाही गजानना पार्वति नंदा गजानना ॥

एकदंता गजानना अनेकदंतं विद्यानना ।
लंबोदर हे गजानना लंब उरगदर बेलानना ।
चिन्मयमुद्रा गोधनचतुरा योगमुद्रा समाधिपाला ।
सच्चिदानंदा गजानना नित्यानंदा निरंजना ॥

पाही पाही गजानना पार्वति नंदा गजानना ॥

विनायका विघ्नविनाशक विनायका ।
विघ्नविनाशक सौख्यविदायक विश्वविभावक विनायका ॥

गौरीतनया विनायका शंकरपालित विनायका
गजवदना हे विनायका मूषकवाहन विनायका ।

पितृसद्भक्ता विनायका सुप्रसबुद्धि विनायका
विघ्नाधीश्वर विनायका विश्वाराज्ञा विनायका ।

मोदकहस्ता विनायका मोदविदाया विनायका
चंद्रोल्हात्सक विनायका शापितचंद्रा विनायका
पुनरुज्जीवन विनायका पूर्णकृपालय विनायका
दैवतरक्षक विनायका दानवसंहार विनायका ।

बाहुचतुष्का विनायका भावमनोज्ञा विनायका
पाशांकुशधर विनायका नटवरनाट्या विनायका ।

चंदनरंजित विनायका रक्तांबरधर विनायका
लंबोदर हे विनायका वामनरूपा विनायका
नागाराकृत विनायका नानारूपा विनायका
गुरुसद्कृपा विनायका शिष्यवना हे विनायका ।

गं बीजाक्षर विनायका गं भीरास्था विनायका
अओंकाराक्षा विनायका वक्रतुंडा विनायका
सर्वादेश्री विनायका सच्चिदानंदा विनायका ।

गौरीनंदन गजानना हे दुःखभंजन गजानना ।
मूषक वाहन गजानना बुद्धिविनायक गजानना ।
गजानना ॐ गजानना । ... गौरीनंदन ...
विघ्नविनाशक गजानना शंकरपुत्र गजानना ।
गजानना ॐ गजानना । ... गौरीनंदन ...

जय जय जय गणपति देवा ।
माता पार्वति पिता महादेवा ।
गजानना गजानना गजानना हे गणपति देवा ।

जय जय जय गणपति देवा ।
माता पार्वति पिता महादेवा ।
गजानना गजानना गजानना हे गणपति देवा ।१।

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा ।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा ॥
लड्डुओं का भोग चढ़े, सन्त करें सेवा ।
जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा ॥

बाँझन को पुत्र देत, कोढ़िन को काया ।
अन्धे को आँख देत, निर्धन को माया ॥
सूरदास शरण आये, सफल कीजे सेवा ।
जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा ॥

सुन्दरमुख श्री गजानन ।
एकदन्त श्री गजानन ।
प्रथम नमामि गजानन ।
सुर मुनि वंदित गजानन ।
हे सुर मुनि वंदित गजानन ।

जय गणराय श्री गणराज ।
जय गणराय श्रीगणराज मंगलमूर्ति मोरिया ।
सिद्धि विनायक मंगल दाता ।
सिद्धि विनायक मंगलदायक मंगल मूर्ति मोरिया ।
अष्ट विनायक मंगलदायक मंगल मूर्ति मोरिया ।
सिंदूर वदन पंकज नयन ।
सिंदूर वदन पंकज नयन मंगल मूर्ति मोरिया ।

प्रथम वन्दन गौरी नंदन ।
हे शिव नंदन पाहि गजानन ।
एक दंत बहुवन्द विनायक ।
विघ्न हरण शुभ मंगल चरण ।
प्राणस्वरूप पाहि गजानन ।

पाहि गणेश गजानन ।
सकल रोग निवारण ।
पार्वती पुत्र परम पवित्र ।
पाप विनाशक विनायक ।
मूषक वाहन मोदक हस्त ।
श्यामल वर्ण विलंबित सूत्र ।
वामन रूप महेश्वर पुत्र ।
विघ्न विनाशक पाद नमस्ते ।

विघ्नेश्वर विनायक ।
विश्वाधर नमोऽस्तुते ।
नमोऽस्तुते नमोऽस्तुते ।
विश्वाधर नमोऽस्तुते ।
सुर मुनि वंदित विनायक ।
भव भय नाश विनायक ।
शरणं शरणं विनायक ।
विश्वाधार नमोऽस्तुते ।

गौरी नंदन गजानन ।
गिरिजा नंदन निरंजन ।
पार्वती नंदन शुभानन ।
पाहि प्रभो माम् पाहि प्रसन्न ।

मंगल चरण गजानन ।
गजवदन शुभानन ।
विद्या दायक बुद्धि प्रदायक ।
गौरी तनय गजानन ।

जय लंबोदर पाहि माम् ।
जगदम्बा सुत रक्ष माम् ।
शरणागत रक्ष माम् ।
हे करुणानिधे पाहि माम् ।
श्री गणनाथ संरक्षमाम् ।
निज भक्तिमुदन देहिमाम् ।

शंभु कुमार गजानन ।
शंकरी तनय गजानन ।
अंबिका तनय गजानन ।
ॐ गजानन ।
अंबिका तनय गजानन ।
अंबुज लोचन गजानन ।

गौरी सुताय ॐ नम ॐ ।
लंबोदराय ॐ नम ॐ ।
विघ्नेश्वराय ॐ नम ॐ ।
विश्वेश्वराय ॐ नम ॐ ।

महागणपते पालयमाम् ।
मातंग वदन पालयमाम् ।
गजमुख नाथ पालयमाम् ।
सुर मुनि वन्दित पालयमाम् ।

गजानन हे शुभानन ।
गौरि मनोहर प्रिय नंदन ।

पशुपति तनय गजानन ।
परम निरंजन शुभानन ।

मूषक वाहन गजानन ।
मोदक प्रिय मुख शुभानन ।

ओम्कारेश्वर नमोऽस्तुते ।
जय विजयीभव नमोऽस्तुते ।

विघ्नेश्वर नमो विनायक ।
भक्त जन प्रिय गजानन ।

एक दंतं विनायकम् ।
विघ्न हरं भज गजाननम् ।
गणाधिपं उमासुतम् ।
गौरि वंदन गजाननम् ।

मूषक वाहन गजाननम् ।
मोदक हस्त गजाननम् ।
छामर कर्ण गजाननम् ।
विलंबित सूत्र गजाननम् ।

वामन रूप गजानन ।
महेश्वर पुत्र गजानन ।
विघ्न विनायक गजानन ।
पाद नमस्ते गजानन ।
पाद नमस्ते गजानन ।

गणनाथं गणनाथम् ।
ईश्वर पुत्रं गणनाथम् ।

गणनाथं गणनाथम् ।
गणपति भजरे गुणनाथम् ।

गणनाथं गणनाथम् ।
भजरे मानस सदा नित्यम् ।

विघ्न विनायक गणनाथम् ।
सिद्धि विनायक गणनाथम् ।

पार्वति पुत्रं गणनाथम् ।
मुक्ति प्रदायक गणनाथम् ।

मूषक वाहन गणनाथम् ।
मोदक हस्त गणनाथम् ।

शिव शिव गज मुख गणनाथम् ।
शिव गण वंदित गुणनाथम् ।

बुद्धि प्रकाशक गणनाथम् ।
सिद्धि विनायक गणनाथम् ।

महा गणपते गुरु चरणम् ।
शरणं शरणं शक्ति स्वरूप ।

गौरीनंदन गजानन ।
हे गौरीनंदन गजानन ।
गिरिजानंदन निरंजन ।
पार्वतिनंदन शुभानन ।
पाहि प्रभो माम् पाहि प्रसन्न ।
पाहि प्रभो माम् पाहि प्रसन्न ।

गणपति गणपति पालयमाम् ।
गौरी तनय पालयमाम् ।

गणेश गजमुख सिद्धि विधायक ।
किरीन्त्र नंदिन नंदन नायक ।

जिनि नवरून सिंदूर शोभन ।
लम्बोदर दनु जग जन मोहन ।

अभीष्ट दायक विघ्न विनायक ।
प्रदाह स्मरारे देव विनायक ।

महा गणपते नमोऽस्तुते ।
मातंग मुख नमोऽस्तुते ।

गिरिजा नंदन नमोऽस्तुते ।
पार्वति बालक नमोऽस्तुते ।
ओम्कारेश्वर नमोऽस्तुते ।
जय विजयीभव नमोऽस्तुते ।

नमोऽस्तुते नमोऽस्तुते ।

वेद विनायक शरणं शरणम् ।
विघ्न विनायक शरणं शरणम् ।
नाद विनायक शरणं शरणम् ।
नाग विनायक शरणं शरणम् ।
बोध विनायक शरणं शरणम् ।
बुद्धि प्रदायक शरणं शरणम् ।
सिद्धि विनायक शरणं शरणम् ।
मुक्ति प्रदायक शरणं शरणम् ।

गजानन गजानन विघ्न हरण गजवदन ।
गौरी नंदन गजानन शंकर तनय गजवदन ।

षण्मुख सोदर गजानन भक्त पालक गजवदन ।
निरत निरंजन गजानन निरुपम वदन गजवदन ।
वेदविलक्षण गजानन नाग कङ्कण गजवदन ।

पार्वती नंदन शुभानन ।
पाहि प्रभो माम् पाहि प्रसन्न ।

विघ्न विनायक वेदस्वरूप ।
विलंबित सूत्र नमो नमो ।
प्राणस्वरूप अमृत प्रताप ।
शरवण भव गुह सहोदर ।
परिमळ चरण अपरिमित करुण ।
करिमुख वरद गजानन ।
गौरी नंदन निरत निरंजन ।
प्रसन्न वदन नमो नमो ।

मूषक वाहन गजानन भक्त ।
संकट विमोचक शुभानन ।
अंजन नाशक गजानन भक्त ।
सुज्ञान पोशक शुभानन ।
मोदक प्रियकर गजानन शिव ।
पार्वति नंदन शुभानन ।
करुण पयोनिधि गजानन भक्त ।
शरणागत दिव्य शुभानन ।
गौरी नंदन नित्रत निरंजन ।
प्रसन्न वदन नमो नमो ।

लम्बोदर शिव गौरी सुत ।
गणाधिप जय गजानन ।
बाल चंद्र जय गज कर्णेश्वर ।
विघ्नेश्वर माम् पाहि प्रभो ।

नमामि नित्यं गणनाथम् ।
स्मरामि सत्यं गजवदनम् ।
भवानि नंदन बाल गजानन ।
प्रणव स्वरूप पाहि प्रभो ।
ओम्कार रूप पाहि प्रभो ।
विघ्न विनाशक गणनाथम् ।
सिद्धि विनायक गजवदनम् ।
बुद्धि प्रकाशक बाल गजानन ।
प्रणव स्वरूप पाहि प्रभो ।

विनायक गणाधिप विघ्न निवारण गजानन ।
मातंग वदन आनंद सदन ।
महादेव शिव प्रिय गज वदन ।
मोह विनाशक मोक्ष प्रदायक ।
मूषक वाहन मंगल चरण ।

विनायक विघ्न नाशक वर प्रदायक विनायक ।
अनंत रक्षक अश्रित दायक ।
अद्भुत विग्रह अमराधीश्वर ।
अखंड पूर्ण सच्चिदानंद ।
गज मुख गज मुख गणनाथ ।
सुर मुनि वंदित गुण शील ।

मातंग वदन आनंद सदन ।
महादेव शिव शंभो नंदन ।
माया विनाशक मूषक वाहन ।
मातामहेश्वरी भवानी नंदन ।
महागणपते मंगल चरण ।
महागणपते मंगल चरण ।

कृष्ण भजन

यदुनंदन गोपाला ।
जय वृंदावन बाला ॥
जय मुरली गान विलोला ।
गोपाला गोपाला राधे गोपाला ॥

कृष्ण राम गोविंद नारायणा ।
केशव माधव हरि नारायणा ॥
श्री वेणु गोपाल कृष्णा ।
माधव मधुसूदन नारायणा ॥

गोविंद माधव गोपाल केशवा ।
जय नंद मुकुंद नंद गोविंद, राधे गोपाला ॥
गिरिधारी गिरिधारी जय राधे गोपाला ।
घन श्याम श्याम श्याम जय जय, राधे गोपाला ॥
जय नंद मुकुंद नंद गोविंद, राधे गोपाला ॥

कृष्ण कृष्ण मनमोहना ।
चित्त चोर राधा जीवना ॥
मेघ श्याम मधुसूदना ।
राधा कांत यदु नंदना ॥

हे माधवा हे मधुसूदना ।
दामोदरा हे मुरलीधरा ॥
मनमोहना हे यदुनंदना ।
दीनावना भवभय भंजना ॥

कृष्ण कृष्ण मुकुंद जनार्दन ।

कृष्ण गोविंद नारायण हरे ॥

अच्युतानंत गोविंद माधव ।

सच्चिदानंद नारायण हरे ॥

कल्याण कृष्ण कमनीय कृष्ण ।
कालिय मर्दन श्री कृष्ण ॥

गोवर्धन गिरिधारी मुरारी, गोपी मन संचारी ।
वृंदावन के तुलसी माला, पीताम्बर धारी, मुरारी ॥

राधेश्याम राधेश्याम ।
राधा माधव राधेश्याम ॥

ईश रमेश राधेश्याम ।
केशव अच्युत मेघश्याम ॥
वसुदेव सुत राधेश्याम ।
वासुकि शयन मेघश्याम ॥

पांडव प्राण राधेश्याम ।
पांडव प्राण मेघश्याम ॥
पांडव रक्षक राधेश्याम ।
कौरव शिक्षक मेघश्याम ॥

निगमागोचर राधेश्याम ।
अगणित महिमा मेघश्याम ॥
मुरली मनोहर राधेश्याम ।
पुरंदर विट्ठल मेघश्याम ॥

देव देव देव कृष्ण ।
दीन बंधु पाहि ॥
नील मेघ श्याम कृष्ण ।
नित्य मुक्त पाहि ॥

वेणु गान लोल कृष्ण ।
विमल ज्ञान पाहि ॥
विश्व रूप वासुदेव ।
देव देव पाहि ॥

गुरुवायूर् पुर श्री हरि कृष्ण नारायण गोपाल ।
मुकुंद माधव मुरलीधारी नारायण गोपाल ॥

नारायण गोपाल श्री हरि नारायण गोपाल ।
नारायण गोपाल श्री हरि नारायण गोपाल ॥

मोहन मुरलीधारी श्री हरि नारायण गोपाल ।
गोवर्धन गिरिधारी मुरारी नारायण गोपाल ॥

मुरली मनोहर नंद कुमार ।
गोवर्धन गिरिधारी ।
गोपाल कृष्ण मुरारी ॥
भामा रुक्मिणी हृदय विहार ।
श्याम सुकुमार प्रेम सुधाकर ।

राधे राधे राधे राधे, राधे गोविंदा,
वृन्दावन चंदा ।
अनाथ नाथ दीन बंधु, राधे गोविंदा ॥

पुराण पुरुष पुण्य श्लोक, राधे गोविंदा,
वृन्दावन चंदा ।
अनाथ नाथ दीन बंधु, राधे गोविंदा ॥

नंद मुकुंद नवनीत चोर, राधे गोविंदा,
यशोदा बाल यदुकुल तिलक, राधे गोविंदा,
वृन्दावन चंदा ।
अनाथ नाथ दीन बंधु, राधे गोविंदा ॥

कालिय नर्तन कंस निशूदन, राधे गोविंदा,
गोपी मोहन गोवर्धन धर राधे गोविंदा,
वृन्दावन चंदा ।
अनाथ नाथ दीन बंधु, राधे गोविंदा ॥

राधा वल्लभ रुक्मिणी कांत राधे गोविंदा,
वेणु विलोल विजय गोपाल, राधे गोविंदा ,
वृन्दावन चंदा ।
अनाथ नाथ दीन बंधु, राधे गोविंदा ॥

भक्त वत्सल भागवत प्रिय, राधे गोविंदा,
पंढरीनाथा पांडुरंगा राधे गोविंदा,
वृन्दावन चंदा ।
अनाथ नाथ दीन बंधु, राधे गोविंदा ॥

मनमोहन कृष्ण कुंजविहारी ।
मथुरानाथ हे गिरिधारी ।
मंगल चरण भव भय हरण ।
मधुर मधुर जय राधा रमण ।

वैजयन्तीधर वनमालाधर ।
शंखचक्रधर पीतांबरधर ।
श्रीधर पुरंदर गिरिधर नागर ।
मुरलीधर घनश्याम मनोहर ।

मुरलीधर मुरहर नटवर ।

गोपीजनप्रिय गिरिधर ।
वृन्दावन संचार जगदाधार ।
यशोदा बाल नन्द कुमार ।

गोपाल गिरिधर बाल ।
गोपी लोल गोकुल बाल ।
गोपरिपाल नारायण ।
नारायण नारायण ।
गोपरिपाल नारायण ।
गोविंद गोविंद नारायण ।

मधुसूदन हे मुरलीधर ।
मोहन कृष्ण जगन्मोहन कृष्ण ।
नारायण गोविंद ।
गोपाल हे माधव ।

कृष्ण कृष्ण यदु वर कृष्ण ।
मुरहरि केशव यादव माधव ।
मुरली मनोहर कृष्ण मुरारी ।
कृष्ण मुरारी श्याम मुरारी ।
मुरहर केशव यादव माधव ।

जय राधा माधव जय कुंज विहारी ।
जय गोपी जन वल्लभ जय गिरिधारी ।
यशोदा नंदन वृजजन रंजन ।
यमुना तीर वनचारि जय कुंज विहारी ।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे ।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ।

वनमाली राधा रमण गिरिधारी गोविंद ।
नीलमेघ सुन्दर नारायण गोविंद ।
भक्त हृदय मन्दार भानु कोटि सुंदर ।
नन्द नन्द गोप वृंदा नारायण गोविंद ।

अनंतरूप अनंतनाम आदिमूल नारायण ।
अनंतशयन हे जगन्नाथ कमलनयन हे माधव ।
करुणासागर कलिंग नर्तन ।
हे कृपा सिंधो कृष्ण ।

जय जगदीश हरे मुरारे ।
जय जगनाथ जनार्दन ।
जय वनमाली जय गिरिधारी ।
जय जय श्रीहरि श्याम मुरारी ।

राधिका जीवन ।
कृष्ण जनार्दन ।
राधे गोविंद राधे गोपाल ।
देवकी नंदन ।
नंद नंदन हे गोपिक रंजन ।
नंद नंदन हे गोपरिपालन ।
मुरलि मोहन ।
हे मधुसूदन ।

मधुवन संचारि श्याम मुरारी ।
हे मधुसूदन मुरलीधारि ।
माधव मोहन मयूर मुकुट धर ।
मथुरा नाथ प्रभु गिरिधारी ।

आनंद सागर मुरलिधर ।
मीरा प्रभु राधे श्याम वेनु गोपाल ।
नन्द यशोदा आनंद किशोर ।
जय जय गोकुल बाल जय वेणुगोपाल ।

तुलसी माला धारी कृष्ण ।
तुन्गा तीरविहारी कृष्ण ।
गोपी मनस गोपाल कृष्ण ।
गोविंद गोविन्द साई कृष्ण ।

जय गोविंद जय अनंत नंद गोपाल ।
मोहन मुरलीधर श्याम गोपाल ।
मन्दर गिरिधारी हरे नटवर लाल ।
माधव केशव मदन गोपाल ।

मधुर मधुर मुरली घनश्याम ।
मथुराधिपते राधे श्याम ।
सूरदास प्रभु हे गिरिधारी ।
मीरा के प्रभु हृदय विहारी ।

मुरलि मनोहर राधेश्याम ।
गोपी वल्लभ राधेश्याम ।
देवकी नंदन राधेश्याम ।
राधेश्याम जय राधेश्याम ।
वेणुविलोल राधेश्याम ।
विजयगोपल राधेश्याम ।
नन्दकुमार राधेश्याम ।
नवनीतचोर राधेश्याम ।

राधिका मनोहर मदन गोपाल ।
दीन वत्सल हे राज गोपाल ।
भक्त जन मन्दार वेनु गोपाल ।
मुरलिधर हे गान विलोल ।

मधुसूदन हरे माधव ।
श्री वासुदेव जनार्दन ।
हरे केशव नारायण ।
श्री हरि गोविंद मनमोहन ।
जनार्दन जगत्पालन ।
दीनवन दुखःभंजन ।
अरविंदलोचन आनंदन ।
श्री वासुदेव जनार्दन ।

बद चित्तचोर वृन्दावन संचार ।
गोपाल गोपाल हे मुरलि गोपाल ।
गोवर्धनोद्धार गोपाल बाल ।
गोपि जनोद्धार राधे गोपाल ।

गोपाल गोपाल गोकुल नंदन गोपाल ।
नंद मुकुंद गोपाल, नवनीत चोर गोपाल ।
वेनु विलोल गोपाल , विजय गोपाल गोपाल ।
राधा कृष्ण गोपाल , रमणीय वेष गोपाल ।
काळिंग मर्धन गोपाल, कौस्तुभ भूषण गोपाल ।
मुरलि लोल गोपाल, मुकुंद प्रिय गोपाल ।

कृष्ण कृष्ण गोविंद माधव, राधे ।
कृष्ण कृष्ण आनंद केशव ।
कृष्ण कृष्ण नारायण हरे , राधे ।
कृष्ण कृष्ण गोपाल श्री हरे ।

नंद तनय इंदु वदन माधव हरे ।
देवकि वसुदेव बाल केशव हरे ।
वेणु नाद विजय बाल माधव हरे ।
भक्त हृदय सुलभ नाथ केशव हरे ।

कृपानिधे पार्थसखे माधव हरे, सत्य ।
भामा पते लक्ष्मी नाथ केशव हरे ।
पाहि पाहि वासुदेव माधव हरे ।
देहि सद्गतिं प्रभो केशव हरे ।

कृष्ण कृष्ण जय गोपि रमण ।
भक्त वत्सल जीवन ।
राधा माधव मोहन ।
कृष्ण कृष्ण जय गोपि रमण ।

नटवर कृष्ण नटवर कृष्ण ।
राधे नंद लाल ।

कृष्ण घन घन नील ।
कृष्ण गोकुल बाल ।

हरे माधव हरे गोपिक लोला, हरे हरे ।
हरे माधव हरे गोपिक लोला ।

जय हो जय हो गोपालन ।
जय हो जय हो नारायण ।
जय हो जय हो जनार्दन ।
जय हो जय हो निरंजन ।

कृष्ण मुकुंद मुरारे जय ।
कृष्ण मुकुंद मुरारे ।

करुणा सागर कमल नायक ।
कनकंबरधारि , गोपाल ।

कालिय मर्दन कंस निशूधन ।
कमलायत नयन , गोपाल ।

गोपि जन मन मोहन व्यापक ।
कुवलयदल नील , गोपाल ।

कृष्णं वंदे नंदकुमारम् ।
राधा वल्लभ नवनीत चोरम् ।
मुरलीधर सुकुमार शरीरम् ।
गोपीवल्लभ नंदकिशोरम् ।

रामं वंदे दशरथ तनयम् ।
सीत वल्लभ रघुकुल तिलकम् ।
कौसल्य सुत लक्ष्मण भरतम् ।
हनुमत प्राणं कोदंड रामम् ।

पुरंदर रंग हरे विट्ठल ।
पंडरि रंग हरे विट्ठल ।
नरहरि रंग हरे विट्ठल ।
मुरहर रंग हरे विट्ठल ।

हे मुरलि माधव ।
राधे कृष्ण केशव ।
केशव माधव यादव नंदन , राधे कृष्ण जै गोपाल ।
नंद नंदन राधे श्याम , इंदु वदन मेघ श्याम ।
कालिय नर्तन राधे श्याम , कंस निशूधन मेघ श्याम ।
पांडुरंग राधे श्याम , पंडरिनाथ मेघ श्याम ।
भक्त वत्सल राधे श्याम , बाल गोपाल मेघ श्याम ।

नंदलाल यदु नंदलाल ।

वृन्दावन गोविंदलाल ।
राधालोल नंदलाल ।
राधा माधव नंदलाल ।

(मन) मोहन मुरलीधारी जय राधे गोविंद ।
गोवर्धन गिरिधारि जय राधे गोविंद ।
वृन्दावन संचारि जय राधे गोविंद ।
यमुना तीर विहारि जय राधे गोविंद ।
मीरा प्रभु गिरिधारि जय राधे गोविंद ।
गोपि मनोहर शौरि जय राधे गोविंद ।

राधा माधव राधे श्याम ।
राधा माधव राधे श्याम ।

राधा माधव राधे श्याम ।
त्रिगुणातीत गुणेश्वर श्याम ।

सृष्टि स्थितिलय कारण श्याम ।
गोविंदाच्युत यादव श्याम ।
नारायण हरि केशव श्याम ।
मुकुंद मुरहर वामन श्याम ।

जय जय गोपि वल्लभ श्याम ।
अनुमन सुंदर मोहन श्याम ।
अखिल रसामृत सागर श्याम ।
राम कृष्ण हरि गिरिधर श्याम ।

श्रीनिवास गोविंद श्री वेंकटेश गोविंद ।
भक्त वत्सल गोविंद भागवत प्रिय गोविंद ।
नित्य निर्मल गोविंद नील मेघ श्याम गोविंद ।
पुरान पुरुष गोविंद पुंडरीकाक्ष गोविंद ।
गोविंद हरि गोविंद गोकुल नंदन गोविंद ।
वेणु गोपाल गोविंद वेंकट विट्ठल गोविंद ।
अनाथ रक्षक गोविंद आपत बांधव गोविंद ।
गोविंद हरि गोविंद गोकुल नंदन गोविंद ।

<u>नारायण भजन</u>

क्षीराब्धि शयन नारायण ।
श्री लक्ष्मी रमण नारायण ॥
नारायण हरि नारायण ।
श्रुत जन परिपाल नारायण ॥
वैकुण्ठ वास नारायण ।
वैदेही रमण नारायण ॥
नारायण हरि नारायण ।
नरहरि रूप नारायण ॥

श्री लक्ष्मी रमण नारायण ।
नारायण वेद पारायण ॥
भव भय हरण, वंदित चरण ।
अलख निरंजन नारायण ।
वैदेही मोहन नारायण ॥

नारायण वेद पारायण ।
नव नव सुंदर नारायण ॥
क्षीराब्धि शयन नारायण ।
नीरज लोल नारायण ॥
घन श्याम नील नारायण ।
कलियुग अवतार नारायण ॥

ॐ नमो नमः ॐ, नमः ॐ ।
ॐ नमो नमः ॐ, नमः ॐ ॥

अच्युताय नमः ॐ, अनंताय नमः ॐ ।
सुंदराय नमः ॐ, सुरवंदिताय नमः ॐ ।
माधवाय नमः ॐ, मधुसूदनाय नमः ॐ ।
कारणाय नमः ॐ, नारायणाय नमः ॐ ॥
रामाय नमः ॐ, कृष्णाय नमः ॐ ।
कारणाय नमः ॐ, नारायणाय नमः ॐ ॥

राधा माधव मदन गोपाला
नंदमुकुंदा नटवरलाला ॥

मथुरानाथा दीनदयाला
राधे गोविंदा गिरिधरबाला ॥

हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो ॥
हरिका नाम सुमिरन करो
हरिके गुण सुमिरन करो
हरिकी कथा सुमिरन करो ॥

कृष्णं विष्णुं श्रीधरं माधवं मधुसूदनम् ।
गोविंदं श्रीरामं, रामं रामं रघुपते ॥

गोपाला रोल कोला मुरली लोला नंदलाला ।
केशव माधव जनार्दना ।वनमाला बृंदावन बाला ।
मुरली लोला नंदलाला ।

आदिशेषा अनंतशयना श्रीनिवासा श्रीवेंकटेशा ।
रघुकुलतिलका रामचंद्रा सीतापते श्रीरामचंद्रा ॥

जय जय रामकृष्ण गोविंद नारायण ।
नारायण हरि नारायण ।

श्री लक्ष्मी रमण नारायण ।
हरि गोप नंद नारायण ।
हरि ॐ अनंत नारायण ।
हरि नारायण ।

पुरन्दर रंग हरे विट्ठल ।
पंढरि रंग हरे विट्ठल ।
नरहरि रंग हरे विट्ठल ।
मुरहरि रंग हरे विट्ठल ।

विट्ठल हरे विट्ठल ।
पांडुरंग विट्ठले हरि नारायण ।
पुरन्दर विट्ठले हरि नारायण ।
हरि नारायण भजो नारायण ।
साई नारायण सत्य नारायण ।

वैकुण्ठपते नारायण ।
वारिजनयन नारायण ।
वक्षस्थल कौस्तुभमणि भूषित ।
शंखचक्र पीतांबर शोभित ।
नारायण हरि नारायण ।

पांडुरंग हरि मुकुंद मुरारी ।
पांडुरंग हरि पांडुरंग हरि ।

देव देव देव महादेव देव ।
आदि देव देव ब्रह्मा विष्णु देव ।

रंग रंग पांडुरंग रंग विट्ठल ।
विट्ठल हरि विट्ठल ।
रुक्मिणी समेत पंढरि नाथ ।
पांडुरंग विट्ठल दीनबंधु विट्ठल ।
विट्ठल हरि विट्ठल ।
विट्ठल हरि विट्ठल ।

कमलनयन प्रभु कमलापते ।
कमलासन प्रभु कमलाकांत ।
कमलनाभ प्रभु कमलारमण ।
कमलेश्वर प्रभु कमलाकांत ।

श्रीनिवास वेंकटेश ।
श्रुतजन परिपाल गोविंद ।
श्रीनिवास वेंकटेश ।
तिरुपति गिरिवास गोविंद ।
गरुड़ वाहन गोविंद गोविंद ।
गोविंद गोविंद श्रीनिवास गोविंद ।
गोविंद गोविंद श्रीनिवास गोविंद ।
गोविंद गोविंद वेंकटरमण गोविंद ।

नारायण नारायण भज मन नारायण ।
श्री हरि माधव नारायण भज मन नारायण ।
मुरली श्याम मोहन श्याम मुरली मोहन श्याम ।
श्री रघु राम हे घन श्याम भज मन नारायण ।

धरणी नायक गोविंद ।
दिनकर तेज गोविंद ।
वेणुगान प्रिय गोविंद ।
वेंकटरमण गोविंद ।
सीता नायक गोविंद ।
श्रित जन पालक गोविंद ।

गरुड़ वाहन नारायण ।
श्री शेष शयन नारायण ।
श्री लक्ष्मी रमण नारायण ।
हरि ॐ हरि ॐ नारायण ।

हरि नारायण गोविंद ।
हरि नारायण दुरितनिवारण ।
हरि नारायण गोविंद ।
केशव माधव गोविंद ।
गोविंद गोविंद ।
गोविंद हरि गोविंद ।

पांडुरंग पांडुरंग पांडुरंग विट्ठल ।
पंढरिनाथ पंढरिनाथ पंढरिनाथ विट्ठल ।
हरि नारायण हरि नारायण हरि नारायण विट्ठल ।
भजो नारायण भजो नारायण भजो नारायण विट्ठल ।
नारायण हरि नारायण हरि नारायण हरि विट्ठल ।
हरि नारायण हरि नारायण हरि नारायण विट्ठल ।

नारायणं हरि नारायणं ।
नारायणं लक्ष्मी नारायणं ।
तव पद शरणं नारायणं ।
शेष शयन नारायणं ।

केशव माधव मधुसूदन ।
श्रीधर सुन्दर नारायण ।
मुरली मनोहर जनार्दन ।
अच्युत अनंत नारायण ।
गोविंद जय जय गोपाल जय जय ।

नारायणं भजे नारायणं , लक्ष्मी ।

नारायणं भजे नारायणम् ।

वृंदावन स्थित नारायणं ,देव ।
बृंद भवस्थित नारायणम् ।

पंकज विलोचन नारायणं , भक्त ।
संकट विमोचन नारायणम् ।

अज्ञान नाशकं नारायणं , भक्त ।
विज्ञान पाशकं नारायणम् ।

श्रीवत्स भूषण नारायणं , नंद ।
गोवत्स पोशन नारायणम् ।

शृंगार नायक नारायणं , पद ।
गंग विदायक नारायणम् ।

श्रीकांत सहस्र नारायणं , दिव्य ।
वैकुंठ सुरवर नारायणं ।

देवी भजन

मदुरापुरी निलये मीनाक्षी ।
कामकोटि निलये कामाक्षी ।
काशीपुराधीश्वरी विश्वेश्वरी ।
माता अन्नपूर्णेश्वरी श्री शंकरी ।

काली काली महा काली कपालिनी ।
दुर्गा दुर्गा देवी दुर्गा भवानी ।
मंगल गौरी माता महेश्वरी ।
राज राजेश्वरी लक्ष्मी नारायणी ।

मंगल शुभ करि माता महेश्वरी ।
अंबे भवानी अखिलंदेश्वरी ।
राजीव लोचनि राजराजेश्वरी ।
आदि पराशक्ति श्री परमेश्वरी ।
आनंद दायिनी हे शिवशंकरी ।

माँ हे माँ, माँ हे माँ ।
वीणा वादिनि सरस्वती माता ।
जगत पालिनि गौरी माता ।
अम्बा भवानी लक्ष्मी माता ।
साई माता जगत जननी ।

जय जय भवानी माँ अंबे भवानी माँ ।
अंबे भवानी माँ साई भवानी माँ ।
शिरडी भवानी माँ पार्थि भवानी माँ ।
आत्मनिवासी माँ साई भवानी माँ ।

दुर्गे हे दुर्गे दुर्गे जय जय माँ ।
दुर्गे हे दुर्गे दुर्गे जय जय माँ ।
करुणासागरि माँ ।
कालि कपालिनि माँ ।
जगदोधारिणी माँ ।
दुर्गे जय जय माँ ।
जय दुर्गे जय जय माँ ।

देवी भवानी जगतजननी ।
मन्दहासिनि आनंद दायिनी ।
मंगल कारिनि कारुण्य रूपिणि ।
नारायणी देवी नारायणी ।
महिषासुर मर्दिनि अंबे भवानी ।

शारदेवि शारदे कलानिधे दयानिधे ।
(4 times at different pitches) ।

त्रिपुर सुन्दरि माँ अम्बा दया सागरी माँ ।
सुन्दर वदनि माँ अम्बा सुगुण मनोहरी माँ देवी ।
जय जग जननी माँ अम्बा जगदधारि माँ ।
परम कृपालिनी माँ अम्बा पाप विमोचनी माँ ।

जय जय जय जगत वन्दिनी माँ ।
जय परमेश कृपालिनी माँ ।
आदि शक्ति परब्रह्म स्वरूपिणी ।
जग जननी चतुर्वेद विलासिनि ।
सांब विनोदिनि माता भवनी ।
शांभवी शंकरी मोक्ष प्रदायिनी ।

श्रीकरी कृपाकरी क्षेमंकरी सयीस्वरी ।
शंकरी अभयंकरी शुभांकरी महेश्वरी ।
ताण्डव केलि प्रियकरी भैरवी प्रलयंकरी ।
सर्वेश्वरी सुन्दरी दया करि महेश्वरी ।

जय देवी दुर्गा गौरी शंकरी पार्वती ।
विमल कामिनि हरिनारायणी भगवती ।
वेद माता विद्यादायिनी भारती ।
हंस वाहनी वीणापाणि सरस्वती ।

अखिलन्देश्वरि राजराजेश्वरी ।
दुर्गा भवानी नारायणी ।
महा माया शिव शक्ति स्वरूपिणी ।
वेद विलासिनि नारायणी ।

गानप्रिये देवी करुणामयी ।
कादंबरी अम्बा कात्यायिनि ।
हरिवल्लभे शुभ दायिनी ।
ओंकार रूपिणी नारायणी ।
भुवनेश्वरी अम्बा जगन्मोहिनी ।
श्री चक्र धारिणी नारायणी ।

कादंबरी अम्बा करुणाकरी ।
श्वेतांबरी अम्बा जगदीश्वरी ।
शिव शंकरी शक्ति महेश्वरी ।
भुवनेश्वरी अम्बा परमेश्वरी ।

कला रूपिणी कादंबरी ।
नाद रूपिणी नारायणी ।
सत्यधर्मरूपिणी सर्वेश्वरी ।
मंगलकारिणी महेश्वरी ।
कादंबरी नारायणी ।
सर्वेश्वरी अम्बा परमेश्वरी ।

जगदंबिके जय जगदीश्वरी ।
थये पराशक्ति परमेश्वरी ।
माये महा माये माहेश्वरी ।
नीये विनय थीर्कुम विश्वेश्वरी ।
ओनैये शरण दैन्दिन करुणाकरि ।
अरुवाये आनंद लहरि गौरी ।

अंबा परमेश्वरि अखिलंदेश्वरि ।
आदि पराशक्ति पालयमाम् ।
त्रिपुर सुंदरि राज राजेश्वरि ।
त्रिभुवनेश्वरि पालयमाम् ।
कांची कामाक्षी मदुरै मीनाक्षी ।
काशी विशालाक्षी पालयमाम् ।
मंजु भाषिणि मंद हासिनि ।
इंदु शेखरी पालयमाम् ।

जय जय देवि दयालहरि ।
जननी सरस्वती पालयमाम् (पालयमाम् पालयमाम्) ।

अमले कमलासन सहिते ।
अद्भुत चरिते पालयमाम् (पालयमाम् पालयमाम्) ।

माते मंगल गुणजाले ।
मनोज्ञ शीले पालयमाम् (पालयमाम् पालयमाम्) ।

किरीट कुण्डल सुशोभिते ।
किन्नर गीते पालयमाम् (पालयमाम् पालयमाम्) ।

भगवति पार्वति गीर्वाणि ।
पन्नग वेणि पालयमाम् (पालयमाम् पालयमाम्) ।

सर्वलोक परिपूजित चरणे ।
रत्नाभरणे पालयमाम् (पालयमाम् पालयमाम्) ।

विमल माते विधु मुकुति ।
विबुध गणार्चित चरणयुगे (पालयमाम् पालयमाम्) ।

विन्दन मानस राज हंसि ।
विद्या रूपे सरस्वति (पालयमाम् पालयमाम्) ।

गोविंद सहोदरी अंबा गोमति नारायणी ।
देवि आनंद स्वरूपिणी परमानंद स्वरूपिणी ।
सच्चिदानंद स्वरूपिणी ब्रह्मानंद स्वरूपिणी ।
अंबा कामाक्षी कात्यायिनी ।
शरणागतम चिन्मयी , देवी ।
करुण विलासिनी दयामयी ।

वाणी सरस्वती वाग्देवी वीणा धारिणि माम् पाहि ।
पुस्तक पाणि वाग्देवी पन्नग वेणी माम् पाहि ।
चतुर्मुख भर्ये वाग्देवी शंकर पूजिते माम् पाहि ।
वाचामगोचरि वाग्देवी वाक्ये विनोदिनि माम् पाहि ।

शारदे शारदे वीणा पाणि शारदे ।
शारदे शारदे ब्रह्म पत्नी शारदे ।
शारदे शारदे वाणी सरस्वती शारदे ।
शारदे शारदे शंकर पूजिते शारदे ।
शारदे शारदे शृंग गिरीशे शारदे ।
शारदे शारदे पुस्तक हस्ते शारदे ।
शारदे शारदे मयूर गमनि शारदे ।
शारदे शारदे हंस वाहिनी शारदे ।

शारदे ओ विशारदे,
विघ्न विनाशिनी शारदे ।
ज्योति स्वरूपिणी शारदे,
आत्म स्वरूपिणी शार्दे ॥

ज्योति स्वरूपिणि अम्बे माँ
आत्म स्वरूपिणि अम्बे माँ
दुर्गे माँ, अम्बे माँ ॥

महा लक्ष्मी जगन्मात ।
मधुसूदन प्रिय मन मोहिनी ।
मधुसूदन प्रिय जगन मोहिनी ।

आदि लक्ष्मी धन धान्य लक्ष्मी ।
सौभाग्य लक्ष्मी संतान लक्ष्मी ।
श्री वरलक्ष्मी पाहि माम् ॥

संचल सुमंगल वसुंधर वसुप्रद ।
पद्मिनी सुनंदिनी निरंजनी भार्गवी ।
अमले कमले विमले हरि वल्लभे शुभे ।
मंदहास चंद्र वदन शीतलं नमाम्यहं ।

राम भजन

हरे राम हरे राम , राम राम हरे हरे ।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण , कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥

अच्युतम केशवम राम नारायणं ।
कृष्ण दामोदरं वासुदेवं भजे ।
श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं ।
जानकीनायकं रामचंद्रं भजे ॥

आत्माराम आनंद रमण ।
अच्युत केशव हरि नारायण ॥

भव भय हरण वंदित चरण ।
रघुकुल भूषण राजीव लोचन ॥

आदि नारायण अनंत शयन ।
सच्चिदानंद सत्यनारायण ॥

जगदाश्रय श्री रघुराम ।
जगदोद्धार सीताराम ॥

परम पावन तारक राम ।
श्री राम शत कोटि प्रणाम ।
शरणं शरणं आत्माराम ।
शरणं शरणं सीताराम ॥

रामचंद्र प्रभु रघुवंश राम ।
सीतापते श्री जानकि राम ॥

अहल्योद्धारक सगुणादि राम ।
रावण संहार कोदंड राम ।
अयोध्या राम पट्टाभि राम ।
नव नव कोमल श्री सीताराम ।
सीतापते जय जानकी राम ॥

रामचंद्र रघुवीर । रामचंद्र रणधीर ॥
रामचंद्र रघुराम । रामचंद्र परमधाम ॥
रामचंद्र रघुनाथ । रामचंद्र जगन्नाथ ॥
रामचंद्र मम बंधु । रामचंद्र दया सिंधु ॥

आओ हम सब मिलकर गायें महाप्रभूके गान ।
गाये गाये तन मन खोये करें ईश का ध्यान ॥
भजरे रघुपति राघव राजाराम , आओ हम सब ...

जय जय रघु नंदन जय जानकी जीवन ।
शरणागत पालन जय जगदोधारन ।
राजीवदल लोचन जय जगदानन्दन ।
राजाधिराज रामचंद्र साई जगत वन्दन ।

श्रीराम राम जय जय राम ।
राम राम जय राम ।
कौशल्य सुत वर्धन राम ।
श्रीमत् दशरथ नंदन राम ।
जानकी जीवन पावन राम ।
जानकी जीवन मोहन राम ।
मारुति सेवित श्री रघु राम ।

श्री राम राम राम रघुनन्दन राम राम ।
श्री राम राम राम भरताग्रज राम राम ।
श्री राम राम राम रणधीर राम राम ।
श्री राम राम राम शरणं भव राम राम ।

हे रघु नंदन दशरथ नंदन ।
बद्रदीश्वर राम ।
वैदेही प्रिय वैकुण्ठ राम ।
सदा स्मरो मैं रामेति राम ।

दशरथे राम जय जय राम ।
रघुकुल भूषण राजा राम ।
सीता वल्लभ सुन्दर राम ।
श्री राम जय राम सत्य साई राम ।

भयहर मंगल दशरथ राम् ।
जय जय मंगल सीता राम् ।
मंगलकर जय मंगल राम् ।
संकट शुभ विभहोदय राम् ।
आनंदामृत वर्षक राम् ।
आश्रित वत्सल जय जय राम् ।
रघुपति राघव राजा राम् ।
पतित पावन सीता राम् ।

राम राम दशरथ राम हे राजा राम ।

हे सीता राम ।
रघु कुल भूषण राजीव लोचन हे राजा राम ।

कृष्ण कृष्ण राधा कृष्ण हे गोकुल बाल ।
हे गोपि लाल ।
नंद मुकुंद नवनीत चोर हे नंद लाल ।

जय रघु नंदन जय जय राम ।
जय जगत ज्ञानी जानकी राम ।
नव नव कोमल मेघ श्याम ।
भव हरण भद्राचल राम ।
भय हरण भद्राचल राम ।

दशरथ नंदन हे परम धाम ।
दशमुख मर्दन श्री रघु राम ।

राम राम राम् रघु नंदन हे घनश्याम ।
श्री राम् जय राम् जय जय राम् ।
जय राम् जय राम् जय जय राम् ।
जय राम् राम् राम्, जय राम् राम् राम् , जय राम राम् ।
रघुपति राघव राजा राम्, पतित पावन सीता राम् ।

जय जय राम जय रघु राम ।
सीता राम श्री रघु राम ।
पशुपति रंजन पावन राम ।
राम राम राम जय जय राम राम राम जय जय ।
राम राम राम जय जय सीता राम राम जय जय ।
दशरथ नंदन दशमुख मर्दन ।
राम राम राम जय जय ।
अगणित गुण गण अनंत रूप ।

राम राम राम राम राम नाम तारकम् ।
राम कृष्ण वासुदेव भुक्ति मुक्ति दायकम् ।
जानकि मनोहरं सर्व लोक नायकम् ।
शंकरादि सेव्यमान पुण्यनाम कीर्तनम् ।
राम राम राम राम राम राम राम् ।
राम राम राम सीता राम राम राम् ।

श्री राम जय राम जय जय राम ॥

श्री राम जय राम जय जय दयालु ।
श्री राम जय राम जय जय कृपालु ॥

आँजनेय भजन

वीर मारुति , गंभीर मारुति ।
धीर मारुति , अति शूर मारुति ।
गीत मारुति , संगीत मारुति ।
दास मारुति, रामदास मारुति ।
भक्त मारुति, परम भक्त मारुति ॥

अगणित गुण गण अप्रमेय , आंजनेय माम् पाहि ।
अंजनि पुत्र परम पवित्र ,राघव मित्र माम् पाहि ॥

आंजनेय रघुवीर । रामदूत माम् पाहि ॥
आंजनेय मम बंधु । आंजनेय मम सिंधु ॥
आंजनेय रघुराम । आंजनेय परम धाम ॥

आंजनेय वीर , हनुमंत शूर ।
वायु कुमार , वानर वीर ।
महानुभाव श्री हनुमंत ॥

श्री राम् जय राम् जय जय राम् ।
सीताराम् जय जय राम् ॥

रामपुजारी परोपकारी ।
महावीर बजरंगबली ।
सत्धर्मचारी सद्ब्रह्मचारी ।
महावीर बजरंगबली ।
ज्ञानगुण सागर रूप उजागर ।
महावीर बजरंगबली ।
केसरिनंदन कलिमल भंजन ।
महावीर बजरंगबली ।
ज्ञानगुण सागर रूप उजागर ।
महावीर बजरंगबली ।

वीरपराक्रम वीराधिवीर ।
सुजन पालन शुराधिशूर ।
शूरसंरक्षक शुराधिशूर ।
वायुकुमार वानरवीर ।

राम दूत रुद्र वीर्य ।
आंजनेय महा वीर ।
करुणा मूर्ति कृपा सिंधो ।
वायु पुत्र नमो नमो ।
सीता शोक विनाशक ।
पवन पुत्र नमो नमो ।

अतुलित बल धामं हेम शैलाभ देहम् ।
दनुज वन कृशानं ज्ञानिनां अग्रगण्यम् ।
सकल गुण निधानं वानराणामधीशम् ।
रघुपति प्रिय भक्तं वातजातं नमामि ॥

मनोजवं मारुत तुल्य वेगम् ।
जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथ मुख्यम् ।
श्री राम दूतं शरणं प्रपद्ये ॥

शिव भजन

शिवाय नमः शिवलिंगाय नम ॐ ।
हराय नमः हरलिंगाय नम ॐ ।
भवाय नमः भवलिंगाय नम ॐ ।
आत्मने नमः आत्मलिंगाय नम ॐ ।
नम ॐ नम ॐ नम ॐ नम ॐ ॥ शिवाय नमः

ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय
ॐ नम शिवाय शिवाय नम ॐ ।
अरुणाचल शिव अरुणाचल शिव
अरुणाचल शिव अरुण शिवोहं ॥

शंकर सांबशिव हर हर ।
शंकर सांबशिव जय जय ।
गंगा जटाधर गौरी महेश ।
चंद्र कलाधर हे परमेश ।
कैलास वासी काशीपते ।
करुणा सागर गौरी पते ।

शिव हरये हर शिवये ।
सांबसदाशिव हरये ।
हर हर हर हर महादेव ।
पार्वती रमण सदाशिव ।

शंभो महादेव मल्लिकार्जुन ।
मंगल चरण त्रिलोचन ।
पिनाकधारी पार्वती रमण ।
भव भय हरण सनातन ।
पार्वती रमण पतित पावन ।

शिवाय परमेश्वराय शशि शेखराय नम ॐ ।
भवाय गुण सांबवाय शिव ताण्डवाय नम ॐ ।
शिवाय परमेश्वराय चंद्र शेखराय नम ॐ ।
भवाय गुण सांबवाय शिव ताण्डवाय नम ॐ ।

ॐ शिव ॐ शिव, परात्पर शिव, ओंकार शिव तव शरणं ।
नमामि शंकर भजामि शंकर, उमामहेश्वर तव शरणं ।
गौरी शंकर शंभो शंकर सांब सदाशिव तव शरणं ।

शिव शंकर पार्वती रमण ।
गंगाधर भुवन धारण ।
शरणागत वन्दित शरण ।
करुणाकर भवभय हरण ।

नन्दीश्वर हे नटराज ।
नंदात्मज हरि नारायण ।
नागभरण नमः शिवाय ।
नादस्वरूप नमो नमो ।

लिंगोद्भवकर लिंगेश्वर ।
परमेश्वर माम् पाहि प्रभो ।
पाहि प्रभो माम् पाहि विभो ।

गंगा धर शिव गौरी शिव ।
शंभो शंकर सांब शिव ।
जय जगदीश्वर जय परमेश्वर ।
जगदोधार जगदीश्वर ।
विश्वाधर विश्वेश्वर ।
शंभो शंकर सांब शिव ।

चंद्र शेखराय नमः ॐ ।
गंगाधराय नमः ॐ ।
ॐ नमः शिवाय नमः ॐ ।
हर हर हराय नमः ॐ ।
शिव शिव शिवाय नमः ॐ ।
सयीस्वराय नमः ॐ ।

नमो भूत नाथ, नमो देव देव ।
नमो भक्त पाल, नमो दिव्य तेज ।
भवभद्र कर सदानिर्विकार ।
नमो लोक पाल नमो नाग लोल ।
नमो पार्वती वल्लभ नीलकण्ठ ।
सदा सुप्रकाश महा पाप नाश ।
काशी विश्वनाथ दयासिंधुजात ।
नमो पार्वती वल्लभ नीलकण्ठ ।

शिव शंभो हर हर शंभो ।
भव नाश कैलाश निवास ।
पार्वती पते हरे पशुपते ।
गंगाधर शिव गौरीपते ।

त्रिपुरारि शिव शंकर ।
नाग भूषण नाग भरण ।
ओंकारेश्वर नमः शिवाय ।
महा कालेश्वर नमः शिवाय ।

नीलकण्ठ महादेव ।
निखिल लोक जनप्रताप ।

बाल चंद्र शेखर ।
पार्वति मनोहर हर ।

तवलित कैलास क्षेत्र ।
साम वेद गीता स्तोत्र ।
अवनि ब्रह्म कपाल क्षेत्र ।
कामदहन विलास नेत्र ।

भोला नाथ उमापते शम्भो शंकर पशुपते ।
नंदी वाहन नाग भूषण चंद्र शेखर कलाधर ।
गंगाधर गौरी मनोहर गिरिजा रमण सदाशिव ।
कैलास वास कनक सभेष गज चर्माम्बर विश्वेश ।
श्मशान वास चिदम्बरेश नील कण्ठ महादेव ।
शूलधर ज्योति प्रकाश विभूति सुंदर परमेश ।
डम डम डम डम डमरू घनत ।
पार्वति रमण सदाशिव ।

कैलास वास करुणा विलास ।
गंगाधर हर सांब शिव ।
गौरि मनोहर सांब शिव ।
गिरिजा वल्लभ शंकर ।

शिव शिव शिव शिव चिन्मय तेज ।
शिव सुंदर कुंजित नटराज ।
हर हर हर हर त्र्यंबकेश ।
हर शिव शंकर हे जगदीश ।

नटराज नटराज नर्तन सुंदर नटराज ।
शिवराज शिवराज शिवकामि प्रिय शिवराज ।

शिवाय नमः ॐ शिवाय नमः ।
शिवाय नमः ॐ नमः शिवाय ।
शिव शिव शिव शिव शिवाय नमः ॐ ।
हर हर हर हर हराय नमः ॐ ।
हर हर षण्मुख गुहाय नमः ॐ ।
हर हर शरवण भवाय नमः ॐ ।

दत्तात्रेय भजन

दत्तात्रेय ब्रह्मसमाधियुक्तं ॥

दत्तात्रेय त्रिमूर्तीरूप त्रिभुवन लोका रक्षक ।
कामधेनू कल्पवृक्षा कामितपललग राजका ।
दंडकमंडलु शुलाडमरुगा शंखचक्रयशोभिता ।
उत्तम उत्तम पुरुषोत्तम पूर्णचंद्रगा प्रगटिता ।
भावबंधन भव भय शूरा भक्त करुणागा सागरा ।
कृत्तिका तारा सितानुसारा तीर्थरूप मनोहरा ।
सह्याद्रीवासा सच्चिदानंदा त्रिशूला सद्रुपा ॥

सद्गुरु भजन

शंकर गुरु जय शंकर गुरु ।
शंकर भगवत्पद शंकर गुरु ।
अपार महिमा शंकर गुरु ।
दया सागर शंकर गुरु ।
गुरुदेव गुरुदेव सद्गुरु नाथ गुरु देव ।

मानस भजरे गुरु चरणं ।
दुश्तर भवसागर तरणम ।
गुरु महाराज गुरु जय जय ।
साई नाथ सद्गुरु जय जय ।

Satsang Bhajans by Meena Aithala
Other Bhajans courtesy various contributors

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com
Last updated February 12, 1999

जय राम रमारमनं शमनं . भव ताप भयाकुल पाहि जनं ..
अवधेस सुरेस रमेस विभो . शरनागत मांगत पाहि प्रभो ..
दससीस विनासन बीस भुजा . कृत दूरि महा महि भूरि रुजा ..
रजनीचर बृंद पतंग रहे . सर पावक तेज प्रचंड दहे ..
महि मंडल मंडन चारुतरं . धृत सायक चाप निषंग बरं ..
मद मोह महा ममता रजनी . तम पुंज दिवाकर तेज अनी ..
मनजात किरात निपात किये . मृग लोग कुभोग सरेन हिये ..
हति नाथ अनाथनि पाहि हरे . विषया बन पांवर भूलि परे ..
बहु रोग बियोगिन्हि लोग हये . भवदंघ्रि निरादर के फल ए ..
भव सिंधु अगाध परे नर ते . पद पंकज प्रेम न जे करते ..
अति दीन मलीन दुःखी नितहीं . जिन्ह कें पद पंकज प्रीत नहीं ..
अवलंब भवंत कथा जिन्ह कें . प्रिय संत अनंत सदा तिन्ह कें ..
नहिं राग न लोभ न मान मदा . तिन्ह कें सम बैभव वा बिपदा ..
एहि ते तव सेवक होत मुदा . मुनि त्यागत जोग भरोस सदा ..
करि प्रेम निरंतर नेम लियें . पद पंकज सेवत शुद्ध हियें ..
सम मानि निरादर आदरही . सब संत सुखी बिचरंति मही ..
मुनि मानस पंकज भृंग भजे . रघुवीर महा रनधीर अजे ..
तव नाम जपामि नमामि हरी . भव रोग महागद मान अरी ..
गुन सील कृपा परमायतनं . प्रनमामि निरंतर श्रीरमनं ..
रघुनंद निकंदय द्वंद्व घनं . महिपाल बिलोकय दीन जनं ..

बार बार बर मागौं हरषि देहु श्रीरंग .
पद सरोज अनपायानी भगति सदा सतसंग ..

हरे रामा, हरे रामा, हरे रामा, हरे हरे;
हरे कृष्णा, हरे कृष्णा, हरे कृष्णा, हरे हरे ।

श्री रामा, जय रामा, जय जय रामा;
श्री रामा, जय रामा, जय जय रामा ।

indif.com

श्री रामा हरे, श्री रामा हरे ,
श्री रामा हरे, सुख:धामा हरे;
श्री रामा हरे, छविधामा हरे,
मन: मोहन सुन्दर श्यामा हरे ।

जय रघुनन्दन:, जय सिया राम,
जानकी-वलल्भ सीता राम;
रघुपति राघव राजा राम,
पतित पावन सीता राम ।

हे राम, हे राम, हे राम, हे राम,
जग मे साचो तेरो नाम। हे राम...

तू ही माता, तू ही पिता है;
तू ही है राधा का श्याम ।

तू अन्तर्यामी, सबका श्वामी;
तेरो चरणों में चारो धाम ।

तू ही बिगाड़े, तू ही सवारे,
इस जग के करे काम ।

तू ही जग दाता, विश्व-विधाता;
तू ही सुबह, तू ही शाम ।

हे राम, हे राम, हे राम, हे राम,
जग मे साचो तेरो नाम। हे राम...

।। तुम्ही हो माता पिता ।।

तुम्ही हो माता पिता तुम्ही हो
तुम्ही हो बंधु सखा तुम्ही हो ।

तुम्ही हो साथी तुम्ही सहारे
कोई ना अपना सिवा तुम्हारे ।
तुम्ही हो नैय्या तुम्ही खेवैय्या
तुम्ही हो बंधु सखा तुम्ही हो ..

जो खिल सके ना वो फूल हम हैं
तुम्हारे चरणों की धूल हम हैं ।
दया की दृष्टि सदा रखना
तुम्ही हो बंधु सखा तुम्ही हो ..

indif.com

जय कृष्ण हरे, जय कृष्ण हरे
दुखियों के दुख दूर करे
जय जय जय कृष्ण हरे

जब चारों तरफ अंधियारा हो
आशा का दूर किनारा हो
जब कोइ न खेवन हारा हो
तब तू ही बेड़ा पार करे
जय जय जय कृष्ण हरे ...

तू चाहे तो सब कुछ कर दे
विष को भी अमृत कर दे
पूरण कर दे उसकी आशा
जो भी तेरा ध्यान धरे
जय जय जय कृष्ण हरे ...

।। पितु मातु सहायक स्वामी ।।

पितु मातु सहायक स्वामी सखा तुम्ही एक नाथ हमारे हो ।
जिनके कुछ आधार नही तिन्ह के तुमही रखवारे हो ।।

सब भांति सदा सुखदायक हो दु:ख दुर्गुण नाशनहारे हो ।
प्रतिपाल करो सिगरे जग को अतिशय करूणा उर धारे हो ।।

भुलिहै हम ही तुमको हमरी सुधि नही बिसारे हो ।
उपकारन को कछु अन्त नहीं छिन ही छिन जो विस्तारे हो ।।

महाराज, महा महिमा तुम्हारी समझे बिरले बुधवारे हो ।
शुभ शांति निकेतन प्रेम निधे मनमंदिर के उजयारे हो ।।

यह जीवन के तुम्ही जीवन हो इन प्राणन के तुम प्यारे हो ।
तुम सो प्रभु पाई प्रताप हरि केहि के अब और सहारे हो ।।

जागो बंसीवारे ललना

जागो बंसीवारे ललना जागो मोरे प्यारे ।।

रजनी बीती भोर भयो है घर घर खुले किवाड़े ।
गोपी दही मथात सुनियत है कंगना की झंकारे ।।

उठो लालजी भोर भयो है सुर नर ठाड़े द्वारे ।
ग्वालबाल सब करत कोलाहल जय जय शब्द उचारे ।।

माखन रोटी हाथ में लीजे गउअन के रखवारे ।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर शरण आया को तारे ।।

।। इतनी शक्ति हमें देना दाता ।।

इतनी शक्ति हमें देना दाता, मनका विश्वास कमजोर हो ना
हम चलें नेक रस्ते पे हमसे भूलकर भी कोई भूल हो ना...

दूर अज्ञान के हों अन्धेरे, तू हमें ज्ञान की रौशनी दे
हर बुराई से बचके रहें हम जितनी भी दे, भली जिन्दगी दे
बैर हो ना किसी का किसी से, भावना मन मे बदले की हो ना..
हम चले...

हम न सोचें हमें क्या मिला है, हम ये सोचें किया क्या है अर्पण
फूल खुशियों के बाटें सभी को सबका जीवन ही बन जाए मधुबन
अपनी करूणा को जब तू बहा दे करदे पावन हर इक मन का कोना...

इतनी शक्ति हमें देना दाता, मनका विश्वास कमजोर हो ना
हम चलें नेक रस्ते पे हमसे भूलकर भी कोई भूल हो ना...

राम कृष्ण हरि

राम कृष्ण हरि मुकमंद मुरारि ।
पांडुरंग पांडुरंग राम कृष्ण हरि ।।

विट्ठल विट्ठल पांडुरंग राम कृष्ण हरि ।
पांडुरंग पांडुरंग राम कृष्ण हरि ।

indif.com

मुकुन्द माधव गोविन्द

मुकुन्द माधव गोविन्द बोल
केशव माधव हरि हरि बोल ।।

हरि हरि बोल हरि हरि बोल ।
कृष्ण कृष्ण बोल कृष्ण कृष्ण बोल ।।

राम राम बोल राम राम बोल ।
शिव शिव बोल शिव शिव बोल ।।

indif.com

वृन्दावन का कृष्ण कन्हैया

वृन्दावन का कृष्ण कन्हैया, सब की आँखों का तारा
मन ही मन क्यों जरे राधिका, मोहन तो है सब का प्यारा
वृन्दाबन का कृष्ण कन्हैया ...

जमुना तट पर नन्द का लाला जब जब रास रचाये रे
तन मन डोले काना ऐसी बंसी मधुर बजाये रे
सुध बुध खोये खड़ी गोपियाँ जाने कैसा जादू डारा
वृन्दावन का कृष्ण कन्हैया ...

रंग सलौना ऐसा जैसे छाई हो घट सावन की
ऐरी मैं तो हुई दीवानी मन मोहन मन भावन की
तेरे कारण देख सांवरे छोड़ दिया मैंने जग सारा
वृन्दावन का कृष्ण कन्हैया ...

भज गोविन्द

भज गोविन्द गोविन्द गोपाला।
श्री कृष्ण कन्हैया मोरे नन्द-लाला।

भज गोविन्द गोविन्द गोपाला।।

मात यशोदा दहीया बलोवे,
माखन खवैया मोरे नन्द-लाला।।

भज गोविन्द गोविन्द गोपाला .....

वृंदा बन की कुंज गलिन में,
बांसरी बजाओ मोरे नन्द-लाला।

भज गोविन्द गोविन्द गोपाला .....

वृंदा बन की कुंज गलिन में,
रास रचाओ मोरे नन्द-लाला।

भज गोविन्द गोविन्द गोपाला .....

यमुना जी के नीरे तीरे,
गवाँ चराओ मोरे नन्द-लाला।

भज गोविन्द गोविन्द गोपाला .....

मीरा के प्रभु गिरधर नागर,
शरण में राखो हमे नन्द-लाला।

भज गोविन्द गोविन्द गोपाला।
श्री कृष्ण कन्हैया मोरे नन्द-लाला।
भज गोविन्द गोविन्द गोपाला।।

सुनरी यशोदा मैया

सुनरी यशोदा मैया, तेरा लाला कन्हैया,
मटकी फोड़ गया, दूध-दही रोड़ गया।

बाज आता नही, शर्म खाता नही,
कोई इस को जरा समझाता नही।
करता-है चोरिया, करे-सीना जोरिया,
काम नेकी का कोई सिखाता नही।
करे बेहाल मैया, तेरा यह लाल मैया,
मटकी फोड़ गया, दूध-दही रोड़ गया।

सुनरी यशोदा मैया, तेरा लाला कन्हैया,
मटकी फोड़ गया, दूध-दही रोड़ गया।

आज पनिया भरन को, मै थी चली,
हाय अचानक, मुरारी ने राह रोक ली।
तोड़ी मटकी मोरी, मरोरी बैहया मोरी,
चल दिया लाल तेरा मै रह गई खड़ी
मैं पकड़ती रही, ओर झगड़ती रही,
मटकी फोड़ गया, दूध-दही रोड़ गया।

सुनरी यशोदा मैया, तेरा लाला कन्हैया,
मटकी फोड़ गया, दूध-दही रोड़ गया।

मै तो हारी मैया, लाख बारी मैया,
मेरी एक ही ना माने मुरारी मैया।
पूछो प्रकाश से, धरती आकाश से,
तगं आई है ब्रज की ये नारी मैया।
इसे समझाओ मैया, राह पे लाओ मैया,
मटकी फोड़ गया, दूध-दही रोड़ गया।

सुनरी यशोदा मैया, तेरा लाला कन्हैया,
मटकी फोड़ गया, दूध-दही रोड़ गया।

जय अम्बे जय जय दुर्गे

जय अम्बे जय जय दुर्गे दयामयी कल्याण करो...

आ जाओ माँ आ जाओ आ कर दरस दिखा जाओ...
जय अम्बे...

कब के द्वार तिहरे ठाड़े मैया मेरी मुझ पर कृपा करो ।
जय अम्बे...

तेरे दरस के प्यासे नैना दरस हमें दिखला जाओ ।
जय अम्बे...

मैय्या है मेरी शेरों वाली

मैय्या है मेरी शेरों वाली
शान है माँ की बड़ी निराली
सच्चा है माँ का दरबार
मैय्या का जवाब नहीं..

उँचे परबत भवन निराला
भवन में देखो सिंह विशाला
सिंह पे है मैया जी सवार
मैय्या का जवाब नहीं..

हाथों में कंगन खन खन खनकें
माथे की बिंदिया चम चम चमके
लाल गले में हार
मैय्या का जवाब नहीं..

मेरी माँ है दुर्गा
माँ है काली
भक्तों की झोली भरने वाली
करती बेड़ा पार
मैय्या का जवाब नहीं..

नंगे पैरों अकबर आया
नाल सोने का छत्र चढाया
दूर किया अंहकार
मैय्या का जवाब नहीं..

कर शेर सवारी आओ माँ

कर शेर सवारी आओ माँ
भक्तो को दर्श दिखाओ माँ
होठों पे फरियाद लिए है
कब से खड़े सवाली
मेहर करो माँ
अब तो भर दो झोली खाली

ऊँचे परबत टेढ़े रस्ते
चढ़ के कठिन चढ़ाई
फूले पाँव के छाले
आके द्वार तेरे महामाई
मुखड़े लाल गुलाब
हो चढ़ गई तेरे नाम की लाली
मेहर करो माँ
अब तो भर दो झोली खाली

कोई तो माफी माँग रहा
कोई मन्नत मांगने आया
भेज के चिठियाँ सबको
माँ तुमने दरबार बुलाया
सबकी किस्मत की चाबी
तेरे हाथों में शेरावाली
मेहर करो माँ
अब तो भर दो झोली खाली

मतलब की इस दुनिया में
स्वार्थ का डंका बाजे
बेबस लाचारों की खातिर
खुले तेरे दरवाजे
काटो इन भक्तों की मईया
अब तो तुम कंगाली
मेहर करो माँ
अब तो भर दो झोली खाली ।

शारदे ओ विशारदे

शारदे ओ विशारदे
दुख विनाशनी शारदे
ज्योति स्वरूपिणि शारदे ।।

ज्योति स्वरूपिणि अम्बे माँ
आत्म स्वरूपिणि अम्बे माँ

दुर्गे माँ...
अम्बे माँ... ।।

तू जाणे महाराणी

तू जाणें, तू जाणें महाराणीं, तेरियां तू जाणें...
तेरियां कीतियां कौन उथले -२
मौजां लेंदें चल बलले -२
भूखे मरन सिआणे, तेरियां तू जाणें...
इकना नूं दए खुले भंडारे -२
इक पए भूखे फिरन विचारे
खान नूं मिलन ना दाने तेरियां तू जाणे...
ब्रह्मा पार बी पा ना सकिया -२
नारद महिमा गा ना सकिआ -२
मनन तेरे भाने, तेरीया तू जाणें...
माया तेरी है महामाई -२
धरती पानी ते उते तराई -२
होन हैरान सिआणें, तेरिया तू जाणें...
विच गुफा दे वास तेरा -२
खाली क्यों मन मंदिर मेरा -२
आ जा किसे बहाणें, तेरियां तू जाणें...

मुझे तेरा ही सहारा

मुझे तेरा ही सहारा, शेरा वाली माँ, हो...
शेरा वाली माँ, मेरी मेहरा वाली माँ
मुझे तेरा ही सहारा, शेरा वाली माँ ।।

जनम-जनम का हूँ मै पापी, धरम करम ना जानू
ज्योति तेरी अमर है जग में, इतना ही पहचानू
तेरा सब से ऊँचा द्वारा, शेरा वाली माँ । हो...
शेरा वाली माँ, मेरी मेहरा वाली माँ
मुझे तेरा ही सहारा.....

मेरे अवगुण माफ करो अब, मै हूं अवगुण हारा
चरण कमल का देखो आसरा, सेवक बन तिहारा
तुझे दिल ने पुकारा, शेरा वाली माँ । हो...
शेरा वाली माँ, मेरी मेहरा वाली माँ
मुझे तेरा ही सहारा.....

माँ बेटे का अमर है नाता, जाने दुनियां सारी
तू ममता की मूरत दाती, मन में छवी तुम्हारी
तूने पापियों को तारा, शेरा वाली माँ । हो...
शेरा वाली माँ, मेरी मेहरा वाली माँ
मुझे तेरा ही सहारा.....

भक्तो को दर्शन दे गई

भगतो को दर्शन दे गई रे, एक छोटी सी कन्या ।
छोटी सी कन्या, इक छोटी सी कन्या ।
भगतो को दर्शन ....

भगतो ने पूछा मईया नाम तेरा क्या है -२
वैष्णो नाम बता गई रे, इक छोटी सी कन्या ।
भगतो को दर्शन ....

भगतो ने पूछा मईया धाम तेरा कहाँ है -२
पर्वत त्रिकूट बता गई रे, इक छोटी सी कन्या ।
भगतो को दर्शन ....

भगतो ने पूछा मईया सवारी तेरी क्या है -२
पीला शेर बता गई रे, इक छोटी सी कन्या ।
भगतो को दर्शन ....

भगतो ने पूछा मईया प्रसाद तेरा क्या है -२
हलवा-पूरी चना बता गई रे, इक छोटी सी कन्या ।
भगतो को दर्शन ....

भगतो ने पूछा मईया श्रृंगार तेरा क्या है -२
चोला लाल बता गई रे, इक छोटी सी कन्या ।
भगतो को दर्शन ....

भगतो ने पूछा मईया शस्त्र तेरा क्या है -२
त्रिशूल चक्र बता गई रे, इक छोटी सी कन्या ।
भगतो को दर्शन ....

भगतो ने पूछा सबसे प्यारा तेरा क्या है -२
भक्तो का प्यार बता गई रे, इक छोटी सी कन्या ।
भगतो को दर्शन ....

तेरा चोला भी लाल

तेरा चोला भी लाल, तेरा चूड़ा भी लाल
तेरा लालो लाल श्रृंगार माँ, दे दर्शन इक बारी ।
माँ, दे दर्शन इक बारी ।

भगत खड़े दर्शन नू, दे दर्शन इक बारी ।
मेरी माँ दे दर्शन इक बारी ।
तेरा चोला भी लाल, तेरा चूड़ा भी लाल ....

अकबर राजे जुल्म कमाया, जीतो पे नीर बहाया ।
जग मग जीत जगे दिन राती, जीतो का रुप सवाया
मेरी माँ, जीतो का रुप सवाया ।
तेरा चोला भी लाल, तेरा चूड़ा भी लाल ....

किन किन मेया तेरा भवन बनाया, किस ने चंवर ढुलाया ।
पंजा पंजा पाँडवा ने भवन बनाया, अर्जुन चंवर ढुलाया
मेरी माँ, अर्जन चंवर ढुलाया ।।
तेरा चोला भी लाल, तेरा चूड़ा भी लाल ....
नंगे नंगे पैरी राजा अकबर आया, सोने का छतर चढाया,
छतर चढा के भुला बक्शा के, चरणी शीश झुकाया.
मेरी माँ चरणी शीश झुकाया ।
तेरा चोला भी लाल, तेरा चूड़ा भी लाल ....

भगत खड़े तेरे दर्शन नू, दे दर्शन इक बारी
मेरी माँ दे दर्शन इक बारी ।
तेरा चोला भी लाल, तेरा चूड़ा भी लाल ....

माँ जय माँ

माँ जय माँ बोलो शेरा वाली माँ
हो-- जो करती है शेर सवारी, इस की छवि है जग में नियारी । माँ --
हो-- भवन मैया का सबसे निराला, दर पे आये करमा वाला । माँ --
हो-- नाम मैया का अमृत धारा, चरणों में बहती गंगा धारा । माँ --
हो-- कान में कुडंल, पावे में पायल, मन को लुभाये माँ तेरा आचल । माँ --
हो-- जो भी आए भवन तुम्हारे, भरती मैया जी उसके भंडारे । माँ --
हो-- जिसका नाम है वैशनव मैया, पार उतारे सबकी नैया । माँ--
हो-- सब करते है इसकी पूजा, इसके सिवाय मुझे भाये न दूजा । माँ --
हो-- जय जय जय वैशनव महारानी, तेरी महिमा जाये न बखानी । माँ --
हो-- अपनी मर्जी नाल आवे, मैया तू ही चिठिया पावे । माँ --
हो-- डिगदे ड़ेड़े ऊठदे बंहदे, ऐयो अपने मूहो कहन्दे । माँ --

सन्त-वाणी

2

सन्त-वाणी

(सन्त सगरामदासजी की साखी)

प्रकाशक

कानसिंह पालावत

ए-4 'करणी-कृपा'

शास्त्रीनगर, जयपुर - 302016,

फोन - 300264

प्रकाशक
ठा. कान सिंह पालावत
ए–4 'करणी–कृपा'
शास्त्रीनगर, जयपुर 302 016
फोन – 300264

प्रथम संस्करण – 2001

मूल्य – प्रेम प्रसाद

कम्प्यूटर टाइप सैटिंग एवं प्रिन्टिंग
सीमा प्रिन्टो फास्ट
416, सूर्या चेम्बर, नेहरू बाजार,
जयपुर, फोन : 310975

ॐ श्री करणी

दो शब्द

**शबदां मार्‌या मर गया, शबदां तजिया राज़।
जिन जिन शबद विवेकिया, वां रा सरिया काज़॥**

शब्द ब्रह्म है, मनीषियों ने बताया है कि विवेक से शब्द ग्रहण करने से ही प्रगति होती है। श्रीरामकृष्ण परमहंस ने कहा है ''अपने मारने को तो नेहरणी (नाखून काटने की) ही बहुत है, तोप तलवार तो दूसरों को मारने को चाहिए।'' इस मार्ग में तो आपे को ही मारना है वह केवल ''मोरे हृदय लागा शबद बाण'' से ही संभव होना है।

संतों ने महापुरुषों ने अपने–अपने ढंग से स्वानुभव की अभिव्यक्ति की है, अपौरुषेय वेदों से लेकर गीता रामायण, गुरुवाणी, साखियों आदि में यही सब कुछ तो है, पर सामान्यतया इनको अध्ययन करने का न तो समय है और ना ही समझ और इसीलिए सरलभाषा में उसी ज्ञान को व्यक्त करने की महत्ता है।

आदरणीय संत सगरामदासजी महाराज ने अपनी सरल राजस्थानी भाषा में इन कुण्डलियों के माध्यम से अनुभव की गागर में सागर उड़ेला है। इनकी प्रामाणिकता इसी से समझी जा सकती है कि आज के युग के परमसंत श्रीरामसुखदासजी महाराज यदाकदा अपने प्रवचनों में इनका उद्धरण करते ही रहते हैं।

श्री कानसिंहजी पालावत का इस अमूल्य ज्ञान-निधि का पुनः मुद्रण एवं निशुल्क वितरण का कार्य सराहनीय है, इससे यह लुप्तप्रायः काव्य जनजीवन में पुनः ज्ञानधारा का संचरण कर सकेगा। इनका यह प्रयास मेरे पूज्य पिताश्री द्वारा इन्हें दिया गया ''कान-सुजान'' नाम सार्थक करता है।

निवेदक
डॉ. करणी सिंह रत्नू

गुरु-महिमा

नमो राम गुरुदेवजी नमो नमो सब सन्त
सगरामदास बंदन करे निसदिन बार अनंत

कुण्डलियाँ

कहे दास सगराम गुरां री महिमा भारी
कीं कर बरणी जाय जीभ धूजे है म्हारी
धूजे म्हारी जीभड़ी सुण सुण जस रा थाट
तोलो[१] किणरो दूं हमें ओ सरगुण रो घाट
ओ सरगुण रो घाट धणी निरगुण औतारी
कहे दास सगराम गुरां री महिमा भारी

(२)

कहे दास सगराम बड़े घर लागी ताली[२]
रामभजन सूं प्रीत कटी पापाँ री जाली
पापां री जाली कटी सतपुरुषाँ रे संग
हिरदो बिगसे कवळ ज्यों आठूँ पहर उमंग
आठूँ पहर उमंग निवाई सतगुरु डाली
कहे दास सगराम बड़े घर लागी ताली

---

१. तोलो = तुलना, २. ताली = सुरता

(३)

रामचरण महाराज री बाणी रा बाखाण
सीतापति रे हाथ रा सगरामदास कहे ब्राण
सगरामदास कहे बाण अनेक असुर संहारे
यां शबदां रे पाण अनेकों अधम उधारे
कहां लग महिमा बरणिये कहत नको परमाण
रामचरण महाराज री बाणी रा बाखाण

(४)

रामचरण महाराज रो कठिन त्याग बैराग
देवी सिंह जगावणों उड़े पलीतां आग
उड़े पलीतां आग धार खांडा की बहणो
काजल का घर मांहि उजळा कपड़ा रहणो
सगरामदास जन राम का लागण दे नहिं दाग
रामचरण महाराज रा कठिन त्याग बैराग

(५)

रामचरण महाराज की मैं बलि बारम्बार
धरती मरती राखदी सगरामदास कहे भार
सगरामदास कहे भार दया रा सागर दाता
घणाँ मिनख महाराज राखिया दोजख[1] जाता
महिमा मेरे श्याम री कही न जावे पार
रामचरण महाराज की मैं बलि बारम्बार

१. दोजख = नरक

चेतावनी

(६)

कहे दास सगराम मनै यो इचरज आवै
मिनख कियो महाराज भलै तू कांई चावै
कांई चावै है भले यूं तो मने बताय
राम नाम कह रात दिन जनम सफल हो जाय
जनम सफल हो जाय बास अमरापुर पावै
कहे दास सगराम मनै यो इचरज आवै

(७)

जनम जनम में करज कियो है माथे क़रड़ो
मिनख कियो महाराज काटदे क्यूं नहीं खरड़ो
यो खरड़ो[1] करड़ो घणो कींकर बणो बणाव
निसबासर[2] सगराम कहै रामधणी ने ध्याव
रामधणी ने ध्याव बाळदे खांवन्द[3] खरड़ो
जनम जनम में करज कियो है माथे करड़ो

(८)

मिनखा तन दीनों थने भोंदू भज रे पीव
बैठ्यो क्यूं सगराम कहे, ऊंडी देने नींव
ऊंडी देने नींव हियो फूटोड़ा गेला
कर आगां ने ठोड़ अठे कुण रेवण देला
लख चोरासी जूण में रुळियो फिरसी जीव
मिनखा तन दीनों थने, भोंदू भज रे पीव

१. खरड़ो = उधार का खत, २. निसबासर = रात-दिन, ३. खावन्द = परमात्मा (मालिक)

(९)

कहे दास सगराम ऊंट मती कर अरड़ाटा
बिना गुन्हा[१] ही डंड लाटतो करड़ा लाटा[२]
करड़ा लाटा लाटतो कयो मानतो नांहि
घणा घणा दुख पावसी जनम जनम के मांहि
जनम-जनम के मांहि करम कीन्हा थैं माठा[३]
कहे दास सगराम ऊंट मती कर अरड़ाटा

(१०)

कहे दास सगराम भजन करता हो दोरा
लख चौरासी जूंण भुगततां हो जो सोरा
सोरा हो जो भुगततां घणी सहोला मार
गधा होवेला ओड रा माथे लदसी भार
माथे लदसी भार रेत रा भर भर बोरा
कहे दास सगराम भजन करता हो दोरा

(११)

कहे दास सगराम राम नै भूलै क्यूं कर
भूल्यां भूंडी[४] बणै माजनो जावै बीखर
बीखर जावै माजनो देय गधा री जूंण
मोरां[५] पड़सी टांकियां ऊपर लदसी लूंण
ऊपर लदसी लूंण चढ़ावै सामो सीक्खर[६]
कहे दास सगराम राम ने भूलै क्यूं कर

१. गुन्हा = अपराध, २. लाटा = खळा (खलियान), ३. माठा = मन्द,
४. भूंडी = बुरी, ५. मोरां = पीठ, ६. सीक्खर = शिखर-चोटी

(१२)

कहे दास सगराम करमगति जाय न जाणी
परणी सोला सहस गबीजे राधा राणी
राधा राणी गबीजे सीता ने बनवास
सकल भजन रा ईश ने कियो डूम रो दास
कियो डूम रो दास नीच घर भरियो पाणी
कहे दास सगराम करमगति जाय न जाणी

(१३)

कहे दास सगराम सुनो हो सज्जन भ्राता
दूजा कैतिक बात बड़ा दुःख दीठा माता
माता दुःख दीठा जिके सुण्या न जावे कान
बेटी राजा जनक की पति जिनके भगवान
पति जिसके भगवान आप रिधसिध की दाता
कहे दास सगराम सुनो हो सज्जन भ्राता

(१४)

कहे दास सगराम सुनो सज्जन हितकारी
कर सुक्रत भज राम पनोती[१] आई भारी
भारी आई पनोती अब जूण[२] चोरासी लाख
धन धरियो रह जावसी तन होय जासी खाख
तन होय जासी खाख पछै तूं जाणे थारी
कहे दास सगराम सुनो सज्जन हितकारी

१. पनोती = आदेश, २. जूण = योनि

(१५)

धनवंत धरम जु ना करे नरपति करे न न्याय
भजन करे नहीं भगत होय कीजे कौन उपाय
कीजे कौन उपाय सला इक सुनो हमारी
दो बहती रे पूर नदी आवे जद भारी
जाय गडिंदा खावता धरती टिके न पाय
धनवंत धरम जु ना करे नरपति करे न न्याय

(१६)

सुन सज्जन सगराम कहे या बड़े संत की बात
भाल तिलक कंठी गळै लोटो गरणो[1] हाथ
लोटो गरणो हाथ सकल जीवां हितकारी
परधन धूळ समान बहन बेटी परनारी
रसना हालै रात दिन ज्यूं पीपल को पात
सुन सज्जन सगराम कहे या बड़े संत की बात

(१७)

सुन सज्जन सगराम कहे भया स्याम सूं सेत
हाड नखाणा बारणै चेत सके तो चेत
चेत सके तो चेत हरिजन मारै हेला
कर आगां ने ठोर अठै कुण रेवण देला
बड़े ठिकाणे बास दे कर खांवद सूं हेत
सुन सज्जन सगराम कहे भया स्याम सूं सेत

१. गरणो = गमछो

(१८)

सुन सज्जन सगराम कहे तूं रामद्वारे जाय
मून पकड़ महाराज रो ध्यान धरो चितलाय
ध्यान धरो चितलाय जनां[1] रा दरसण कीजे
कथा श्रवणकर मींत सींत चरणामृत लीजे
कर जोड़ करुणा करो पद रज शीश चढ़ाय
सुन सज्जन सगराम कहै तूं रामद्वारे जाय

(१९)

बायां ने सगराम कहे या राम भजन री ठौड़
रामद्वारे आयने मत करो निकम्मी झोड़[2]
मत करो निकम्मी झोड़ झोड़ में टोटो भारी
हीरां रो व्यापार छोड़ मत विणजो खारी
राम भजन रे कारणै आई घरां सूं दौड़
बायां ने सगराम कहे या राम भजन री ठौड़

(२०)

करणी नै करतूत रो कयां न आवे पार
सगरामदास कहे मैं सुणी या सारां में सार
या सारां में सार छाण ने पीजे पानी
गाढ़ो गरणो राख रहै जल में जीवानी
टोपोई ढोळै नहीं धरती बिना विचार
करणी नै करतूत रो कयां न आवे पार

१. जनां = हरिजन, २. झोड़ = वाद-विवाद

(२१)

खट सासां की एक पल घड़ी एक पल साठ
साठ घड़ीका एक पहर व्है सगरामदास कहे आठ
सगरामदास कहे आठ सांस सौ बरसां तांई
भया अठत्तर क्रोड़ लाख चोतीस घटाई
राम भजन बिन खो दिया अकल बिहुणी टाट
खट[१] सासां की एक पल घड़ी एक पल साठ

(२२)

असी बरस की आयु में सोवत गई चालीस
बारह बालापण गई बाकी आठ रु बीस
बाकी आठ रु बीस पछाड़ी बारह बूढ़ो
सोला में सगराम त्रिया ने भावे रूढ़ो
ताते भजिये रामकूं संत चरण धर शीश
अस्सी बरस की आयु में सोवत गई चालीस

(२३)

सती नार सूरा जणे बड़ भागण दातार
भगतिवान लक्ष्मी जणे या सारां में सार
या सारां में सार एक पापाँ री पूरी
लंपट और जुआर जणै गलकट[२] गढ़सूरी[३]
सगरामदास सांची कहै यामें फेर न सार
सती नार सूरा जणे बड़ भागण दातार

१. खट = छै, २. गलकट = कसाई, ३. गढ़सूरी = सूरड़ी

(२४)

मीरा जनमी मेड़ते परणाई चित्तौड़
राम भजन परताप सूं सकल सिस्ट सिरमौड़
सकल सिस्ट[१] सिरमौड़ जगत में सारे जाणी
आगे भई अनेक फेर बायां ने राणी
ज्यांरी तो सगराम कहे ठीक न कोई ठौर
मीरा जनमी मेड़ते परणाई चित्तौड़

(२५)

हरिचन्द सत्त सगराम कहे करड़ो घणो नीराट
कठिन हियाको सांभळै छाती बजर कपाट[२]
छाती बजर कपाट भूप दुःख दीठा भारी
धरड़ियो[३] आकाश लगी धर धूजण सारी
सूरज वंश उजाळियो महिपति मोटै पाट
हरिचन्द सत्त सगराम कहे करड़ो घणो नीराट

(२६)

नर बानर सगराम कहे दोनूं एकण भाय
यो माया में मगन है वो खुशी गूलराँ खाय
वो खुशी गूलराँ खाय अभागे अनरथ कीन्हो
इण उजाड़ दियो बाग उणे हरीराम न लीन्हों
पूंछ नहीं या कसर है देखो दिल निरताय
नर बानर सगराम कहे दोनूं एकण भाय

१. सिस्ट = संसार, २. कपाट = किंवाड, ३. धरड़ियो = फट गया

(२७)

राम भजन बिन नर पशु खोड़ीला[१] री खाण
बाके सींग रु पूंछ है ये बांडा मोडा जाण
ये बांडा मोडा जाण घणा रुळियार[२] कहावै
घणी सहेला मार धान खड भोळै खावै
सांच कही सगराम थे साहिबजी री आंण
राम भजन बिन नर पशु खोड़ीला री खाण

(२८)

बाळूं या रसना परी कदे न सुमरे राम
सगरामदास किण काम रो मुख में आलो चाम
मुख में आलो चाम काढ़ नाखो ने दूरी
स्वाद बाद बकवाद कपट करवा ने सूरी
पकड़ी रहै न पापणी निकसी बकै निकाम
बाळूं या रसना परी कदे न सुमरे राम

(२९)

कहे दास सगराम सुणो सज्जन बड़भागी
गुरु कीजे भजनीक कनक कामण रो त्यागी
त्यागी कन्नक कामणी जिके जनम मरण दे खोय
फिरे जगत में जाचता[३] वासूं भलो न होय
वासूं भलो न होय लगन माया सूं लागी
कहे दास सगराम सुणों सज्जन बड़ भागी

१. खोड़ीला = कुटिल, २. रुळियार = आचरणहीन, ३. जाचता = भीख मांगता

(३०)

सुण साहजी सगराम कहे है वो को वोही सेर
लेतां देतां पार को क्यूं कर कीयो फेर
क्यूं कर कियो फेर कसर राखी नहीं कांई
तोबा[१] बार हजार इसी तूं करै कमाई
साहिब लेखो बूझसी जद ऊंधो देसी टेर[२]
सुण साहजी सगराम कहे है वो को वोही सेर

(३१)

सुण हाकम सगराम कहे तू अंधो मति हो यार
औरां के दोय अंखियां थारै चाहिजे च्यार
थारे चाहिजे च्यार दोय देखण ने बारै
दोय हिया रे मांहि जिका सूं न्याय निहारे
जस अपजस रहसी अठै समय पाय दिन चार
सुण हाकम सगराम कहे तूं अंधो मति हो यार

(३२)

साहिब के चौथे बरण छोटो बेटो जाण
हाथ लगे वै काम रै तो सारा करै बखाण
तो सारा करै बखाण पिता ने लागै प्यारो
मोटो करै न काम कूट ने कर दे न्यारो
ताते छोटा होय रहो मोटे पणा में हांण
साहिब कै चोथो बरण छोटो बेटो जांण

१. तोबा = धिक्कार, २. टेर = लटकाना

(३३)

बेगम गावै गालियां कर कर मन में कोड
बूढ़ी हुई बेसरमणी अब तो ममता छोड
अब तो ममता छोड़ घणी कूदी अरु नाची
कहै दास सगराम हमें तो लैनी पाछी
मरणो आयो शीश पर जम कूटे ला भोड[१]
बेगम गावै गालियां कर कर मन में कोड

(३४)

रोवण ने राजी घणी रांडोल्यां के साथ
के गीतां कै गालियां कै घर घर की बात
कै घर घर की बात जमारो इण विद जासी
सांई रे दरबार आपणा कीया पासी
सगराम कहे इणीरीत सूं कदे नहीं कुशलात
रोवण ने राजी घणी, रांडोल्यां के साथ

(३५)

कहे दास सगराम घणो बाजे है जाडो
आसण ओलै करो गुदड़ो ओढो गाडो
गाडो ओढो गुदड़ो लाग जायला ठाड[२]
खोटी होस्यो भजन सूं इणरो योही लाड
इणरो यो ही लाड पड़ेला भारी खाडो
कहे दास सगराम घणो बाजै है जाडो

१. भोड = सिर, २. ठाड = ठण्ड

(३६)

कहे दास सगराम धणी सुण रे माया रा
कर सुकृत भज राम भला दिन आया थारा
आया थारा दिन भला चूक मति या बार
धन धरिया रह जावसी तन होय जासी छार[१]
तन होय जासी छार धोय कर बहती धारा
कहे दास सगराम धणी सुण रे माया रा

(३७)

कहे दास सगराम सुणो धन री धणियाणी
कर सुकृत भज राम धोय कर बहते पाणी
बहते पाणी धोय कर कृपा करी महाराज
कारज करले जीव को कियो जाए तो आज
कियो जाय तो आज काल री जाय न जाणी
कहे दास सगराम सुणो धन री धणियाणी

(३८)

कहे दास सगराम सुणो माया मद माता
क्यूं देख देख होय खुशी ढेढ़णी ज्यूं पग राता[२]
ये राता कितना दिनां यूं तो मने बताय
सदा सुखी जो चाहिए गुण गोविन्द रा गाय
गुण गोविन्द रा गाय मिनख तन दीनों दाता
कहे दास सगराम सुणो माया मद माता

१. छार = राख, २. राता = लाल

(३९)

कहे दास सगराम सांच सांई ने भावे
देखो दिल निरताय[१] जाट तेजा ने गावे
गावे तेजा जाट ने दियो देवता थाप
पूजे सिरजनहार ने तो गुन्हा करे सब माफ
गुन्हा करे सब माफ बास अमरापुर पावे
कहे दास सगराम सांच सांई ने भावे

(४०)

कही सुणी साखी घणी आठ पहर दिन रात
बिणज मोकळो[२] ही कियो नफो न लगो हाथ
नफो न लागो हाथ बीत गई ऊपर सारी
भज्यो न सिरजणहार करी थे भोलप भारी
ज्ञान बिना गाफिल[३] रहो किण आगे कहूँ बात
कही सुणी साखी घणी आठ पहर दिन रात

(४१)

बड़ो मिनख बाजे थनैं क्यूं ही कयो ना जाय
कियो जापता वास्ते तूं खोस खोस नै खाय
खोस खोस ने खाय जवाब देणो है मरनै
आयो है किण काम जायलो कांई करनै
धरमराज सूं है धको[४] बीतेली किण भाय
बड़ो मिनख बाजे थनैं क्यूं ही कयो न जाय

१. निरताय = नीतिपरायण, २. मोकळो = प्रचुर, ३. गाफिल = अचेत, ४. धको = सामना

(४२)

असल फकीरां की सुणो सगरामदास कहे बात
ओढण फाटो गूदड़ो, धरे ध्यान दिन रात
धरे ध्यान दिन रात जठै कोई जाणे नाहीं
टुकड़ा पावे मांग गांव गेला ज्यूं जाही
दूर दूर दुनियां करे खांडी हांडी हाथ
असल फकीरां की सुणो सगरामदास कहे बात

(४३)

बड़ा साध जांकी सुणो सगरामदास कहे बात
राम गरीबनिवाज को धरे ध्यान दिन रात
धरै ध्यान दिन रात सकल जींवा हितकारी
कंचन खाक समान पुरुष सम जाणे नारी
लेस्यां वांरा वारणा कर कर लांबा हाथ
बड़ा साध जांकी सुणों सगरामदास कहे बात

(४४)

साध बैर बांधे नहीं सब जीवां हितकार
यां री तो जरणी[१] जबर बोवै[२] काली धार
बोवै काली धार जनां सूं जोर न कीजै
बन आवै तो टहल[३] नहीं तो अळगा[४] रहिजे
यांरे है सगराम कहे पूठे सबळी बार
साध बैर बांधे नहीं सब जीवां हितकार

१. जरणी = साधना, २. बोवै = डुबाना, ३, टहल = सेवा, ४. अळगा = दूर

(४५)

भोले ही कीजे मती मन तन रो विश्वास
पाव घड़ी में निकलसी नहीं उबरेला स्वास
नहीं उबरेला स्वास भरोसे इण रो काचो
कहै दास सगराम बळै के बळै न पाछो
रामराम कहे रात दिन जब लग घट में श्वास
भोले ही कीजे मती मन तन रो विश्वास

(४६)

सहज बात में होय भलो भोले ही मत जांण
रामराम कहै रात दिन कर काया कुरबाण
कर काया कुरबाण सुणो सज्जन हितकारी
कींकर किया जाय काम ये दोनूं भारी
रामदया सतगुरु दया अरु परालब्ध के पांण
सहज बात में होय भलो भोले ही मत जांण

(४७)

जगत सरब में जस लियो भज्यो न सिरजणहार
हो सूरो सगराम कहे मुवो गधारी बार
मुवो गधारी बार कबीलो[1] सब पछतायो
लेता खांवन्द खबर धणी के अरथ न आयो
ए कांई देसी बापड़ा धोबी और कुम्हार
जगत सरब में जस लियो भज्यो न सिरजणहार

१. कबीलो = परिवार

(४८)

कह कह थाको[1] थने हाय मन हाय कुपातर
भजन कोय नहीं करै भगत हुयो किण खातर
किण खातर हुयो भगत यूं तो मने बताय
पंगों पड़े है गृहस्थी तूं माल मुलक रा खाय
तूं माल मुलक रा खाय मुवो आछो इण नातर
कह कह थाको थने हाय मन हाय कुपातर

(४९)

कहे दास सगराम अकल थां में ही भारी
पण भज्यो न सिरजनहार पड़ी पाणी में सारी
पाणीं में सारी पड़ी लारे रही न एक
ऊणे कूणे रह गई है व्है तो कांईक देख
व्है तो कांईक देख फेरदी उपर बुहारी
कहे दास सगराम अकल थां में ही भारी

(५०)

कहे दास सगराम सुणो सारा ही लोकां
मिनखा तन महाराज दियो है कितरा थोकां
कितरा थोकां सूं दियो यूं तो करो विचार
लख चौरासी भुगततां बीता है जुग चार
बीता है जुग चार भजनरी दो नी सोकां[2]
कहे दास सगराम सुणो सारा ही लोकां

१. थाको = हार गया, २. सोकां = सोकरड़ा (निरन्तर माला जाप)

(५१)

या तो आगे ही घणी, सगरामदास कहे लाय
बलती में पूलो बलै सरगुण सबद सुणाय
सरगुण सबद सुणाय सुणो सज्जन हितकारी
तूं जाणे है नफो पड़े है टोटो भारी
भजन कियो जावै नहीं तो सरगुण पद संभलाय
या तो आगे ही घणी सगराम दास कहे लाय

(५२)

कहे दास सगराम सुणो सज्जन हितकारी
अवतारां रा चरित सुण्या सूं लागे न कारी
ए औतार घणा हुआ करणो हो तो काज
सुमरो सिरजनहार ने पैदास कियां री लाज
पैदास कियां री लाज रची जिन रचना सारी
कहे दास सगराम सुणो सज्जन हितकारी

(५३)

कहे दास सगराम हाथ में हीरा आया
मिनख जनम रा मोल घाल गोफन में बाया
बाय दिया बेसूर[1] जब लारे रयोज एक
पारख पड़ियो रोइयो गोडां माथो टेक
गोडां माथो टेक इसा मैं घणाँ गमाया
कहे दास सगराम हाथ में हीरा आया

१. बेसूर = अविवेकी

13

(५४)

मिनखा तन हरि भजनरो सगरामदास कहे साज
राम राम कहै रात दिन तो चावै जेड़ो काज
तो चावै जेड़ो काज मुकति मांगे तो त्यारी
दे मोटो महाराज रची जिन रचना सारी
बलिहारी इण नाम री एडो सारे काज
मिनखां तन हरि भजन रो सगरामदास कहे साज

(५५)

कहे दास सगराम इसी थां मौजां माणी
करण[1] कहूँ के भोज[2] थने लाखो फूलाणी
लाखा फूलाणी[3] बिचे थारी भारी बात
वे अधिकारी सगराम तूं धरे ध्यान दिनरात
तूं धरे ध्यान दिन रात अभय पद पासी प्राणी
कहे दास सगराम इसी थां मौजां मांणी

(५६)

धरम करे नहीं धन छतां भजै न सिरजनहार
ज्यांने तो सगराम कहे बार बार धिक्कार
बार बार धिक्कार रांड गेली रा जाया
बळजासी या देह धरी रह जासी माया
कद आसी पाछो भलै यो अवसर या बार
धरम करे नहीं धन छतां भजै न सिरजनहार

१. करण = दानवीर कर्ण, २. भोज = राजा भोज, ३. लाखो फूलाणी = महादानी लाखा फूलाणी

(५७)

कहे दास सगराम समैं मिनखा तन थारी
बड़ा भाग रा धणी जिकां ने लागै प्यारी
प्यारी लागे जिकां ने भजन करे दिन रात
राम गरीबनिवाज रो और न दूजी बात
और न दूजी बात अभैपद[1] रा अधिकारी
कहे दास सगराम समैं मिनखा तन थारी

(५८)

कहे दास सगराम मूढ मिनखा तन पायो
भज्यो न सिरजणहार कमायो सोयो खायो
खायो ने सोयो पशू कियो विषय सूं प्यार
आयो चौरासी भुगतने फिर जावण ने त्यार
फिर जावण ने त्यार रांड गेली रो जायो
कहे दास सगराम मूढ मिनखा तन पायो

(५९)

कहे दास सगराम सुणो सब ही नर नारी
यो सुख दिन कितराक आगली मजल करारी
मजल करारी आगली भजन बिना जग चार
लख चौरासी जूण में दुख को वार न पार
दुख को वार न पार भुगततां होयला भारी
कहे दास सगराम सुणो सब ही नरनारी

१. अभैपद = परमपद

(६०)

तन रो सुख सगराम कहे गवर[1] तणों सिंणगार
दिन दस लाड लडाय के बोवे ऊँडी धार
बोवे ऊँडी धार मार जमद्वारे खावे
राम भजन परताप बास अमरापुर पावै
बड़ा भाग ज्यांरा जिकै ऐसो करे विचार
तनरो सुख सगराम कहे गवर तणों सिंणगार

(६१)

कहे दास सगराम बड़ा थां बड़ी विचारी
पर धन धूल समान बहन बेटी परनारी
परनारी बेटी गिणो सब जीवां हितकार
न्याय करो नेकी लियां सुमरो सिरजणहार
सुमरो सिरजणहार मुकति का थे अधिकारी
कहे दास सगराम बड़ा थां बड़ी विचारी

(६२)

कहे दास सगराम गरीबी में गुण भारी
राम गरीबनिवाज जहाँ[2] जानत है सारी
जाणे है सारी जहाँ पण राखी किण सूं जाय
बेरणियां आडी फिरै मान बड़ाई खाय
मान बड़ाई खाय करे कुण यांने न्यारी
कहे दास सगराम गरीबी में गुण भारी

१. गवर = गणगौर, २. जहाँ = संसार

(६३)

कहे दास सगराम गृहस्थी सुण रे भाई
भलो करे है भजन फते घर बैठां पाई
घर बैठां पाई फते[१] करी कमाई आय
दुरबल री देखे दया सत संगति में जाय
सत संगति में जाय करी थां भलमनसाई
कहे दास सगराम गृहस्थी सुण रे भाई

(६४)

कहे दास सगराम मिनख ए देखो मोटा
पड़सी नरक अघोर जमां रा खासी सोटा
सोटा खासी जमां रा साहिब रे दरबार
जीव हते परधन मुसे तकै पराई नार
तकै पराई नार करे है करम जु खोटा
कहे दास सगराम मिनख ए देखो मोटा

(६५)

कहे दास सगराम साध रे परवा कांई
छाजन भोजन नीर घणो हरि इच्छा मांही
यो हरि इच्छा में घणो और न दूजी बात
राम राम कह रात दिन जनम सफल होय जात
जनम सफल होय जात मिले सुख सागर मांई
कहे दास सगराम साध रे परवा कांई

१. फते = विजय

15

(६६)

सुख देखे ज्यां पुन कियो दुख देखे ज्यां पाप
भुगतै है अपनो कियो सगरामदास कहे आप
सगरामदास कहे आप कुजस जस किणने भाई
फेर करे है जिसा भले आगे भरपाई
दाता रे दरबार में होय न्याय इनसाफ
सुख देखे ज्यां पुन किया दुख देखे ज्यां पाप

(६७)

कहे दास सगराम अवध आई डोकरड़ा
जेज[१] नहीं है हमें भजन रा दे सोकरड़ा
दे सोकरड़ा भजन रा आठ पहर दिन रात
खांवन्द निमत लगाय ले है कुछ थारे हाथ
है कुछ थारे हाथ रया दिन बाकी थोड़ा
कहे दास सगराम अवध आई डोकरड़ा

(६८)

कहे दास सगराम रया दिन बाकी थोड़ा
कर सुकृत भज राम दरगड़े घालो घोड़ा
घोड़ा घालो दरगड़े जद पूगोला ठेट
बिचलै बासै रह गया तो पड़सो किणरे पेट
पड़सो किणरे पेट पड़ेला भारी फोड़ा[२]
कहे दास सगराम रया दिन बाकी थोड़ा

१. जेज = देर, २. फोड़ा = कष्ट

(६९)

सगरामा स्वांगी करे सतपुरुषां री होड़
वे हंसा महराण[1] का थे डूंगर का टोड[2]
थे डूंगर का टोड मैल माया गटकावो
वे चुगै नाम मोताळ[3] दान सूं नांही दावो
होड करो हूस्यां मरो दो कनक कामनी छोड़
सगरामा स्वांगी करे सतपुरुषा री होड़

(७०)

कहे दास सगराम सुणो सज्जन हितकारी
प्यारा लागे घणां म्हाने तो नाम लिहारी
नाम लिहारी ऊपरें हूँ बलि बारम्बार
भावै जैड़ी जात होय पण कारण नहीं लिगार[4]
कारण नहीं लिगार पुरुष भल होवो नारी
कहे दास सगराम सुणो सज्जन हितकारी

(७१)

धन वे जन संसार में ज्यां दिया सकल सुख छोड़
धरे ध्यान महाराज रो कर कर मन में कोड़
कर कर मन में कोड़ जाण या बड़ी कमाई
कै नारायण मांहि नहीं तो नर तन पाई
ऐसी जागां जनमसी जहाँ करे न कोई होड़
धन वे जनसंसार में ज्यां दिया सकल सुख छोड़

१. महराण = सागर, २. टोड = कौआ, ३. मोताळ = मोती, ४. लिगार = लेशमात्र

(७२)

कहे दास सगराम हमें तूं हूवो पुगतो
किया मोकळा काम राख खांवंद रो नुगतो[1]
नुगतो राख दयाल रो घणा किया है पाप
राम राम कह रात दिन गुन्हा[2] करे सब माफ
गुन्हा करे सब माफ जीव ने चावे सुखतो
कहे दास सगराम हमें तूं हूवो पुगतो

(७३)

कहे दास सगराम गजब मति कर रे गेला
खाय पराया माल बळद होय होय ने देला
होय होय ने देला बळद घणी सहेला मार
टूटै कांधे खांचसी भूखां मरतो भार
भूखां मरतो भार थने हूँ कहदूं पहलां
कहे दास सगराम गजब मति कर रे गेला

(७४)

भेष भरोसे रह मती सुन रे मनवा मोर
वो कदेही नहीं टले सगरामदास कहे चोर
सगरामदास कहे चोर बांध लेजासी पोटां
पहली कहूँ थनै जीभ फेरेलो होटां
रामराम कह रात दिन जम रो लगे न जोर
भेष भरोसे रह मती सुनरे मनवा मोर

१. नुगतो = आश्रम, २. गुन्हा = अपराध

(७५)

संसारी रा टूकड़ा नव नव आंगुल दांत
सीरा लाडू लापसी खावे कर कर खांत
खावै कर कर खांत जिकण रो कांई केला
करो भजन दिनरात धणी आपइ भर देला
यों तो म्हासूं व्है नहीं तो जम काढैला आंत
संसारी रा टूकड़ा नव नव आंगुल दांत

(७६)

नर तन दीनो रामजी सतगुरु दीनो ज्ञान
ए घोड़ा हांको हमें ओ आयो मैदान
ओ आयो मैदान आकरी बाग सजावो
धरो धणी रो ध्यान मिनख तन रो लो लावो[१]
कुण करसी सगराम कहे आंख्या आडा कान
नर तन दीनो रामजी सतगुरु दीनो ज्ञान

(७७)

कहे दास सगराम इसा जन जीवन मुकता
दयावंत दिल पाक[२] सकल जीवां सु लघुता
लघुताई राखे घणी भजन करे दिन रात
लेस्यां बांरा बारणा कर कर लम्बा हाथ
कर कर लम्बा हाथ घणा वे हुइज्यो पुगता
कहे दास सगराम इसा जन जीवन मुकता

१. लावो = लाभ, २. पाक = पवित्र

(७८)

लागो है हरि नाम सूं जां पुरुषां रो प्यार
अनजल लेतां देर होय कै नींद घड़ी दो चार
कै नींद घड़ी दो चार जिकी भी लागै खारी
तनरो भाड़ो जाण दिया बिन लगै न कारी
यूं जाणे आसी कदै यो ओसर या बार
लागो है हरि नाम सूं जां पुरुषां रो प्यार

(७९)

कहे दास सगराम डोकरा भली विचारी
पूरबलो आंकूर उदै अब भयो है भारी
भारी उदै यो भयो भजलो सिरजणहार
खांवन्द बूठो पाछलो करसी जै जै कार
करसी जै जै कार नाम की नेपै[१] भारी
कहे दास सगराम डोकरा भली विचारी

(८०)

क्यूं करा मोत रो सोच किया सतगुरु अनुरागी
कहै दास सगराम मुवां के मौजां लागी
मौजां लागी मुवां कै रहस्यां खावन्द द्वार
कसर रही होयतो भले मिनख जमारो त्यार
मिनख जमारो त्यार बड़ा होस्यां बैरागी
क्यों करां मोत रो सोच किया सतगुरु अनुरागी

१. नेपै = उपज

(८१)

कहे दास सगराम भजन कर रे मन मोडा
बातां में बेकूफ काढसी कांई डोडा
डोडा कांई काढसी यूं तो मनै बताय
पड़सी पापी नरक में मार जमां री खाय
मार जमां री खाय कूटसी थारा गोडा
कहे दास सगराम भजन कर रे मन मोडा

(८२)

कहे दास सगराम हमें तो चेतो बीरा
भूखां मरता मरो कमर में लटके लीरा
लीरा लटके कमर में चेत हमें तो चेत
आधो परधो उबरे चिड़ियां खायो खेत
चिड़ियां खायो खेत गाय गुण साहिब जी रा
कहे दास सगराम हमें तो चेतो बीरा

(८३)

दिनरा बातां बस कियो रात पड्यां सूं नींद
राम भजन कैसे करे दोय बहू रो बींद
दोय बहूरो बींद पकड़ बैठो है गाडी
धणी बूझसी ज्वाब[1] जदे ए फिरे न आडी
सुण भाई सगराम कहे (थारी) अकल गई आकींद
दिनरां बातां बस कियो रात पड्यां सूं नींद

१. ज्वाब = जवाब

18

(८४)

नींद पईसा पांचरी लाख मोहर की रात
भजन बिना खोई सखी पति सूं करी न बात
पति सूं करी न बात कौन गति व्हैला थारी
देसी खाविंद दुहाग भुगतणां व्हैला भारी
कद पाछो आसी भले मिनख जमारो हाथ
नींद पईसा पांचरी लाख मोहर री रात

(८५)

कहे दास सगराम जिते साजी है जिंदड़ी[1]
करो भजन दिनरात काच री है या सिंदड़ी[2]
सिंदड़ी है या काच री बिनसत लगे न बार
लीज्यो लियो जाय तो लावो है दिन चार
लावो है दिन चार छूट जासी या सिंदड़ी
कहे दास सगराम जिते साजी है जिंदड़ी

(८६)

माया जोबन राजमद बोवे काली धार
जिण रे ए तीनों हुवै कोई न पड़ियो पार
कोई न पड़ियो पार जिकण रो कांई कीजे
राम भजन सतसंग दया दुरबल री लीजे
न्याव करे नेकी लियां सुमरे सिरजणहार
माया जोबन राजमद बोवे काली धार

१. जिंदड़ी = जीवन, २. सिंदड़ी = काया

जमारो = चोरी

(८७)

तीरथ धरती ऊपरे है गुणचास करोड़
ब्रह्मा रा कीया भले गिण्या न आवे ओड़
गिण्या न आवे ओड़ गिने जो न्यारा न्यारा
कहे दास सगराम कराया सतगुरु सारा
राम भजन परताप सूं बैठां एकण ठोड़
तीरथ धरती ऊपरे हैं गुणचास किरोड़

(८८)

कहे दास सगराम करे क्यूं करुणा थोथी
खावंद होसी खुशी भजन री कियां भरोती
कियां भरोती भजन री राम राम कहै राम
दियां छूठवो होवसी बड़े राजरा दाम
बड़े राजरा दाम कौल[1] थे कीयो मोती[2]
कहे दास सगराम करे क्यूं करुणा थोथी

(८९)

कहे दास सगराम भजन री भुरकी भारी
न्हांखे सन्त सुजाण जिकां ऊपर मैं वारी
मैं वारी वां ऊपरे भरम करम दे मेट
चौरासी रा जीव ने मुकति मेल दे ठेट
मुकति मेल दे ठेट जिकां री मैं बलिहारी
कहे दास सगराम भजन री भुरकी भारी

१. कौल = वचन, २. मोती = एक पटु शिष्य का नाम

19

(९०)

सुणरे मन सगराम कहे इती रीस मत राख
मिनखा जनम बिगाड़सी हतियारण हकनाक[1]
हतियारण हकनाक कयो जो माने म्हारो
कर चरणां सूं प्रीत भलो होय जासी थारो
सोभा होवसी जगत में दिल होय जासी पाक
सुणरे मन सगराम कहे इती रीस मत राख

(९१)

क्यूं मूंजी मतिहीन भरे माया सूं मटको
पच पच ने तू पचे संग नहीं चाले बटको[2]
बटको संग चाले नहीं अकल बिहूणा ढोर
राम भजन सुकृत बिना पड़सी नरक अघोर
पड़सी नरक अघोर काढ़सी कांई गटको
क्यूं मूंजी मतिहीन भरे माया सूं मटको

(९२)

जीवां रो जोहर करे परभाते ही जाय
कांई है इण में नफो यूं तो म्हने बताय
यूं तो म्हने बताय पड़े है भारी टोटो
गाढ़ो गरणो राख बेवड़ो चोखो लोटो
चतुराई सूं छाण ने सगराम दास कहे न्हाय
जीवां रो जोहर करे परभाते ही जाय

१. हकनाक = व्यर्थ, २. बटको = टुकड़ा

(९३)

अणगल पानी में पड़े परभाते ही जाय
मारे जीव असंखिया पछै रोटियां खाय
पछै रोटियां खाय कुबद या किणी सिखाई
नव लख जीवां बैर पड़े है सुण रे भाई
बाबो लेखो बूझसी तब भुगतेला किण भाय
अणगल पाणी में पड़े परभाते ही जाय

(९४)

बाकरियो बो बो करे करे हिरणियों डाड
भेडां भोंभाड़ा करे नहीं किणी रे गाड
नहीं किणी रे गाड बड़ा पापी हतियारा
कीकर बैवै हाथ गरीबां ऊपर थारा
बुझेलो बाबो थने दे माथे में फाड़
बाकरियो बो बो करे करे हिरणियों डाड

(९५)

कहे शासतर सन्त अधम भारी सूं भारी
प्राणघात करि भखैं तके परधन परनारी
परधन परनारी तके बजर[१] पाप ए जाण
पड़सी नरक अघोर में जब लग शशि अरु भांण[२]
जबलग शशि अरु भांण सुनो सब ही नर नारी
कहे शासतर सन्त अधम भारी सूं भारी

१. बजर = भयंकर, २. भांण = सूर्य

20

रामनाम-महिमा

(९६)

कहे दास सगराम राम रस करलो गटका
मत चूको या समै चार दिन का है चटका
ये चटका चूक्यां पछे मिले न दूजी बार
लख चौरासी जूण में दुख को वार न पार
दु:ख को वार न पार घणा मारोला भटका
कहे दास सगराम राम रस का लो गटका

(९७)

कहे दास सगराम मार मत रे मन भटका
मिनख कियो महाराज रामरस का ले गटका
गटका ले नी रात दिन ज्ञान गोखड़े[१] बैठ
इण जेड़ो दूजो नहीं सगरामदास कहे पैठ
सगरामदास कहे पैठ आय दिन दीयां चटका
कहे दास सगराम मार मत रे मन भटका

(९८)

कहे दास सगराम मार मति भटका बारे
मिनख कियो महाराज मुगति मूंडा में थारे
मूंडा में थारे मुगति राम राम कह राम
जोग जिग[२] तीरथ बरत इण में चारूं धाम
इण में चारूं धाम फौज जूं राजा लारे
कहे दास सगराम मार मति भटका बारे

१. गोखड़े = गवाक्ष, २. जिग = यज्ञ

(९९)

मिनख मिनख सब सारिखा जाणे लोग गंवार
पापी पशू समान है भजनि पुरुष अवतार
भजनि पुरुष अवतार जके तो मुकती पासी
पापी पड़सी नरक मार जमद्वारे खासी
इत्तो फरक सगराम कहे सुण लीजो नरनार
मिनख-मिनख सब सारिखा जाणे लोग गंवार

(१००)

काया कूवा में घणों नाम नीर दहचाल
निस दिन बहे रसना रटत भोगे दोनूं काल
तो भोगे दोनू काल कमाई आडी आवै
करसा के होय धान मुकति रजनीक[१] सिधावै
सगरामदास इण शब्द रो लीजो अरथ संभाल
काया कूवा में घणों नाम नीर दहचाल

(१०१)

कहे दास सगराम धणी चाहीजै पूठी
सिर समरथ के हाथ बांदरा लंका लूटी
लंका लूटी बांदरा सबल श्याम[२] के पाण
अरजुन तो वे ही हुता अरु वेका वेही बाण
वेका वेही बाण गोपियां काबा[३] लूटी
कहे दास सगराम धणी चाहीजे पूठी

१. रजनीक = निकट, २. श्याम = स्वामी, ३. काबा = बाटमार

(१०२)

आप निमित तो सहस मण राम निमित कण एक
पांडवां का जिग में भई सगरामदास कहे देख
सगरामदास कहे देख जगत सगलो हि जिमायो
राम भजन के पाण शंख भजनीक बजायो
राजा परजा देवता लज्जित भयो सब भेख[१]
आप निमित तो सहस मण राम निमित कण एक

(१०३)

कहे दास सगराम सुनो हो सज्जन मीता
राम रटो दिन रात कह्यो लछमण ने सीता
लछमण ने सीता कह्यो अरजन ने भगवान
पारवती ने शिव कह्यो, धरो राम रो ध्यान
धरो राम रो ध्यान जाय है निशदिन बीता
कहे दास सगराम सुणो हो सज्जन मीता

(१०४)

कहे दास सगराम सुणो हो सज्जन मिंता
थारी बात सजान थने क्यूं व्यापै चिंता
क्यूं व्यापे चिंता थने सुख सागर सूं सीर
राम भजन बिन दिन गया वे सालै[२] हैं बीर
वे सालै हैं बीर आप जावै जब चिंता
कहे दास सगराम सुणो हो सज्जन मिंता

१. भेख = साधु समाज, २. सालै = चुभना

(१०५)

कहे दास सगराम सुणो सज्जन हितकारी
राम भजन परताप घणो भारी सूं भारी
भारी सूं भारी घणो जिका कहूँ सुण बात
झूठा बोर आरोगिया शिबरी रा रघुनाथ
शिबरी रा रघुनाथ मही जानत है सारी
कहे दास सगराम सुणो सज्जन हितकारी

(१०६)

सुणो मिंत सगराम कहे, भजन कौन विधि होय
बैरणियां म्हारे बड़ी लारे लागी दोय
लारे लागी दोय, इसी कुण कुण रे भाई
दिन रा बातां बैन, रात रा निंदरा बाई
लाग लाग यां रे कहे दियो टापरो[१] खोय
सुणो मिंत सगराम कहे भजन कौन विधि होय

(१०७)

सुणो मिंत सगराम कहे माला मोटी बात
बड़ा भाग ज्यांरा जिका फेरे दिन अरु रात
फेरे दिन अरु रात कमाई लाग्या भारी
के नारायण मांहि नहीं तो नरतन न्यारी
इसे ठिकाणे जनमसी जठे घणा जोड़सी हात
सुणो मिंत सगराम कहे माला मोटी बात

१. टापरो = घर

22

(१०८)

सुणो मिंत सगराम कहे (थारे) भलो करण री पीक[१]
तो राम नाम री रात दिन देले झीका झींक
देले झीका झींक कयो मानै तो म्हारो
बिन खरची बिन खेल, भलो होय जावे थारो
सतगुरु फरमाई म्हने जिकी थनै दूं सीख
सुणो मिंत सगराम होय भलो करण री पीक

(१०९)

सुणो मिंत सगराम कहे, मिनख जनम रा सांस
भरिया जावै भजन सूं तो दे अमरापुर बास
तो दे अमरापुर बास जिकै जावै है रीता
लख चौरासी जूण भुगततां आसी चिंता
इसा इसा दुःख देखसी सो सुण्या न आवै भास
सुणो मिंत सगराम कहे मिनख जनम रा सांस

(११०)

सुणो मिंत बूझे मने ए राम नाम रा लाभ
इणरी तो पड़सी खबर होसी जदे हिसाब
होसी जदे हिसाब थनै पहला कहुँ कांई
देसी दीनानाथ बास अमरापुर मांही
जब लग तन में सांस है करले भजन सताभ[२]
सुणो मिंत बूझे मने ए राम नाम रो लाभ

१. पीक = अभिलाषा, २. सताभ = शीघ्र

(१११)

सुणो मिंत सगराम कहे सकर नींद[१] मति सोय
सहस गुणों फल भजन रो इसी बखत दे खोय
इसी बखत दे खोय, पड़े है टोटो[२] भारी
पहला कह दूं थने पछे तू जाणे थारी
राम राम कहे प्रीति सूं सुरत शब्द में पोय
सुणो मिंत सगराम कहे सकर नींद मति सोय

(११२)

पहर पाछली रात रा भजन करो चित लाय
प्रात समै सगराम कहे सहस गुणों होय जाय
सहस गुणों होय जाय सीख सतगुरु फरमाई
कहे शास्त्र अरु सन्त तिका में कसर न कांई
सतपुरुषां रा वचन है संत कहे समझाय
पहर पाछली रात रा भजन करो चित्त लाय

(११३)

बालमीकजी री करी रामायण सौ कोड़
बांटी तीनूं लोक में शिवजी कीन्ही जोड़
शिवजी कीन्ही जोड़ उभै[३] अक्खर उर लीना
बाकी अक्खर तीस ईस पांती कर दीना
जीव बिना किण कामरी सगरामदास कहे खोड़[४]
बालमीकजी री करी, रामायण सो कोड़

१. सकर नींद = सुबह की मीठी नींद, २. टोटो = हानि, ३. उभै = दोनों (रा और म) ४. खोड़ = काया

23

(११४)

अनजल रो संजम करै बड़ी तपस्या जाण
काया ने कसणां[१] घणी पांचों पकड़े प्राण
पांचू पकड़े प्राण सुमति हिरदा में जागे
आठूं पहर अखण्ड भजन सूं ताली लागे
सतगुरु का परताप सूं पावै पद निरमाण
अनजल री संजम करै बड़ी तपस्या जाण

(११५)

कहे दास सगराम भजन की बड़ी कमाई
करता आया सदा जिकां सूं हुव है भाई
हुव है भाई जिकां सूं सुणो सकल ही लोय
आया चोरासी भुगतता बांसू क्यों कर होय
बांसू क्यों कर होय खपै है करण घणाई
कहे दास सगराम भजन की बड़ी कमाई

(११६)

कहे दास सगराम भजन की बड़ी कमाई
आढी फिरगी तीन करूं कीकर रे भाई
वाह भाई कुण कुण हुई निंदड़ी जिदड़ी बात
यां रो साधन साधतां बीते दिन अरु रात
बीते दिन अरु रात, अदल[२] तो आइक[३] आई
कहे दास सगराम भजन की बड़ी कमाई

१. कसणां = तितिक्षा, २. अदल = सेवा, ३. आइक = यही

(११७)

कहे दास सगराम भजन की करड़ी घाटी
आडा ऊभा पाप हाथ में लियां लाठी
लाठी लियां हाथ में पांव धरण दे नांहिं
आगो मेलूं पांवडौ तो दे गाबड़[१] के मांहिं
दे गाबड़ के मांहि कमाई कीन्ही माठी
कहे दास सगराम भजन की करड़ी घाटी

(११८)

कहे दास सगराम उनमनी[२] आवरी बाई
यूं तो मने बताय कांई सारू रीसाई
रीसाई किण बास्ते म्हारे थारी चाय
थां आयां होसी भलो मिनख जमारो जाय
मिनख जमारो जाय करूं किंकर जु कमाई
कहे दास सगराम उनमनी आवरी बाई

(११९)

भावे जितरी सुणों बात तो या की याही
गया राम गुण भूल जिके दोजख में जाही
दोजख में जासी जिके बह जासी भो[३] धार
भजन करे है रात दिन वे होय जासी पार
वे होय जासी पार बास अमरापुर मांही
भावे जितरी सुणों बात तो या की याही

१. गाबड़ = गर्दन, २. उनमनी = उन्मनावस्था, ३. भो = भव (संसार)

(१२०)

बलिहारी इण नाम री पल पल बारूं बार
गज गति भयो राकार सूं पूगो पछे मकार
पूगो पछे मकार जाण गोली ने दागी
कहैं दास सगराम आवाजां पहली लागी
ऐसी साहि सिताब[१] सूं कीन्ही सिरजण हार
बलिहारी इण नाम री पल पल बारूं बार

(१२१)

कहे दास सगराम भाग धिन भाई थारो
भलो करे है भजन मंड़े है दफ्तर सारो
दफ्तर में सारो मंड़े भारी लेसी लाभ
भरदेसी खांवन्द थनै होसी जदे हिसाब
होसी जदे हिसाब दफे[२] दुःख दालिद सारो
कहे दास सगराम भाग धिन भाई थारो

(१२२)

बलिहारी इण नाम री पल पल बारूं बार
बिना खेद[३] खरची बिना करदे बेड़ो[४] पार
कर दे बेड़ो पार इसो साहिब है म्हारो
कहे दास सगराम सृष्टि रो सिरजनहारो
इण खांवन्द ने नहीं भजे (वाने) बार बार धिक्कार
बलिहारी इण नाम री पल पल बारूं बार

१. सिताब = शीघ्र, २. दफे = मिटाना, ३. खेद = श्रम, ४. बेड़ो = नौका

(१२३)

जाय पड़े नर नरक में मार जमां री खाय
जीभ हिलायां होवे भलो जिको न कियो जाय
जिको न कियो जाय इसो कांई है दोरो
धणी भोलायो काम जिको सारां में सोरो
किण खातिर खांवन्द करै सगरामदास सहाय
जाय पड़े नर नरक में मार जमां री खाय

(१२४)

कारज रूपी बहुत है घणनामी[१] रा नाम
कारण रूपी एक है भजन करण नै राम
भजन करण नै राम एक यो रहसी भाई
कहै दास सगराम और सारा भर जाई
धरो ध्यान महाराज रो निसदिन आठूं जाम[२]
कारज रूपी बहुत है घणनामी रा नाम

(१२५)

राम नाम सगराम कहे सिला अलूंणी जाण
बड़ा भाग ज्यांरा जिके चाहे संत सुजाण
चाहे संत सुजाण खबर सत गुरु सूं पाई
पड़सी इणरी जाण सलूंणी होय जद भाई
मिलसी मोटा श्याम सूं पावे पद निरवाण
रामनाम सगराम कहे सिला अलूंणी जाण

१. घणनामी = परमात्मा, २. जाम = पहर

25

(१२६)

लाग जाय हरिनामसूं मिनख जमारे आय
सुणो मिंत सगराम कहे करम सबै मिट जाय
करम सबै मिट जाय बास अमरापुर पावे
सुखसागर ने छोड़ पछे पाछो कुण आवे
ब्रह्मा विष्णु महेश रे या ही आवे दाय
लाग जाय हरिनाम सूं मिनख जमारे आय

(१२७)

राम नाम कलवृक्ष में सारा ही फल त्यार
आन धरम सगराम कहे ज्यूं बनी अठाराभार
ज्यूं बनी अठाराभार सुनो सज्जन हितकारी
जिसो सींचो पेड़ जिसो फल होय है त्यारी
पहला कह दूं हूँ थने भावे सोई विचार
राम नाम कलवृक्ष में सारा ही फल त्यार

(१२८)

सहस नाम लेसी कदे अरजुन पडियां काम
बैरी आया ऊपरे एक बार कह राम
एक बार कह राम सहस नामां कै जोड़े
गुप्त कयो मैं थने सुन र करजे मति चौड़े
म्हारे यो ही ध्यान है अन्तर आठों जाम
सहस नाम लेसी कदे अरजुन पड़ियां काम

❁ ❁ ❁

सुदामा चरित / नरोत्तमदास
कविता कोश, एक मुक्त ज्ञानकोष से

विप्र सुदामा बसत हैं, सदा आपने धाम।
भीख माँगि भोजन करैं, हिये जपत हरि-नाम॥
ताकी घरनी पतिव्रता, गहै वेद की रीति।
सलज सुशील सुबुद्धि अति, पति सेवा सौं प्रीति॥
कह्यौ सुदामा एक दिन, कृस्न हमारे मित्र।
करत रहति उपदेस गुरु, ऐसो परम विचित्र॥

(सुदामा की पत्नी)
लोचन-कमल, दुख मोचन, तिलक भाल,
स्रवननि कुंडल, मुकुट धरे माथ हैं।
ओढ़े पीत बसन, गरे में बैजयंती माल,
संख-चक्र-गदा और पद्म लिये हाथ हैं।
विद्व नरोत्तम संदीपनि गुरु के पास,
तुम ही कहत हम पढ़े एक साथ हैं।
द्वारिका के गये हरि दारिद हरैंगे पिय,
द्वारिका के नाथ वै अनाथन के नाथ हैं॥

(सुदामा)
सिच्छक हौं, सिगरे जग को तिय, ताको कहाँ अब देति है सिच्छा।
जे तप कै परलोक सुधारत, संपति की तिनके नहि इच्छा॥
मेरे हिये हरि के पद-पंकज, बार हजार लै देखि परिच्छा।
औरन को धन चाहिये बावरि, ब्राह्मन को धन केवल भिच्छा॥

(सुदामा की पत्नी)
कोदों, सवाँ जुरितो भरि पेट, तौ चाहति ना दधि दूध मठौती।
सीत बितीतत जौ सिसियातहिं, हौं हठती पै तुम्हें न हठौती॥
जो जनती न हितू हरि सों तुम्हें, काहे को द्वारिका पेलि पठौती।
या घर ते न गयौ कबहूँ पिय, टूटो तवा अरु फूटी कठौती॥

(सुदामा)

pdfMachine
A pdf writer that produces quality PDF files with ease!
Produce quality PDF files in seconds and preserve the integrity of your original documents. Compatible across nearly all Windows platforms, if you can print from a windows application you can use pdfMachine.
Get yours now!

छाँड़ि सबै जक तोहि लगी बक, आठहु जाम यहै झक ठानी।
जातहि दैहैं, लदाय लढ़ा भरि, लैहैं लदाय यहै जिय जानी॥
पाँउ कहाँ ते अटारि अटा, जिनको विधि दीन्हि है टूटि सी छानी।
जो पै दरिद्र लिखो है ललाट तौ, काहु पै मेटि न जात अयानी॥

(सुदामा की पत्नी)
विप्र के भगत हरि जगत विदित बंधु,
लेत सब ही की सुधि ऐसे महादानि हैं।
पढ़े एक चटसार कही तुम कैयो बार,
लोचन अपार वै तुम्हैं न पहिचानि हैं।
एक दीनबंधु कृपासिंधु फेरि गुरुबंधु,
तुम सम कौन दीन जाकौ जिय जानि हैं।
नाम लेते चौगुनी, गये तें द्वार सौगुनी सो,
देखत सहस्त्र गुनी प्रीति प्रभु मानि हैं॥

(सुदामा)
द्वारिका जाहु जू द्वारिका जाहु जू, आठहु जाम यहै झक तेरे।
जौ न कहौ करिये तो बड़ौ दुख, जैये कहाँ अपनी गति हेरे॥
द्वार खरे प्रभु के छरिया तहँ, भूपति जान न पावत नेरे।
पाँच सुपारि तै देखु बिचार कै, भेंट को चारि न चाउर मेरे॥

यह सुनि कै तब ब्राह्मनी, गई परोसी पास।
पाव सेर चाउर लिये, आई सहित हुलास॥
सिद्धि करी गनपति सुमिरि, बाँधि दुपटिया खूँट।
माँगत खात चले तहाँ, मारग वाली बूट॥

दीठि चकचौंधि गई देखत सुबर्नमई,
एक तें सरस एक द्वारिका के भौन हैं।
पूछे बिन कोऊ कहूँ काहू सों न करे बात,
देवता से बैठे सब साधि-साधि मौन हैं।
देखत सुदामा धाय पौरजन गहे पाँय,
कृपा करि कहौ विप्र कहाँ कीन्हौ गौन हैं।
धीरज अधीर के हरन पर पीर के,

pdfMachine
A pdf writer that produces quality PDF files with ease!
Produce quality PDF files in seconds and preserve the integrity of your original documents. Compatible across nearly all Windows platforms, if you can print from a windows application you can use pdfMachine.
Get yours now!

बताओ बलवीर के महल यहाँ कौन हैं?

(श्रीकृष्ण का द्वारपाल)
सीस पगा न झगा तन में प्रभु, जानै को आहि बसै केहि ग्रामा।
धोति फटी-सी लटी दुपटी अरु, पाँय उपानह की नहिं सामा॥
द्वार खड्यो द्विज दुर्बल एक, रह्यौ चकिसौं वसुधा अभिरामा।
पूछत दीन दयाल को धाम, बतावत आपनो नाम सुदामा॥

बोल्यौ द्वारपाल सुदामा नाम पाँड़े सुनि,
छाँड़े राज-काज ऐसे जी की गति जानै को?
द्वारिका के नाथ हाथ जोरि धाय गहे पाँय,
भेंटत लपटाय करि ऐसे दुख सानै को?
नैन दोऊ जल भरि पूछत कुसल हरि,
बिप्र बोल्यौं विपदा में मोहि पहिचाने को?
जैसी तुम करौ तैसी करै को कृपा के सिंधु,
ऐसी प्रीति दीनबंधु! दीनन सौ माने को?

ऐसे बेहाल बेवाइन सों पग, कंटक-जाल लगे पुनि जोये।
हाय! महादुख पायो सखा तुम, आये इतै न किते दिन खोये॥
देखि सुदामा की दीन दसा, करुना करिके करुनानिधि रोये।
पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैनन के जल सौं पग धोये॥

(श्री कृष्ण)
कछु भाभी हमको दियौ, सो तुम काहे न देत।
चाँपि पोटरी काँख में, रहे कहौ केहि हेत॥

आगे चना गुरु-मातु दिये त, लिये तुम चाबि हमें नहिं दीने।
श्याम कह्यौ मुसुकाय सुदामा सों, चोरि कि बानि में हौ जू प्रवीने॥
पोटरि काँख में चाँपि रहे तुम, खोलत नाहिं सुधा-रस भीने।
पाछिलि बानि अजौं न तजी तुम, तैसइ भाभी के तंदुल कीने॥

देनो हुतौ सो दै चुके, बिप्र न जानी गाथ।
चलती बेर गोपाल जू, कछू न दीन्हौं हाथ॥
वह पुलकनि वह उठ मिलनि, वह आदर की भाँति।

pdfMachine
A pdf writer that produces quality PDF files with ease!
Produce quality PDF files in seconds and preserve the integrity of your original documents. Compatible across nearly all Windows platforms, if you can print from a windows application you can use pdfMachine.
Get yours now!

यह पठवनि गोपाल की, कछू ना जानी जाति॥
घर-घर कर ओड़त फिरे, तनक दही के काज।
कहा भयौ जो अब भयौ, हरि को राज-समाज॥
हौं कब इत आवत हुतौ, वाही पठ्यौ ठेलि।
कहिहौं धनि सौं जाइकै, अब धन धरौ सकेलि॥

वैसेइ राज-समाज बने, गज-बाजि घने, मन संभ्रम छायौ।
वैसेइ कंचन के सब धाम हैं, द्वारिके के महिलों फिरि आयौ।
भौन बिलोकिबे को मन लोचत सोचत ही सब गाँव मँझायौ।
पूछत पाँड़े फिरैं सबसों पर झोपरी को कहूँ खोज न पायौ॥

कनक-दंड कर में लिये, द्वारपाल हैं द्वार।
जाय दिखायौ सबनि लैं, या है महल तुम्हार॥

टूटी सी मड़ैया मेरी परी हुती याही ठौर,
तामैं परो दुख काटौं कहाँ हेम-धाम री।
जेवर-जराऊ तुम साजे प्रति अंग-अंग,
सखी सोहै संग वह छूछी हुती छाम री।
तुम तो पटंबर री ओढ़े किनारीदार,
सारी जरतारी वह ओढ़े कारी कामरी।
मेरी वा पंडाइन तिहारी अनुहार ही पै,
विपदा सताई वह पाई कहाँ पामरी?

कै वह टूटि-सि छानि हती कहाँ, कंचन के सब धाम सुहावत।
कै पग में पनही न हती कहँ, लै गजराजहु ठाढ़े महावत॥
भूमि कठोर पै रात कटै कहाँ, कोमल सेज पै नींद न आवत।
कैं जुरतो नहिं कोदो सवाँ प्रभु, के परताप तै दाख न भावत॥

pdfMachine
A pdf writer that produces quality PDF files with ease!
Produce quality PDF files in seconds and preserve the integrity of your original documents. Compatible across nearly all Windows platforms, if you can print from a windows application you can use pdfMachine.
Get yours now!

.. shrii hari giitaa ..

॥ श्री हरि गीता ॥

राजा धृतराष्ट्र ने कहा -
रण-लालसा से धर्म-भू कुरुक्षेत्र में एकत्र हो ।
मेरे सुतों ने, पाण्डवों ने क्या किया संजय कहो ॥१.१॥

संजय ने कहा -
तब देखकर पाण्डव-कटक को व्यूह-रचना साज से ।
इस भाँति दुर्योधन वचन कहने लगे गुरुराज से ॥१.२॥

आचार्य महती सैन्य सारी, पाण्डवों की देखिये ।
तव शिष्य बुधवर द्रुपद-सुत ने दल सभी व्यूहित किये ॥१.३॥

भट भीम अर्जुन से अनेकों शूर श्रेष्ठ धनुर्धरे ।
सात्यिक द्रुपद योद्धा विराट महारथी रणबांकुरे ॥१.४॥

काशी नृपति भट धृष्टकेतु व चेकितान नरेश हैं ।
श्री कुन्तिभोज महान पुरुजित शैब्य वीर विशेष हैं ॥१.५॥

श्री उत्तमौजा युधामन्यु, पराक्रमी वरवीर हैं ।
सौभद्र, सारे द्रौपदेय, महारथी रणधीर हैं ॥१.६॥

द्विजराज! जो अपने कटक के श्रेष्ठ सेनापति सभी ।
सुन लीजिये मैं नाम उनके भी सुनाता हूँ अभी ॥१.७॥

हैं आप फिर श्रीभीष्म, कर्ण, अजेय कृप रणधीर हैं ।
भूरिश्रवा गुरुपुत्र और विकर्ण से बलवीर हैं ॥१.८॥

रण साज सारे निपुण शूर अनेक ऐसे बल भरे ।
मेरे लिये तय्यार हैं, जीवन हथेली पर धरे ॥१.९॥

श्री भीष्म-रक्षित है नहीं, पर्याप्त अपना दल बड़ा ।
पर भीम-रक्षा में उधर, पर्याप्त उनका दल खड़ा ॥१.१०॥

इस हेतु निज-निज मोरचों पर, वीर पूरा बल धरें ।
सब ओर चारों छोर से, रक्षा पितामह की करें ॥१.११॥

कुरुकुल-पितामह तब नृपति-मन मोद से भरने लगे ।
कर विकट गर्जन सिंह-सी, निज शङ्ख-ध्वनि करने लगे ॥१.१२॥

फिर शंख भेरी ढोल आनक गोमुखे चहुँ ओर से ।
सब युद्ध बाजे एक दम बजने लगे ध्वनि घोर से ॥१.१३॥

तब कृष्ण अर्जुन श्वेत घोड़ों से सजे रथ पर चढ़े ।
निज दिव्य शंखों को बजाते वीरवर आगे बढ़े ॥१.१४॥

श्रीकृष्ण अर्जुन 'पाञ्चजन्य' व 'देवदत्त' गुंजा उठे ।
फिर भीमकर्मा भीम 'पौण्ड्र' निनाद करने में जुटे ॥१.१५॥

करने लगे ध्वनि नृप युधिष्ठिर, निज 'अनन्तविजय' लिये ।
गुंजित नकुल सहदेव ने सु-'सुघोष' 'मणिपुष्पक' किये ॥१.१६॥

काशीनरेश विशाल धनुधारी, शिखण्डी वीर भी ।
भट धृष्टद्युम्न, विराट, सात्यकि, श्रेष्ठ योधागण सभी ।१.१७॥

सब द्रौपदी के सुत, द्रुपद, सौभद्र बल भरने लगे ।
चहुँ ओर राजन! वीर निज-निज शङ्ख-ध्वनि करने लगे ॥१.१८॥

वह घोर शब्द विदीर्ण सब कौरव-हृदय करने लगा ।
चहुँ ओर गूंज वसुन्धरा आकाश में भरने लगा ॥१.१९॥

सब कौरवों को देख रण का साज सब पूरा किये ।
शस्त्रादि चलने के समय अर्जुन कपिध्वज धनु लिये ॥१.२०॥

श्रीकृष्ण से कहने लगे आगे बढ़ा रथ लीजिये ।
दोनों दलों के बीच में अच्युत! खड़ा कर दीजिये ॥१.२१॥

करलूं निरीक्षण युद्ध में जो जो जुड़े रणधीर हैं ।
इस युद्ध में माधव! मुझे जिन पर चलने तीर हैं ॥१.२२॥

मैं देख लूं रण हेतु जो आये यहाँ बलवान हैं ।
जो चाहते दुर्बुद्धि दुर्योधन-कुमति-कल्याण हैं ॥१.२३॥

संजय ने कहा --
श्रीकृष्ण ने जब गुडाकेश-विचार, भारत! सुन लिया ।
दोनों दलों के बीच में जाकर खड़ा रथ को किया ॥१.२४॥

राजा, रथी, श्रीभीष्म, द्रोणाचार्य के जा सामने ।
लो देखलो! कौरव कटक, अर्जुन! कहा भगवान ने ॥१.२५॥

तब पार्थ ने देखा वहाँ, सब हैं स्वजन बूढ़े बड़े ।
आचार्य भाई पुत्र मामा, पौत्र प्रियजन हैं खड़े ॥१.२६॥

स्नेही ससुर देखे खड़े, कौन्तेय ने देखा जहाँ ।
दोनों दलों में देखकर, प्रिय बन्धु बान्धव हो वहाँ ॥१.२७॥

कहने लगे इस भाँति तब, होकर कृपायुत खिन्न से ।
हे कृष्ण! रण में देखकर, एकत्र मित्र अभिन्न-से ॥१.२८॥

होते शिथिल हैं अङ्ग सारे, सूख मेरा मुख रहा ।
तन काँपता थर-थर तथा रोमाञ्च होता है महा ॥१.२९॥

गाण्डीव गिरता हाथ से, जलता समस्त शरीर है ।
मैं रह नहीं पाता खड़ा, मन भ्रमित और अधीर है ॥१.३०॥

केशव! सभी विपरीत लक्षण दिख रहे, मन म्लान है ।
रण में स्वजन सब मारकर, दिखता नहीं कल्याण है ॥१.३१॥

इच्छा नहीं जय राज्य की है, व्यर्थ ही सुख भोग है ।
गोविन्द! जीवन राज्य-सुख का क्या हमें उपयोग है ॥१.३२॥

जिनके लिये सुख-भोग सम्पति राज्य की इच्छा रही ।
लड़ने खड़े हैं आश तज धन और जीवन की वही ॥१.३३॥

आचार्यगण, मामा, पितामह, सुत, सभी बूढ़े बड़े ।
साले, ससुर, स्नेही, सभी प्रिय पौत्र सम्बन्धी खड़े ॥१.३४॥

क्या भूमि, मधुसूदन! मिले त्रैलोक्य का यदि राज्य भी ।
वे मारलें पर शस्त्र मैं उन पर न छोड़ूँगा कभी ॥१.३५॥

इनको जनार्दन मारकर होगा हमें संताप ही ।
हैं आततायी मारने से पर लगेगा पाप ही ॥१.३६॥

माधव! उचित वध है न इनका बन्धु हैं अपने सभी ।
निज बन्धुओं को मारकर क्या हम सुखी होंगे कभी ॥१.३७॥

मति मन्द उनकी लोभ से, दिखता न उनको आप है ।
कुल-नाश से क्या दोष, प्रिय-जन-द्रोह से क्या पाप है ॥१.३८॥

कुल-नाश दोषों का जनार्दन! जब हमें सब ज्ञान है ।
फिर क्यों न ऐसे पाप से बचना भला भगवान है ॥१.३९॥

कुल नष्ट होते भ्रष्ट होता कुल-सनातन-धर्म है ।
जब धर्म जाता आ दबाता पाप और अधर्म है ॥१.४०॥

जब वृद्धि होती पाप की कुल की बिगड़ती नारियाँ ।
हे कृष्ण! फलती फूलती तब वर्णसंकर क्यारियाँ ॥१.४१॥

कुलघातकी को और कुल को ये गिराते पाप में ।
होता न तर्पण पिण्ड यों पड़ते पितर संताप में ॥१.४२॥

कुलघातकों के वर्णसंकर-कारकी इस पाप से ।
सारे सनातन, जाति, कुल के धर्म मिटते आप से ॥१.४३॥

इस भाँति से कुल-धर्म जिनके कृष्ण होते भ्रष्ट हैं ।
कहते सुना है वे सदा पाते नरक में कष्ट हैं ॥१.४४॥

हम राज्य सुख के लोभ से हा! पाप यह निश्चय किये ।
उद्यत हुए सम्बन्धियों के प्राण लेने के लिये ॥१.४५॥

यह ठीक हो यदि शस्त्र ले मारें मुझे कौरव सभी ।
निःशस्त्र हो मैं छोड़ दूँ करना सभी प्रतिकार भी ॥१.४६॥

संजय ने कहा --
रणभूमि में इस भाँति कहकर पार्थ धनु-शर छोड़के ।
अति शोक से व्याकुल हुए बैठे वहीं मुख मोड़के ॥१.४७॥

पहला अध्याय समाप्त हुआ ॥१॥

१.१९९॥

संजय ने कहा --
ऐसे कृपायुत अश्रुपूरित दुःख से दहते हुए ।
कौन्तेय से इस भांति मधुसूदन वचन कहते हुए॥२.१॥

श्रीभगवान ने कहा --
अर्जुन! तुम्हें संकट-समय में क्यों हुआ अज्ञान है ।
यह आर्य-अनुचित और नाशक स्वर्ग, सुख, सम्मान है ॥२.२॥

अनुचित नपुंसकता तुम्हें हे पार्थ! इसमें मत पड़ो ।
यह क्षुद्र कायरता परंतप! छोड़ कर आगे बढ़ो ॥२.३॥

अर्जुन ने कहा --
किस भाँति मधुसूदन! समर में भीष्म द्रोणाचार्य पर ।
मैं बाण अरिसूदन चलाऊँ वे हमारे पूज्यवर ॥२.४॥

भगवन! महात्मा गुरुजनों का मारना न यथेष्ट है ।
इससे जगत में मांग भिक्षा पेट-पालन श्रेष्ठ है ॥२.५॥

इन गुरुजनों को मार कर, जो अर्थलोलुप हैं बने ॥।
उनके रुधिर से ही सने, सुख-भोग होंगे भोगने ॥२.५॥

जीते उन्हें हम या हमें वे, यह न हमको ज्ञात है ।
यह भी नहीं हम जानते, हितकर हमें क्या बात है ॥२.६॥

जीवित न रहना चाहते हम, मार कर रण में जिन्हें ॥।
धृतराष्ट्र-सुत कौरव वही, लड़ने खड़े हैं सामने ॥॥ २.६ ॥

कायरपने से हो गया सब नष्ट सत्य-स्वभाव है ।
मोहित हुई मति ने भुलाया धर्म का भी भाव है ॥
आया शरण हूँ आपकी मैं शिष्य शिक्षा दीजिये ॥
निश्चित कहो कल्याणकारी कर्म क्या मेरे लिये ॥ २.७ ॥

धन-धान्य-शाली राज्य निष्कंटक मिले संसार में ।
स्वामित्व सारे देवताओं का मिले विस्तार में ॥
कोई कहीं साधन मुझे फिर भी नहीं दिखता अहो ॥
जिससे कि इन्द्रिय-तापकारी शोक सारा दूर हो ॥ २.८ ॥

संजय ने कहा --
इस भाँति कहकर कृष्ण से, राजन! 'लड़ूंगा मैं नहीं' ।
ऐसे वचन कह गुडाकेश अवाच्य हो बैठे वहीं ॥ २.९ ॥

उस पार्थ से, रण-भूमि में जो, दुःख से दहने लगे ।
हँसते हुए से हृषीकेश तुरन्त यों कहने लगे ॥ २.१० ॥

श्रीभगवान ने कहा --
निःशोच्य का कर शोक कहता बात प्रज्ञावाद की ।
जीते मरे का शोक ज्ञानीजन नहीं करते कभी ॥ २.११ ॥

मैं और तू राजा सभी देखो कभी क्या थे नहीं ।
यह भी असम्भव हम सभी अब फिर नहीं होंगे कहीं ॥ २.१२ ॥

ज्यों बालपन, यौवन जरा इस देह में आते सभी ।
त्यों जीव पाता देह और, न धीर मोहित हों कभी ॥ २.१३ ॥

शीतोष्ण या सुख-दुःख-प्रद कौन्तेय! इन्द्रिय-भोग हैं ।
आते व जाते हैं सहो सब नाशवत संयोग हैं ॥ २.१४ ॥

नर श्रेष्ठ! वह नर श्रेष्ठ है इनसे व्यथा जिसको नहीं ।
वह मोक्ष पाने योग्य है सुख दुख जिसे सम सब कहीं ॥ २.१५ ॥

जो है असत रहता नहीं, सत का न किन्तु अभाव है ।
लखि अन्त इनका ज्ञानियों ने यों किया ठहराव है ॥ २.१६ ॥

यह याद रख अविनाशि है जिसने किया जग व्याप है ।
अविनाशि का नाशक नहीं कोई कहीं पर्याप है ॥ २.१७ ॥

इस देह में आत्मा अचिन्त्य सदैव अविनाशी अमर ।
पर देह उसकी नष्ट होती अस्तु अर्जुन! युद्ध कर ॥ २.१८ ॥

है जीव मरने मारनेवाला यही जो मानते ।
यह मारता मरता नहीं दोनों न वे जन जानते ॥ २.१९ ॥

मरता न लेता जन्म, अब है, फिर यहीं होगा कहीं ।
शाश्वत, पुरातन, अज, अमर, तन वध किये मरता नहीं ॥ २.२० ॥

अव्यय अजन्मा नित्य अविनाशी इसे जो जानता ।
कैसे किसी का वध कराता और करता है बता ॥ २.२१ ॥

जैसे पुराने त्याग कर नर वस्त्र नव बदलें सभी ।
यों जीर्ण तन को त्याग नूतन देह धरता जीव भी ॥ २.२२ ॥

आत्मा न कटता शस्त्र से है, आग से जलता नहीं ।
सूखे न आत्मा वायु से, जल से कभी गलता नहीं ॥ २.२३ ॥

छिदने न जलने और गलने सूखनेवाला कभी ।
यह नित्य निश्चल, थिर, सनातन और है सर्वत्र भी ॥ २.२४ ॥

इन्द्रिय पहुँच से है परे, मन-चिन्तना से दूर है ।
अविकार इसको जान, दुख में व्यर्थ रहना चूर है ॥ २.२५ ॥

यदि मानते हो नित्य मरता, जन्मता रहता यहीं ।
तो भी महाबाहो! उचित ऐसी कभी चिन्ता नहीं ॥ २.२६ ॥

जन्मे हुए मरते, मरे निश्चय जनम लेते कहीं ।
ऐसी अटल जो बात है उसकी उचित चिन्ता नहीं ॥ २.२७ ॥

अव्यक्त प्राणी आदि में हैं मध्य में दिखते सभी ।
फिर अन्त में अव्यक्त, क्या इसकी उचित चिन्ता कभी ॥ २.२८ ॥

कुछ देखते आश्चर्य से, आश्चर्यवत कहते कहीं ।
कोई सुने आश्चर्यवत, पहिचानता फिर भी नहीं ॥ २.२९ ॥

सारे शरीरों में अबध आत्मा न बध होता किये ।
फिर प्राणियों का शोक यों तुमको न करना चाहिये ॥ २.३० ॥

फिर देखकर निज धर्म, हिम्मत हारना अपकर्म है ।
इस धर्म-रण से बढ़ न क्षत्रिय का कहीं कुछ धर्म है ॥ २.३१ ॥

रण स्वर्गरूपी द्वार देखो खुल रहा है आप से ।
यह प्राप्त होता क्षत्रियों को युद्ध भाग्य-प्रताप से ॥ २.३२ ॥

तुम धर्म के अनुकूल रण से जो हटे पीछे कभी ।
निज धर्म खो अपकीर्ति लोगे और लोगे पाप भी ॥ २.३३ ॥

अपकीर्ति गायेंगे सभी फिर इस अमिट अपमान से ।
अपकीर्ति, सम्मानित पुरुष को अधिक प्राण-पयान से ॥ २.३४ ॥

'रण छोड़कर डर से भगा अर्जुन' कहेंगे सब यही ।
सम्मान करते वीरवर जो, तुच्छ जानेंगे वही ॥ २.३५ ॥

कहने न कहने की खरी खोटी कहेंगे रिपु सभी ।
सामर्थ्य-निन्दा से घना दुख और क्या होगा कभी ॥ २.३६ ॥

जीते रहे तो राज्य लोगे, मर गये तो स्वर्ग में ।
इस भाँति निश्चय युद्ध का करके उठो अरिवर्ग में ।२.३७॥

जय-हार, लाभालाभ, सुख-दुख सम समझकर सब कहीं ।
फिर युद्ध कर तुझको धनुर्धर ! पाप यों होगा नहीं ।२.३८॥

है सांख्य का यह ज्ञान अब सुन योग का शुभ ज्ञान भी ।
हो युक्त जिससे कर्म-बन्धन पार्थ छुटेंगे सभी ॥ २.३९ ॥

आरम्भ इसमें है अमिट यह विघ्न बाधा से परे ।
इस धर्म का पालन तनिक भी सर्व संकट को हरे ॥ २.४० ॥

इस मार्ग में नित निश्चयात्मक-बुद्धि अर्जुन एक है ।
बहु बुद्धियाँ बहु भेद-युत उनकी जिन्हें अविवेक है ॥ २.४१ ॥

जो वेदवादी, कामनाप्रिय, स्वर्गइच्छुक, मूढ़ हैं ।
'अतिरिक्त इसके कुछ नहीं' बातें बढ़ाकर यों कहें ॥ २.४२ ॥

नाना क्रिया विस्तारयुत, सुख-भोग के हित सर्वदा ।
जिस जन्मरूपी कर्म-फल-प्रद बात को कहते सदा ॥ २.४३ ॥

उस बात से मोहित हुए जो भोग-वैभव-रत सभी ।
व्यवसाय बुद्धि न पार्थ ! उनकी हो समाधिस्थित कभी ॥ २.४४ ॥

हैं वेद त्रिगुणों के विषय, तुम गुणातीत महान हो !
तज योग क्षेम व द्वन्द्व नित सत्त्वस्थ आत्मावान हो ॥ २.४५ ॥

सब ओर करके प्राप्त जल, जितना प्रयोजन कूप का ।
उतना प्रयोजन वेद से, विद्वान ब्राह्मण का सदा ॥ २.४६ ॥

अधिकार केवल कर्म करने का, नहीं फल में कभी ।
होना न तू फल-हेतु भी, मत छोड़ देना कर्म भी ॥ २.४७ ॥

आसक्ति सब तज सिद्धि और असिद्धि मान समान ही ।
योगस्थ होकर कर्म कर, है योग समता-ज्ञान ही ॥ २.४८ ॥

इस बुद्धियोग महान से सब कर्म अतिशय हीन हैं ।
इस बुद्धि की अर्जुन! शरण लो चाहते फल दीन हैं ॥ २.४९ ॥

जो बुद्धि-युत है पाप-पुण्यों में न पड़ता है कभी ।
बन योग-युत, है योग ही यह कर्म में कौशल सभी ॥ २.५० ॥

नित बुद्धि-युत हो कर्म के फल त्यागते मतिमान हैं ।
वे जन्म-बन्धन तोड़ पद पाते सदैव महान हैं ॥ २.५१ ॥

इस मोह के गंदले सलिल से पार मति होगी जभी ।
वैराग्य होगा सब विषय में जो सुना सुनना अभी ॥ २.५२ ॥

श्रुति-भ्रान्त बुद्धि समाधि में निश्चल अचल होगी जभी ।
हे पार्थ! योग समत्व होगा प्राप्त यह तुझको तभी ॥ २.५३ ॥

अर्जुन ने कहा --
केशव! किसे दृढ़-प्रज्ञजन अथवा समाधिस्थित कहें ।
थिर-बुद्धि कैसे बोलते, बैठें, चलें, कैसे रहें ॥ २.५४ ॥

श्रीभगवान ने कहा --
हे पार्थ! मन की कामना जब छोड़ता है जन सभी ।
हो आप आपे में मगन दृढ़-प्रज्ञ होता है तभी ॥ २.५५ ॥

सुख में न चाह, न खेद जो दुख में कभी अनुभव करे ।
थिर-बुद्धि वह मुनि, राग एवं क्रोध भय से जो परे ॥ २.५६ ॥

शुभ या अशुभ जो भी मिले उसमें न हर्ष न द्वेष ही ।
निःस्नेह जो सर्वत्र है, थिर-बुद्धि होता है वही ॥ २.५७ ॥

हे पार्थ! ज्यों कछुआ समेते अङ्ग चारों छोर से ।
थिर-बुद्धि जब यों इन्द्रियाँ सिमटें विषय की ओर से ॥ २.५८ ॥

होते विषय सब दूर हैं आहार जब जन त्यागता ।
रस किन्तु रहता, ब्रह्म को कर प्राप्त वह भी भागता ॥ २.५९ ॥

कौन्तेय! करते यत्न इन्द्रिय-दमन हित विद्वान हैं ।
मन किन्तु बल से खैंच लेती इन्द्रियाँ बलवान हैं ॥ २.६० ॥

उन इन्द्रियों को रोक, बैठे योगयुत मत्पर हुआ ।
आधीन जिसके इन्द्रियाँ, दृढ़प्रज्ञ वह नित नर हुआ ॥ २.६१ ॥

चिन्तन विषय का, सङ्ग विषयों में बढ़ाता है तभी ।
फिर संग से हो कामना, हो कामना से क्रोध भी ॥ २.६२ ॥

फिर क्रोध से है मोह, सुधि को मोह करता भ्रष्ट है ।
यह सुधि गए फिर बुद्धि विनशे, बुद्धि-विनशे नष्ट है ॥ २.६३ ॥

पर राग-द्वेष-विहीन सारी इन्द्रियाँ आधीन कर ।
फिर भोग करके भी विषय, रहता सदैव प्रसन्न नर ॥ २.६४ ॥

पाकर प्रसाद पवित्र जन के, दुःख कट जाते सभी ।
जब चित्त नित्य प्रसन्न रहता, बुद्धि दृढ़ होती तभी ॥ २.६५ ॥

रहकर अयुक्त न बुद्धि उत्तम भावना होती कहीं ।
बिन भावना नहिं शांति और अशांति में सुख है नहीं ॥ २.६६ ॥

सब विषय विचरित इन्द्रियों में, साथ मन जिसके रहे ।
वह बुद्धि हर लेती, पवन से नाव ज्यों जल में बहे ॥ २.६७ ॥

चहुँ ओर से इन्द्रिय-विषय से, इन्द्रियाँ जब दूर ही ।
रहतीं हटीं जिसकी सदा, दृढ़-प्रज्ञ होता है वही ॥ २.६८ ॥

सब की निशा तब जागता योगी पुरुष हे तात! है ।
जिसमें सभी जन जागते, ज्ञानी पुरुष की रात है ॥ २.६९ ॥

सब ओर से परिपूर्ण जलनिधि में सलिल जैसे सदा ।
आकर समाता, किन्तु अविचल सिन्धु रहता सर्वदा ॥
इस भाँति ही जिसमें विषय जाकर समा जाते सभी ।
वह शांति पाता है, न पाता काम-कामी जन कभी ॥ २.७० ॥

सब त्याग इच्छा कामना, जो जन विचरता नित्य ही ।
मद और ममता हीन होकर, शांति पाता है वही ॥ २.७१ ॥

यह पार्थ! ब्राह्मीस्थिति इसे पा नर न मोहित हो कभी ।
निर्वाण पद हो प्राप्त इसमें ठैर अन्तिम काल भी ॥ २.७२ ॥

दूसरा अध्याय समाप्त हुआ ॥ २ ॥

२.१९९ ॥

अर्जुन ने कहा --
यदि हे जनार्दन! कर्म से तुम बुद्धि कहते श्रेष्ठ हो ।
तो फिर भयंकर कर्म में मुझको लगाते क्यों कहो ॥ ३.१ ॥

उलझन भरे कह वाक्य, भ्रम-सा डालते भगवान हो ।
वह बात निश्चय कर कहो जिससे मुझे कल्याण हो ॥ ३.२ ॥

श्रीभगवान ने कहा --
पहले कही दो भाँति निष्ठा, ज्ञानियों की ज्ञान से ।
फिर योगियों की योग-निष्ठा, कर्मयोग विधान से ॥ ३.३ ॥

आरम्भ बिन ही कर्म के निष्कर्म हो जाते नहीं ।
सब कर्म ही के त्याग से भी सिद्धि जन पाते नहीं ॥ ३.४ ॥

बिन कर्म रह पाता नहीं कोई पुरुष पल भर कभी ।
हो प्रकृति-गुण आधीन करने कर्म पड़ते हैं सभी ॥ ३.५ ॥

कर्मेंद्रियों को रोक जो मन से विषय-चिन्तन करे ।
वह मूढ़ पाखण्डी कहाता दम्भ निज मन में भरे ॥ ३.६ ॥

जो रोक मन से इन्द्रियाँ आसक्ति बिन हो नित्य ही ।
कर्मेन्द्रियों से कर्म करता श्रेष्ठ जन अर्जुन! वही ॥ ३.७ ॥

बिन कर्म से नित श्रेष्ठ नियमित-कर्म करना धर्म है ।
बिन कर्म के तन भी न सधता कर नियत जो कर्म है ॥ ३.८ ॥

तज यज्ञ के शुभ कर्म, सारे कर्म बन्धन पार्थ! हैं ।
अतएव तज आसक्ति सब कर कर्म जो यज्ञार्थ हैं ॥ ३.९ ॥

विधि ने प्रजा के साथ पहले यज्ञ को रच के कहा ।
पूरे करे यह सब मनोरथ, वृद्धि हो इससे महा ॥ ३.१० ॥

मख से करो तुम तुष्ट सुरगण, वे करें तुमको सदा ।
ऐसे परस्पर तुष्ट हो, कल्याण पाओ सर्वदा ॥ ३.११ ॥

मख तृप्त हो सुर कामना पूरी करेंगे नित्य ही ।
उनका दिया उनको न दे, जो भोगता तस्कर वही ॥ ३.१२ ॥

जो यज्ञ में दे भाग खाते पाप से छुट कर तरें ।
तन हेतु जो पापी पकाते पाप वे भक्षण करें ॥ ३.१३ ॥

सम्पूर्ण प्राणी अन्न से हैं, अन्न होता वृष्टि से ।
यह वृष्टि होती यज्ञ से, जो कर्म की शुभ सृष्टि से ॥ ३.१४ ॥

फिर कर्म होते ब्रह्म से हैं, ब्रह्म अक्षर से कहा ।
यों यज्ञ में सर्वत्र-व्यापी ब्रह्म नित ही रम रहा ॥ ३.१५ ॥

चलता न जो इस भाँति चलते चक्र के अनुसार है ।
पापायु इन्द्रियलम्पटी वह व्यर्थ ही भू-भार है ॥ ३.१६ ॥

उसको न कोई लाभ है करने न करने से कहीं ।
हे पार्थ! प्राणीमात्र से उसको प्रयोजन है नहीं ॥ ३.१८ ॥

अतएव तज आसक्ति, कर कर्तव्य कर्म सदैव ही ।
यों कर्म जो करता परम पद प्राप्त करता है वही ॥ ३.१९ ॥

जनकादि ने भी सिद्धि पाई कर्म ऐसे ही किये ।
फिर लोकसंग्रह देख कर भी कर्म करना चाहिये ॥ ३.२० ॥

जो कार्य करता श्रेष्ठ जन करते वही हैं और भी ।
उसके प्रमाणित-पंथ पर ही पैर धरते हैं सभी ॥ ३.२१ ॥

अप्राप्त मुझको कुछ नहीं, जो प्राप्त करना हो अभी ।
त्रैलोक्य में करना न कुछ, पर कर्म करता मैं सभी ॥ ३.२२॥

आलस्य तजके पार्थ! मैं यदि कर्म में वरतूँ नहीं ।
सब भाँति मेरा अनुकरण ही नर करेंगे सब कहीं ॥ ३.२३॥

यदि छोड़ दूँ मैं कर्म करना, लोक सारा भ्रष्ट हो ।
मैं सर्व संकर का बनूँ कर्ता, सभी जग नष्ट हो ॥ ३.२४॥

ज्यों मूढ़ मानव कर्म करते नित्य कर्मासक्त हो ।
यों लोकसंग्रह-हेतु करता कर्म, विज्ञ विरक्त हो ॥ ३.२५॥

जो आत्मरत रहता निरन्तर, आत्म-तृप्त विशेष है ।
संतुष्ट आत्मा में, उसे करना नहीं कुछ शेष है ॥ ३.१७॥

ज्ञानी न डाले भेद कर्मासक्त की मति में कभी ।
वह योग-युत हो कर्म कर, उनसे कराये फिर सभी ॥ ३.२६॥

होते प्रकृति के ही गुणों से सर्व कर्म विधान से ।
मैं कर्म करता, मूढ़-मानव मानता अभिमान से ॥ ३.२७॥

गुण और कर्म विभाग के सब तत्व जो जन जानता ।
होता न वह आसक्त गुण का खेल गुण में मानता ॥ ३.२८॥

गुण कर्म में आसक्त होते प्रकृतिगुण मोहित सभी ।
उन मंद मूढ़ों को करे विचलित न ज्ञानी जन कभी ॥ ३.२९॥

अध्यात्म-मति से कर्म अर्पण कर मुझे आगे बढ़ो ।
फल-आश ममता छोड़कर निश्चिन्त होकर फिर लड़ो ॥ ३.३०॥

जो दोष-बुद्धि विहीन मानव नित्य श्रद्धायुक्त हैं ।
मेरे सुमत अनुसार करके कर्म वे नर मुक्त हैं ॥ ३.३१॥

जो दोष-दर्शी मूढ़मति मत मानते मेरा नहीं ।
वे सर्वज्ञान-विमूढ़ नर नित नष्ट जानों सब कहीं ॥ ३.३२॥

वर्ते सदा अपनी प्रकृति अनुसार ज्ञान-निधान भी ।
निग्रह करेगा क्या, प्रकृति अनुसार हैं प्राणी सभी ॥ ३.३३॥

अपने विषय में इन्द्रियों को राग भी है द्वेष भी ।
ये शत्रु हैं, वश में न इनके चाहिये आना कभी ॥ ३.३४॥

ऊँचे सुलभ पर-धर्म से निज विगुण धर्म महान है ।
परधर्म भयप्रद, मृत्यु भी निज धर्म में कल्याण है ॥ ३.३५॥

अर्जुन ने कहा --
भगवन! कहो करना नहीं नर चाहता जब आप है ।
फिर कौन बल से खींच कर उससे कराता पाप है ॥ ३.३६॥

श्रीभगवान ने कहा --
पैदा रजोगुण से हुआ यह काम ही यह क्रोध ही ।
पेटू महापापी कराता पाप है वैरी यही ॥ ३.३७॥

ज्यों गर्भ झिल्ली से, धुएँ से आग, शीशा धूल से ।
यों काम से रहता ढका है, ज्ञान भी (आमूल) से ॥ ३.३८॥

यह काम शत्रु महान, नित्य अतृप्त अग्नि समान है ।
इससे ढका कौन्तेय! सारे ज्ञानियों का ज्ञान है ॥ ३.३९॥

मन, इन्द्रियों में, बुद्धि में यह वास वैरी नित करे ।
इनके सहारे ज्ञान ढक, जीवात्म को मोहित करे ॥ ३.४०॥

इन्द्रिय-दमन करके करो फिर नाश शत्रु महान का ।
पापी सदा यह नाशकारी ज्ञान का विज्ञान का ॥ ३.४१॥

हैं श्रेष्ठ इन्द्रिय, इन्द्रियों से पार्थ! मन मानो परे ।
मन से परे फिर बुद्धि, आत्मा बुद्धि से जानो परे ॥ ३.४२॥

यों बुद्धि से आत्मा परे है जान इसके ज्ञान को ।
मन वश्य करके जीत दुर्जय काम शत्रु महान को ॥ ३.४३॥

तीसरा अध्याय समाप्त हुआ ॥ ३॥
३.९९९॥

श्रीभगवान ने कहा --
मैंने कहा था सूर्य के प्रति योग यह अव्यय महा ।
फिर सूर्य ने मनु से कहा इक्ष्वाकु से मनु ने कहा ॥ ४.१॥

यों राजऋषि परिचित हुए सुपरम्परागत योग से ।
इस लोक में वह मिट गया बहु काल के संयोग से ॥ ४.२॥

मैंने समझकर यह पुरातन योग-श्रेष्ठ रहस्य है ।
तुझसे कहा सब क्योंकि तू मम भक्त और वयस्य है ॥ ४.३॥

अर्जुन ने कहा --
पैदा हुए थे सूर्य पहले आप जन्मे हैं अभी ।
मैं मानलूं कैसे कहा यह आपने उनसे कभी ॥ ४.४॥

श्रीभगवान ने कहा --
मैं और तू अर्जुन! अनेकों बार जन्मे हैं कहीं ।
सब जानता हूँ मैं परंतप! ज्ञान तुझको है नहीं ॥ ४.५॥

यद्यपि अजन्मा, प्राणियों का ईश मैं अव्यय परम ।
पर निज प्रकृति आधीन कर, लूं जन्म माया से स्वयम ॥ ४.६॥

हे पार्थ! जब जब धर्म घटता और बढ़ता पाप ही ।
तब तब प्रकट मैं रूप अपना नित्य करता आप ही ॥ ४.७॥

सज्जन जनों का त्राण करने दुष्ट-जन-संहार-हित ।
युग-युग प्रकट होता स्वयं मैं, धर्म के उद्धार हित ॥ ४.८॥

जो दिव्य मेरा जन्म कर्म रहस्य से सब जान ले ।
मुझमें मिले तन त्याग अर्जुन! फिर न वह जन जन्म ले ॥ ४.९॥

मन्मय ममाश्रित जन हुए भय क्रोध राग-विहीन हैं ।
तप यज्ञ से हो शुद्ध बहु मुझमें हुए लवलीन हैं ॥ ४.१०॥

जिस भाँति जो भजते मुझे उस भाँति दूं फल-भोग भी ।
सब ओर से ही वर्तते मम मार्ग में मानव सभी ॥ ४.११॥

इस लोक में करते फलेच्छुक देवता-आराधना ।
तत्काल होती पूर्ण उनकी कर्म फल की साधना ॥ ४.१२॥

मैंने बनाये कर्म गुण के भेद से चहुँ वर्ण भी ।
कर्ता उन्हों का जान तू, अव्यय अकर्ता मैं सभी ॥ ४.१३॥

फल की न मुझको चाह बँधता मैं न कर्मों से कहीं ।
यों जानता है जो मुझे वह कर्म से बँधता नहीं ॥ ४.१४॥

यह जान कर्म मुमुक्षपुरुषों ने सदा पहले किये ।
प्राचीन पूर्वज-कृत करो अब कर्म तुम इस ही लिये ॥ ४.१५॥

क्या कर्म और अकर्म है भूले यही विद्वान भी ।
जो जान पापों से छुटो, वह कर्म कहता हूँ सभी ॥ ४.१६॥

हे पार्थ! कर्म अकर्म और विकर्म का क्या ज्ञान है ।
यह जान लो सब, कर्म की गति गहन और महान है ॥ ४.१७॥

जो कर्म में देखे अकर्म, अकर्म में भी कर्म ही ।
है योग-युत ज्ञानी वही, सब कर्म करता है वही ॥ ४.१८॥

ज्ञानी उसे पंडित कहें उद्योग जिसके हों सभी ।
फल-वासना बिन, भस्म हों ज्ञानाग्नि में सब कर्म भी ॥ ४.१९॥

जो है निराश्रय तृप्त नित, फल कामनाएँ तज सभी ।
वह कर्म सब करता हुआ, कुछ भी नहीं करता कभी ॥ ४.२०॥

जो कामना तज, सर्वसंग्रह त्याग, मन वश में करे ।
केवल करे जो कर्म दैहिक, पाप से है वह परे ॥ ४.२१॥

बिन द्वेष द्वन्द्व असिद्धि सिद्धि समान हैं जिसको सभी ।
जो है यदृच्छा-लाभ-तृप्त न बद्ध वह कर कर्म भी ॥ ४.२२॥

चित ज्ञान में जिनका सदा जो मुक्त संग-विहीन हों ।
यज्ञार्थ करते कर्म उनके सर्व कर्म विलीन हों ॥ ४.२३॥

मख ब्रह्म से, ब्रह्माग्नि से, हवि ब्रह्म, अर्पण ब्रह्म है ।
सब कर्म जिसको ब्रह्म, करता प्राप्त वह जन ब्रह्म है ॥ ४.२४॥

योगी पुरुष कुछ दैव-यज्ञ उपासना में मन धरें ।
ब्रह्माग्नि में कुछ यज्ञ द्वारा यज्ञ ज्ञानी जन करें ॥ ४.२५॥

कुछ होंमते श्रोत्रादि इन्द्रिय संयमों की आग में ।
इन्द्रिय-अनल में कुछ विषय शब्दादि आहुति दे रमें ॥ ४.२६॥

कर आत्म-संयमरूप योगानल प्रदीप्त सुज्ञान से ।
कुछ प्राण एवं इन्द्रियों के कर्म होमें ध्यान से ॥ ४.२७॥

कुछ संयमी जन यज्ञ करते योग, तप से, दान से ।
स्वाध्याय से करते यती, कुछ यज्ञ करते ज्ञान से ॥ ४.२८॥

कुछ प्राण में होमें अपान व प्राणवायु अपान में ।
कुछ रोक प्राण अपान प्राणायाम ही के ध्यान में ॥ ४.२९॥

कुछ मिताहारी हवन करते, प्राण ही में प्राण हैं ।
क्षय पाप यज्ञों से किये, ये यज्ञ-विज्ञ महान हैं ॥ ४.३०॥

जो यज्ञ का अवशेष खाते, ब्रह्म को पाते सभी ।
परलोक तो क्या, यज्ञ-त्यागी को नहीं यह लोक भी ।४.३१॥

बहु भाँति से यों ब्रह्म-मुख में यज्ञ का विस्तार है ।
होते सभी हैं कर्म से, यह जान कर निस्तार है ॥ ४.३२॥

धन-यज्ञ से समझो सदा ही ज्ञान-यज्ञ प्रधान है ।
सब कर्म का नित ज्ञान में ही पार्थ! पर्यवसान है ॥ ४.३३॥

सेवा विनय प्रणिपात पूर्वक प्रश्न पूछो ध्यान से ।
उपदेश देंगे ज्ञान का तब तत्त्व-दर्शी ज्ञान से ॥ ४.३४॥

होगा नहीं फिर मोह ऐसे श्रेष्ठ शुद्ध विवेक से ।
तब ही दिखेंगे जीव मुझमें और तुझमें एक से ॥ ४.३५॥

तेरा कहीं यदि पापियों से घोर पापाचार हो ।

इस ज्ञान नय्या से सहज में पाप सागर पार हो ॥ ४.३६॥

ज्यों पार्थ! पावक प्रज्ज्वलित ईधन जलाती है सदा ।
ज्ञानाग्नि सारे कर्म करती भस्म यों ही सर्वदा ॥ ४.३७॥

इस लोक में साधन पवित्र न और ज्ञान समान है ।
योगी पुरुष पाकर समय पाता स्वयं ही ज्ञान है ॥ ४.३८॥

जो कर्म-तत्पर है जितेन्द्रिय और श्रद्धावान है ।
वह प्राप्त करके ज्ञान पाता शीघ्र शान्ति महान है ॥ ४.३९॥

जिसमें न श्रद्धा ज्ञान, संशयवान डूबे सब कहीं ।
उसके लिये सुख, लोक या परलोक कुछ भी है नहीं ॥ ४.४०॥

तज योग-बल से कर्म, काटे ज्ञान से संशय सभी ।
उस आत्म-ज्ञानी को न बांधे कर्म बन्धन में कभी ॥ ४.४१॥

अज्ञान से जो भ्रम हृदय में, काट ज्ञान कृपान से ।
अर्जुन खड़ा हो युद्ध कर, हो योग आश्रित ज्ञान से ॥ ४.४२॥

चौथा अध्याय समाप्त हुआ ॥ ४॥

४.९९९॥

अर्जुन ने कहा --
कहते कभी हो योग को उत्तम कभी संन्यास को ।
के कृष्ण! निश्चय कर कहो वह एक जिससे श्रेय हो ॥ ५.१॥

श्रीभगवान ने कहा --
संन्यास एवं योग दोनों मोक्षकारी हैं महा ।
संन्यास से पर कर्मयोग महान हितकारी कहा ॥ ५.२॥

है नित्य संयासी न जिसमें द्वेष या इच्छा रही ।
तज द्वन्द्व सुख से सर्व बन्धन-मुक्त होता है वही ॥ ५.३॥

है 'सांख्य' 'योग' विभिन्न कहते मूढ़, नहिं पण्डित कहें ।
पाते उभय फल एक के जो पूर्ण साधन में रहें ॥ ५.४॥

पाते सुगति जो सांख्य-ज्ञानी कर्म-योगी भी वही ।
जो सांख्य, योग समान जाने तत्व पहिचाने सही ॥ ५.५॥

निष्काम-कर्म-विहीन हो, पान कठिन संन्यास है ।
मुनि कर्म-योगी शीघ्र करता ब्रह्म में ही वास है ॥ ५.६॥

जो योग युत है, शुद्ध मन, निज आत्मयुत देखे सभी ।
वह आत्म-इन्द्रिय जीत जन, नहिं लिप्त करके कर्म भी ॥ ५.७॥

तत्त्वज्ञ समझे युक्त मैं करता न कुछ खाता हुआ ।
पाता निरखता सूँघता सुनता हुआ जाता हुआ ॥ ५.८॥

छूते व सोते साँस लेते छोड़ते या बोलते ।
वर्ते विषय में इन्द्रियाँ दृग बन्द करते खोलते ॥ ५.९॥

आसक्ति तज जो ब्रह्म-अर्पण कर्म करता आप है ।
जैसे कमल को जल नहीं लगता उसे यों पाप है ।५.१०॥

मन, बुद्धि, तन से और केवल इन्द्रियों से भी कभी ।
तज संग, योगी कर्म करते आत्म-शोधन-हित सभी ॥ ५.११॥

फल से सदैव विरक्त हो चिर-शान्ति पाता युक्त है ।
फल-कामना में सक्त हो बँधता सदैव अयुक्त है ॥ ५.१२॥

सब कर्म तज मन से जितेन्द्रिय जीवधारी मोद से ।
बिन कुछ कराये या किये नव-द्वार-पुर में नित बसे ॥ ५.१३॥

कतृत्व कर्म न, कर्म-फल-संयोग जगदीश्वर कभी ।
रचता नहीं अर्जुन! सदैव स्वभाव करता है सभी ॥ ५.१४॥

ईश्वर न लेता है किसी का पुण्य अथवा पाप ही ।
है ज्ञान माया से ढका यों जीव मोहित आप ही ॥ ५.१५॥

पर दूर होता ज्ञान से जिनका हृदय-अज्ञान है ।
करता प्रकाशित 'तत्त्व' उनका ज्ञान सूर्य समान है ॥ ५.१६॥

तन्निष्ठ तत्पर जो उसी में, बुद्धि मन धरते वहीं ।
वे ज्ञान से निष्पाप होकर जन्म फिर लेते नहीं ॥ ५.१७॥

विद्याविनय-युत-द्विज, श्वपच, चाहे गऊ, गज, श्वान है ।
सबके विषय में ज्ञानियों की दृष्टि एक समान है ॥ ५.१८॥

जो जन रखें मन साम्य में वे जीत लेते जग यहीं ।
पर ब्रह्म सम निर्दोष है, यों ब्रह्म में वे सब कहीं ॥ ५.१९॥

प्रिय वस्तु पा न प्रसन्न, अप्रिय पा न जो सुख-हीन है ।
निर्मोह दृढ-मति ब्रह्मवेत्ता ब्रह्म में लवलीन है ॥ ५.२०॥

नहिं भोग-विषयासक्त जो जन आत्म-सुख पाता वही ।
वह ब्रह्मयुत, अनुभव करे अक्षय महासुखनित्य ही ॥ ५.२१॥

जो बाहरी संयोग से हैं भोग दुखकारण सभी ।
है आदि उनका अन्त, उनमें विज्ञ नहिं रमते कभी ॥ ५.२२॥

जो काम-क्रोधावेग सहता है मरण पर्यन्त ही ।
संसार में योगी वही नर सुख सदा पाता वही ॥ ५.२३॥

जो आत्मरत अन्तः सुखी है ज्योति जिसमें व्याप्त है ।
वह युक्त ब्रह्म-स्वरूप हो निर्वाण करता प्राप्त है ॥ ५.२४॥

निष्पाप जो कर आत्म-संयम द्वन्द्व-बुद्धि-विहीन हैं ।
रत जीवहित में, ब्रह्म में होते वही जन लीन हैं ॥ ५.२५॥

यति काम क्रोध विहीन जिनमें आत्म-ज्ञान प्रधान है ।
जीता जिन्होंने मन उन्हें सब ओर ही निर्वाण है ॥ ५.२६॥

धर दृष्टि भृकुटी मध्य में तज बाह्य विषयों को सभी ।
नित नासिकाचारी किये सम प्राण और अपान भी ॥ ५.२७॥

वश में करे मन बुद्धि इन्द्रिय मोक्ष में जो युक्त है ।
भय क्रोध इच्छा त्याग कर वह मुनि सदा ही मुक्त है ॥ ५.२८॥

जाने मुझे तप यज्ञ भोक्ता लोक स्वामी नित्य ही ।
सब प्राणियों का मित्र जाने शान्ति पाता है वही ॥ ५.२९॥

पांचवा अध्याय समाप्त हुआ ॥ ५॥

५.९९९॥

श्रीभगवान ने कहा --
फल-आश तज, कर्तव्य कर्म सदैव जो करता, वही ।
योगी व संन्यासी, न जो बिन अग्नि या बिन कर्म ही ॥ ६.१॥

वह योग ही समझो जिसे संन्यास कहते हैं सभी ।
संकल्प के संन्यास बिन बनता नहीं योगी कभी ॥ ६.२॥

जो योग-साधन चाहता मुनि, हेतु उसका कर्म है ।
हो योग में आरूढ़, उसका हेतु उपशम धर्म है ॥ ६.३॥

जब दूर विषयों से, न हो आसक्त कर्मों में कभी ।
संकल्प त्यागे सर्व, योगारूढ़ कहलाता तभी ॥ ६.४॥

उद्धार अपना आप कर, निज को न गिरने दे कभी ।
वह आप ही है शत्रु अपना, आप ही है मित्र भी ॥ ६.५॥

जो जीत लेता आपको वह बन्धु अपना आप ही ।
जाना न अपने को स्वयं रिपु सी करे रिपुता वही ॥ ६.६॥

अति शान्त जन, मनजीत का आत्मा सदैव समान है ।
सुख-दुःख, शीतल-ऊष्ण अथवा मान या अपमान है ॥ ६.७॥

कूटस्थ इन्द्रियजीत जिसमें ज्ञान है विज्ञान है ।
वह युक्त जिसको स्वर्ण, पत्थर, धूल एक समान है ॥ ६.८॥

वैरी, सुहृद, मध्यस्थ, साधु, असाधु, जिनसे द्वेष है ।
बान्धव, उदासी, मित्र में सम बुद्धि पुरुष विशेष है ॥ ६.९॥

चित-आत्म-संयम नित्य एकाकी करे एकान्त में ।
तज आश-संग्रह नित निरन्तर योग में योगी रमें ॥ ६.१०॥

आसन धरे शुचि-भूमि पर थिर, ऊँच नीच न ठौर हो ।
कुश पर बिछा मृगछाल, उस पर वस्त्र पावन और हो ॥ ६.११॥

एकाग्र कर मन, रोक इन्द्रिय चित्त के व्यापार को ।
फिर आत्म-शोधन हेतु बैठे नित्य योगाचार को ॥ ६.१२॥

होकर अचल, दृढ़, शीश ग्रीवा और काया सम करे ।
दिशि अन्य अवलोके नहीं नासाग्र पर ही दृग धरे ॥ ६.१३॥

बन ब्रह्मचारी शान्त, मन-संयम करे भय-मुक्त हो ।
हो मत्परायण चित्त मुझमें ही लगाकर युक्त हो ॥ ६.१४॥

यों जो नियत-चित युक्त योगाभ्यास में रत नित्य ही ।
मुझमें टिकी निर्वाण परमा शांति पाता है वही ॥ ६.१५॥

यह योग अति खाकर न सधता है न अति उपवास से ।
सधता न अतिशय नींद अथवा जागरण के त्रास से ॥ ६.१६॥

जब युक्त सोना जागना आहार और विहार हों ।
हो दुःखहारी योग जब परिमित सभी व्यवहार हों ॥ ६.१७॥

संयत हुआ चित आत्म ही में नित्य रम रहता जभी ।
रहती न कोई कामना नर युक्त कहलाता तभी ॥ ६.१८॥

अविचल रहे बिन वायु दीपक-ज्योति जैसे नित्य ही ।
है चित्तसंयत योग-साधक युक्त की उपमा वही ॥ ६.१९॥

रमता जहाँ चित योग-सेवन से निरुद्ध सदैव है ।
जब देख अपने आपको संतुष्ट आत्मा में रहे ॥ ६.२०॥

इन्द्रिय-अगोचर बुद्धि-गम्य अनन्त सुख अनुभव करे ।
जिसमें रमा योगी न डिगता तत्त्व से तिल भर परे ॥ ६.२१॥

पाकर जिसे जग में न उत्तम लाभ दिखता है कहीं ।
जिसमें जमे जन को कठिन दुख भी डिगा पाता नहीं ॥ ६.२२॥

कहते उसे ही योग जिसमें सर्वदुःख वियोग है ।
दृढ़-चित्त होकर साधने के योग्य ही यह योग है ॥ ६.२३॥

संकल्प से उत्पन्न सारी कामनाएँ छोड़के ।
मनसे सदा सब ओर से ही इन्द्रियों को मोड़के ॥ ६.२४॥

हो शान्त क्रमशः धीर मति से आत्म-सुस्थिर मन करे ।
कोई विषय का फिर न किंचित चित्त में चिन्तन करे ॥ ६.२५॥

यह मन चपल अस्थिर जहाँ से भाग कर जाये परे ।
रोके वहीं से और फिर आधीन आत्मा के करे ॥ ६.२६॥

जो ब्रह्मभूत, प्रशान्त-मन, जन रज-रहित निष्पाप है ।
उस कर्मयोगी को परम सुख प्राप्त होता आप है ॥ ६.२७॥

निष्पाप हो इस भाँति जो करता निरन्तर योग है ।
वह ब्रह्म-प्राप्ति-स्वरूप-सुख करता सदा उपभोग है ॥ ६.२८॥

युक्तात्म समदर्शी पुरुष सर्वत्र ही देखे सदा ।
मैं प्राणियों में और प्राणीमात्र मुझमें सर्वदा ॥ ६.२९॥

जो देखता मुझमें सभी को और मुझको सब कहीं ।
मैं दूर उस नर से नहीं वह दूर मुझसे है नहीं ॥ ६.३०॥

एकत्व-मति से जान जीवों में मुझे नर नित्य ही ।
भजता रहे जो, सर्वथा कर कर्म मुझमें है वही ॥ ६.३१॥

सुख-दुःख अपना और औरों का समस्त समान है ।
जो जानता अर्जुन! वही योगी सदैव प्रधान है ॥ ६.३२॥

अर्जुन ने कहा --
जो साम्य-मति से प्राप्य तुमने योग मधुसूदन! कहा ।
मन की चपलता से महा अस्थिर मुझे वह दिख रहा ॥ ६.३३॥

हे कृष्ण! मन चञ्चल हठी बलवान है दृढ़ है घना ।
मन साधना दुष्कर दिखे जैसे हवा का बाँधना ॥ ६.३४॥

श्री भगवान ने कहा --
चंचल असंशय मन महाबाहो! कठिन साधन घना ।
अभ्यास और विराग से पर पार्थ! होती साधना ॥ ६.३५॥

जीता न जो मन, योग है दुष्प्राप्य मत मेरा यही ।
मन जीत कर जो यत्न करता प्राप्त करता है वही ॥ ६.३६॥

अर्जुन ने कहा --
जो योग-विचलित यत्नहीन परन्तु श्रद्धावान हो ।
वह योग-सिद्धि न प्राप्त कर, गति कौन सी पाता कहो? ६.३७॥

मोहित निराश्रय, ब्रह्म-पथ में हो उभय पथ-भ्रष्ट क्या ।
वह बादलों-सा छिन्न हो, होता सदैव विनष्ट क्या ? ६.३८॥

हे कृष्ण! करुणा कर सकल सन्देह मेरा मेटिये ।
तज कर तुम्हें है कौन यह भ्रम दूर करने के लिये ? ६.३९॥

श्रीभगवान ने कहा --
इस लोक में परलोक में वह नष्ट होता है नहीं ।
कल्याणकारी-कर्म करने में नहीं दुर्गति कहीं ॥ ६.४०॥

शुभ लोक पाकर पुण्यवानों का, रहे वर्षों वहीं ।
फिर योग-विचलित जन्मता श्रीमान शुचि के घर कहीं ॥ ६.४१॥

या जन्म लेता श्रेष्ठ ज्ञानी योगियों के वंश में ।
दुर्लभ सदा संसार में है जन्म ऐसे अंश में ॥ ६.४२॥

पाता वहाँ फिर पूर्व-मति-संयोग वह नर-रत्न है ।
उस बुद्धि से फिर सिद्धि के करता सदैव प्रयत्न है ॥ ६.४३॥

हे पार्थ! पूर्वाभ्यास से खिंचता उधर लाचार हो ।
हो योग-इच्छुक वेद-वर्णित कर्म-फल से पार हो ॥ ६.४४॥

अति यत्न से वह योगसेवी सर्वपाप-विहीन हो ।
बहु जन्म पीछे सिद्ध होकर परम गति में लीन हो ॥ ६.४५॥

सारे तपस्वी। ज्ञानियों से, कर्मनिष्ठों से सदा ।
है श्रेष्ठ योगी, पार्थ! हो इस हेतु योगी सर्वदा ॥ ६.४६॥

सब योगियों में मानता मैं युक्ततम योगी वही ।
श्रद्धा-सहित मम ध्यान धर भजता मुझे जो नित्य ही ॥ ६.४७॥

छठा अध्याय समाप्त हुआ ॥ ६॥

६.९९९॥

श्रीभगवान ने कहा --
मुझमें लगा कर चित्त मेरे आसरे कर योग भी ।
जैसा असंशय पूर्ण जानेगा मुझे वह सुन सभी ॥ ७.१॥

विज्ञान-युत वह ज्ञान कहता हूँ सभी विस्तार में ।
जो जान कर कुछ जानना रहता नहीं संसार में ॥ ७.२॥

कोई सहस्रों मानवों में सिद्धि करना ठानता ।
उन यत्नशीलों में मुझे कोई यथावत जानता ॥ ७.३॥

पृथ्वी, पवन, जल, तेज, नभ, मन, अहंकार व बुद्धि भी ।
इन आठ भागों में विभाजित है प्रकृति मेरी सभी ॥ ७.४॥

हे पार्थ! वह 'अपरा' प्रकृति का जान लो विस्तार है ।
फिर है 'परा' यह जीव जो संसार का आधार है ॥ ७.५॥

उत्पन्न दोनों से इन्हीं से जीव हैं जग के सभी ।
मैं मूल सब संसार का हूँ और मैं ही अन्त भी ॥ ७.६॥

मुझसे परे कुछ भी नहीं संसार का विस्तार है ।
जिस भांति माला में मणी, मुझमें गुथा संसार है ॥ ७.७॥

आकाश में ध्वनि, नीर में रस, वेद में ओंकार हूँ ।
पौरुष पुरुष में, चाँद सूरज में प्रभामय सार हूँ ॥ ७.८॥

शुभ गन्ध वसुधा में सदा मैं प्राणियों में प्राण हूँ ।
मैं अग्नि में हूँ तेज, तपियों में तपस्या ज्ञान हूँ ॥ ७.९॥

हे पार्थ! जीवों का सनातन बीज हूँ, आधार हूँ ।
तेजस्वियों में तेज, बुध में बुद्धि का भण्डार हूँ ॥ ७.१०॥

हे पार्थ! मैं कामादि राग-विहीन बल बलवान का ।
मैं काम भी हूँ धर्म के अविरुद्ध विद्यावान का ॥ ७.११॥

सत और रज, तम भाव मुझसे ही हुए हैं ये सभी ।
मुझमें सभी ये किन्तु मैं उनमें नहीं रहता कभी ॥ ७.१२॥

इन त्रिगुण भावों में सभी भूला हुआ संसार है ।
जाने न अव्यय-तत्त्व मेरा जो गुणों से पार है ॥ ७.१३॥

यह त्रिगुणदैवी घोर माया अगम और अपार है ।
आता शरण मेरी वही जाता सहज में पार है ॥ ७.१४॥

पापी, नराधम, ज्ञान माया ने हरा जिनका सभी ।
वे मूढ़ आसुर बुद्धि-वश मुझको नहीं भजते कभी ॥ ७.१५॥

अर्जुन! मुझे भजता सुकृति-समुदाय चार प्रकार का ।
जिज्ञासु, ज्ञानीजन, दुखी-मन, अर्थ-प्रिय संसार का ॥ ७.१६॥

नित-युक्त ज्ञानी श्रेष्ठ, जो मुझमें अनन्यासक्त है ।
मैं क्योंकि ज्ञानी को परम प्रिय, प्रिय मुझे वह भक्त है ॥ ७.१७॥

वे सब उदार, परन्तु मेरा प्राण ज्ञानी भक्त है ।
वह युक्त जन, सर्वोच्च-गति मुझमें सदा अनुरक्त है ॥ ७.१८॥

जन्मान्तरों में जानकर, 'सब वासुदेव यथार्थ है' ।
ज्ञानी मुझे भजता, सुदुर्लभ वह महात्मा पार्थ है ॥ ७.१९॥

निज प्रकृति-प्रेरित, कामना द्वारा हुए हत ज्ञान से ।
कर नियम भजते विविध विध नर अन्य देव विधान से ॥ ७.२०॥

जो जो कि जिस जिस रूप की पूजा करे नर नित्य ही ।
उस भक्त की करता उसी में, मैं अचल श्रद्धा वही ॥ ७.२१॥

उस देवता को पूजता फिर वह, वही श्रद्धा लिये ।
निज इष्ट-फल पाता सकल, निर्माण जो मैने किये ॥ ७.२२॥

ये मन्दमति नर किन्तु पाते, अन्तवत फल सर्वदा ।
सुर-भक्त सुर में, भक्त मेरे, आ मिलें मुझमें सदा ॥ ७.२३॥

अव्यक्त मुझको व्यक्त, मानव मूढ़ लेते मान हैं ।
अविनाशि अनुपम भाव मेरा वे न पाते जान हैं ॥ ७.२४॥

निज योगमाया से ढका सबको न मैं, दिखता कहीं ।
अव्यय अजन्मा मैं, मुझे पर मूढ़ नर जानें नहीं ॥ ७.२५॥

होंगे, हुए हैं, जीव जो मुझको सभी का ज्ञान है ।
इनको किसी को किन्तु कुछ मेरी नहीं पहिचान है ॥ ७.२६॥

उत्पन्न इच्छा द्वेष से जो द्वन्द्व जग में व्याप्त हैं ।
उनसे परंतप ! सर्व प्राणी मोह करते प्राप्त हैं ॥ ७.२७॥

पर पुण्यवान मनुष्य जिनके छुट गये सब पाप हैं ।
दृढ़ द्वन्द्व-मोह-विहीन हो भजते मुझे वे आप हैं ॥ ७.२८॥

करते ममाश्रित जो जरा-मृति-मोक्ष के हित साधना ।
वे जानते हैं ब्रह्म, सब अध्यात्म, कर्म महामना ॥ ७.२९॥

अधि-भूत, दैव व यज्ञ-युत, जो विज्ञ मुझको जानते ॥
वे युक्त-चित मरते समय में भी मुझे पहिचानते ॥ ७.३०॥

सातवां अध्याय समाप्त हुआ ॥ ७॥

७.९९९॥

अर्जुन ने कहा --
हे कृष्ण! क्या वह ब्रह्म? क्या अध्यात्म है? क्या कर्म है?
अधिभूत कहते हैं किसे? अधिदेव का क्या मर्म है ? ८.१॥

इस देह में अधियज्ञ कैसे और किसको मानते ?
मरते समय कैसे जितेन्द्रिय जन तुम्हें पहिचानते ? ८.२॥

श्रीभगवान ने कहा --
अक्षर परम वह ब्रह्म है, अध्यात्म जीव स्वभाव ही ।
जो भूतभावोद्भव करे व्यापार कर्म कहा वही ॥ ८.३॥

अधिभूत नश्वर भाव है, चेतन पुरुष अधिदैव ही ।
अधियज्ञ मैं सब प्राणियों के देह बीच सदैव ही ॥ ८.४॥

तन त्यागता जो अन्त में मेरा मनन करता हुआ ।
मुझमें असंशय नर मिले वह ध्यान यों धरता हुआ ॥ ८.५॥

अन्तिम समय तन त्यागता जिस भाव से जन व्याप्त हो ।
उसमें रंगा रहकर सदा, उस भाव ही को प्राप्त हो ॥ ८.६॥

इस हेतु मुझको नित निरन्तर ही समर कर युद्ध भी ।
संशय नहीं, मुझमें मिले, मन बुद्धि मुझमें धर सभी ॥ ८.७॥

अभ्यास-बल से युक्त योगी चित्त अपना साध के ।
उत्तम पुरुष को प्राप्त होता है उसे आराध के ॥ ८.८॥

सर्वज्ञ शास्ता सूक्ष्मतम आदित्य-सम तम से परे ।
जो नित अचिन्त्य अनादि सर्वाधार का चिन्तन करे ॥ ८.९॥

कर योग-बल से प्राण भृकुटी-मध्य अन्तिम काल में ।
निश्चल हुआ वह भक्त मिलता दिव्य पुरुष विशाल में ॥ ८.१०॥

अक्षर कहें वेदज्ञ, जिसमें राग तज यति जन जमें ।
हों ब्रह्मचारी जिसलिये, वह पद सुनो संक्षेप में ॥ ८.११॥

सब इन्द्रियों को साधकर निश्चल हृदय में मन धरे ।
फिर प्राण मस्तक में जमा कर धारणा योगी करे ॥ ८.१२॥

मेरा लगाता ध्यान कहता ॐ अक्षर ब्रह्म ही ।
तन त्याग जाता जीव जो पाता परम गति है वही ॥ ८.१३॥

भजता मुझे जो जन सदैव अनन्य मन से प्रीति से ।
निज युक्त योगी वह मुझे पाता सरल-सी रीति से ॥ ८.१४॥

पाए हुए हैं सिद्धि-उत्तम जो महात्मा-जन सभी ।
पाकर मुझे दुख-धाम नश्वर-जन्म नहिं पाते कभी ॥ ८.१५॥

विधिलोक तक जाकर पुनः जन जन्म पाते हैं यहीं ।
पर पा गए अर्जुन! मुझे वे जन्म फिर पाते नहीं ॥ ८.१६॥

दिन-रात ब्रह्मा की, सहस्रों युग बड़ी जो जानते ।
वे ही पुरुष दिन-रैन की गति ठीक हैं पहिचानते ॥ ८.१७॥

जब हो दिवस अव्यक्त से सब व्यक्त होते हैं तभी ।
फिर रात्रि होते ही उसी अव्यक्त में लय हों सभी ॥ ८.१८॥

होता विवश सब भूत-गण उत्पन्न बारम्बार है ।
लय रात्रि में होता दिवस में जन्म लेता धार है ॥ ८.१९॥

इससे परे फिर और ही अव्यक्त नित्य-पदार्थ है ।
सब जीव विनशे भी नहीं वह नष्ट होता पार्थ है ॥ ८.२०॥

कहते परम गति हैं जिसे अव्यक्त अक्षर नाम है ।
पाकर जिसे लौटें न फिर मेरा वही पर धाम है ॥ ८.२१॥

सब जीव जिसमें हैं सकल संसार जिससे व्याप्त है ।
वह पर-पुरुष होता अनन्य सुभक्ति से ही प्राप्त है ॥ ८.२२॥

वह काल सुन, तन त्याग जिसमें लौटते योगी नहीं ।
वह भी कहूंगा काल जब मर लौट कर आते यहीं ॥ ८.२३॥

दिन, अग्नि, ज्वाला, शुक्लपक्ष, षट उत्तरायण मास में ।
तन त्याग जाते ब्रह्मवादी, ब्रह्म ही के पास में ॥ ८.२४॥

निशि, धूम्र में मर कृष्णपक्ष, षट दक्षिणायन मास में ।
नर चन्द्रलोक विशाल में बस फिर फँसे भव-त्रास में ॥ ८.२५॥

ये शुक्ल, कृष्ण सदैव दो गति विश्व की ज्ञानी कहें ।
दे मुक्ति पहली, दूसरी से लौट फिर जग में रहें ॥ ८.२६॥

ये मार्ग दोनों जान, योगी मोह में पड़ता नहीं ।
इस हेतु अर्जुन! योग-युत सब काल में हो सब कहीं ॥ ८.२७॥

जो कुछ कहा है पुण्यफल, मख वेद से तप दान से ।
सब छोड़ आदिस्थान ले, योगी पुरुष इस ज्ञान से ॥ ८.२८॥

आठवां अध्याय समाप्त हुआ ॥ ८॥

८.९९९॥

श्रीभगवान ने कहा --
अब दोषदर्शी तू नहीं यों, गुप्त, सह-विज्ञान के ।
वह ज्ञान कहता हूँ, अशुभ से मुक्त हो जन जान के ॥ ९.१॥

यह राजविद्या, परम-गुप्त, पवित्र, उत्तम-ज्ञान है ।
प्रत्यक्ष फलप्रद, धर्मयुत, अव्यय, सरल, सुख-खान है ॥ ९.२॥

श्रद्धा न जिनको पार्थ है इस धर्म के शुभ सार में ।

मुझको न पाकर लौट आते मृत्युमय संसार में ॥ ९.३॥

अव्यक्त अपने रूप से जग व्याप्त मैं करता सभी ।
मुझमें सभी प्राणी समझ पर मैं नहीं उनमें कभी ॥ ९.४॥

मुझमें नहीं हैं भूत देखो योग-शक्ति-प्रभाव है ।
उत्पन्न करता पालता उनसे न किन्तु लगाव है ॥ ९.५॥

सब ओर रहती वायु है आकाश में जिस भाँति से ।
मुझमें सदा ही हैं समझ सब भूतगण इस भाँति से ॥ ९.६॥

कल्पान्त में मेरी प्रकृति में जीव लय होते सभी ।
जब कल्प का आरम्भ हो, मैं फिर उन्हें रचता तभी ॥ ९.७॥

अपनी प्रकृति आधीन कर, इस भूतगण को मैं सदा ।
उत्पन्न बारम्बार करता, जो प्रकृतिवश सर्वदा ॥ ९.८॥

बँधता नहीं हूँ पार्थ! मैं इस कर्म-बन्धन में कभी ।
रहकर उदासी-सा सदा आसक्ति तज करता सभी ॥ ९.९॥

अधिकार से मेरे प्रकृति रचती चराचर विश्व है ।
इस हेतु फिरकी की तरह फिरता बराबर विश्व है ॥ ९.१०॥

मैं प्राणियों का ईश हूँ, इस भाव को नहिं जान के ।
करते अवज्ञा जड़, मुझे नर-देहधारी मान के ॥ ९.११॥

चित्त भ्रष्ट, आशा ज्ञान कर्म निरर्थ सारे ही किये ।
वे आसुरी अति राक्षसीय स्वभाव मोहात्मक लिये ॥ ९.१२॥

दैवी प्रकृति के आसरे बुध-जन भजन मेरा करें ।
भूतादि अव्यय जान पार्थ! अनन्य मन से मन धरें ॥ ९.१३॥

नित यत्न से कीर्तन करें दृढ़ व्रत सदा धरते हुए ।
करते भजन हैं भक्ति से मम वन्दना करते हुए ॥ ९.१४॥

कुछ भेद और अभेद से कुछ ज्ञान-यज्ञ विधान से ।
पूजन करें मेरा कहीं कुछ सर्वतोमुख ध्यान से ॥ ९.१५॥

मैं यज्ञ श्रौतस्मार्त हूँ एवं स्वधा आधार हूँ ।
घृत और औषधि, अग्नि, आहुति, मन्त्र का मैं सार हूँ ॥ ९.१६॥

जग का पिता माता पितामह विश्व-पोषण-हार हूँ ।
ऋक साम यजु श्रुति जानने के योग्य शुचि ओंकार हूँ ॥ ९.१७॥

पोषक प्रलय उत्पत्ति गति आधार मित्र निधान हूँ ।
साक्षी शरण प्रभु बीज अव्यय में निवासस्थान हूँ ॥ ९.१८॥

मैं ताप देता, रोकता जल, वृष्टि मैं करता कभी ।
मैं ही अमृत भी मृत्यु भी मैं सत असत अर्जुन सभी ॥ ९.१९॥

जो सोमपा त्रैविद्य-जन निष्पाप अपने को किये ।
कर यज्ञ मुझको पूजते हैं स्वर्ग-इच्छा के लिये ॥
वे प्राप्त करके पुण्य लोक सुरेन्द्र का, सुरवर्ग में ॥
फिर दिव्य देवों के अनोखे भोग भोगें स्वर्ग में ॥ ९.२०॥

वे भोग कर सुख-भोग को, उस स्वर्गलोक विशाल में ।
फिर पुण्य बीते आ फंसे इस लोक के दुख-जाल में ॥
यों तीन वेदों में कहे जो कर्म-फल में लीन हैं ॥
वे कामना-प्रियजन सदा आवागमन आधीन हैं ॥ ९.२१॥

जो जन मुझे भजते सदैव अनन्य-भावापन्न हो ।
उनका स्वयं मैं ही चलाता योग-क्षेम प्रसन्न हो ॥ ९.२२

जो अन्य देवों को भजें नर नित्य श्रद्धा-लीन हो ।
वे भी मुझे ही पूजते हैं पार्थ! पर विधि-हीन हो ॥ ९.२३॥

सब यज्ञ-भोक्ता विश्व-स्वामी पार्थ मैं ही हूँ सभी ।
पर वे न मुझको जानते हैं तत्त्व से गिरते तभी ॥ ९.२४॥

सुरभक्त सुर को पितृ को पाते पितर-अनुरक्त हैं ।
जो भूत पूजें भूत को, पाते मुझे मम भक्त हैं ॥ ९.२५॥

अर्पण करे जो फूल फल जल पत्र मुझको भक्ति से ।
लेता प्रयत-चित भक्त की वह भेंट मैं अनुरक्ति से ॥ ९.२६॥

कौन्तेय! जो कुछ भी करो तप यज्ञ आहुति दान भी ।
नित खानपानादिक समर्पण तुम करो मेरे सभी ॥ ९.२७॥

हे पार्थ! यों शुभ-अशुभ-फल-प्रद कर्म-बन्धन-मुक्त हो ।
मुझमें मिलेगा मुक्त हो, संन्यास-योग-नियुक्त हो ॥ ९.२८॥

द्वेषी हितैषी है न कोई, विश्व मुझमें एकसा ॥
पर भक्त मुझमें बस रहा, मैं भक्त के मन में बसा ॥ ९.२९॥

यदि दुष्ट भी भजता अनन्य सुभक्ति को मन में लिये ।
है ठीक निश्चयवान उसको साधु कहना चाहिये ॥ ९.३०॥

वह धर्म-युत हो शीघ्र शाश्वत शान्ति पाता है यहीं ।
यह सत्य समझो भक्त मेरा नष्ट होता है नहीं ॥ ९.३१॥

पाते परम-पद पार्थ! पाकर आसरा मेरा सभी ।
जो अड़ रहे हैं पाप-गति में, वैश्य वनिता शूद्र भी ॥ ९.३२॥

फिर राज-ऋषि पुण्यात्म ब्राह्मण भक्त की क्या बात है ।
मेरा भजन कर, तू दुखद नश्वर जगत में तात है ॥ ९.३३॥

मुझमें लगा मन भक्त बन, कर यजन पूजन वन्दना ।
मुझमें मिलेगा मत्परायण युक्त आत्मा को बना ॥ ९.३४॥

नवां अध्याय समाप्त हुआ ॥ ९॥

९.९९९॥

श्रीभगवान ने कहा --
मेरे परम शुभ सुन महाबाहो! वचन अब और भी ।
तू प्रिय मुझे, तुझसे कहूँगा बात हित की मैं सभी ॥ १०.१॥

उत्पत्ति देव महर्षिगण मेरी न कोई जानते ।
सब भाँति इनका आदि हूँ मैं, यों न ये पहिचानते ॥ १०.२॥

जो जानता मुझको महेश्वर अज अनादि सदैव ही ।
ज्ञानी मनुष्यों में सदा सब पाप से छुटता वही ॥ १०.३॥

नित निश्चयात्मक बुद्धि ज्ञान अमूढ़ता सुख दुःख दम ।
उत्पत्ति लय एवं क्षमा, भय अभय सत्य सदैव शम ॥ १०.४॥

समता अहिंसा तुष्टि तप एवं अयश यश दान भी ।
उत्पन्न मुझसे प्राणियों के भाव होते हैं सभी ॥ १०.५॥

हे पार्थ! सप्त महर्षिजन एवं प्रथम मनु चार भी ।
मम भाव-मानस से हुए, उत्पन्न उनसे जन सभी ॥ १०.६॥

जो जानता मेरी विभूति, व योग-शक्ति यथार्थ है ।
संशय नहीं दृढ़-योग वह नर प्राप्त करता पार्थ है ॥ १०.७॥

मैं जन्मदाता हूँ सभी मुझसे प्रवर्तित तात हैं ।
यह जान ज्ञानी भक्त भजते भाव से दिन-रात हैं ॥ १०.८॥

मुझमें लगा कर प्राण मन, करते हुए मेरी कथा ।
करते परस्पर बोध, रमते तुष्ट रहते सर्वथा ॥ १०.९॥

इस भाँति होकर युक्त जो नर नित्य भजते प्रीति से ।
मति-योग ऐसा दूँ, मुझे वे पा सकें जिस रीति से ॥ १०.१०॥

उनके हृदय में बैठ पार्थ! कृपार्थ अपने ज्ञान का ।
दीपक जलाकर नाश करता तम सभी अज्ञान का ॥ १०.११॥

अर्जुन ने कहा --
तुम परम-ब्रह्म पवित्र एवं परमधाम अनूप हो ।
हो आदिदेव अजन्म अविनाशी अनन्त स्वरूप हो ॥ १०.१२॥

नारद महा मुनि असित देवल व्यास ऋषि कहते यही ।
मुझसे स्वयं भी आप हे जगदीश! कहते हो वही ॥ १०.१३॥

केशव! कथन सारे तुम्हारे सत्य ही मैं मानता ।
हे हरि! तुम्हारी व्यक्ति सुर दानव न कोई जानता ॥ १०.१४॥

हे भूतभावन भूतईश्वर देवदेव जगत्पते ।
तुम आप पुरुषोत्तम स्वयं ही आपको पहिचानते ॥ १०.१५॥

जिन-जिन महान विभूतियों से व्याप्त हो संसार में ।
वे दिव्य आत्म-विभूतियाँ बतलाइये विस्तार में ॥ १०.१६॥

चिन्तन सदा करता हुआ कैसे तुम्हें पहिचान लूँ ।
किन-किन पदार्थों में करूँ चिन्तन तुम्हारा जान लूँ ॥ १०.१७॥

भगवन! कहो निज योग और विभूतियाँ विस्तार से ।
भरता नहीं मन आपकी वाणी सुधामय धार से ॥ १०.१८॥

श्रीभगवान ने कहा --
कौन्तेय! दिव्य विभूतिआँ मेरी अनन्त विशेष हैं ।
अब मैं बताऊँगा तुझे जो जो विभूति विशेष हैं ॥ १०.१९॥

मैं सर्वजीवों के हृदय में अन्तरात्मा पार्थ! हूँ ।
सब प्राणियों का आदि एवं मध्य अन्त यथार्थ हूँ ॥ १०.२०॥

आदित्यगण में विष्णु हूँ, सब ज्योति बीच दिनेश हूँ ।
नक्षत्र में राकेश, मरुतों में मरीचि विशेष हूँ ॥ १०.२१॥

मैं साम वेदों में तथा सुरवृन्द बीच सुरेन्द्र हूँ ।
मैं शक्ति चेतन जीव में, मन इन्द्रियों का केन्द्र हूँ ॥ १०.२२॥

शिव सकल रुद्रों बीच राक्षस यक्ष बीच कुबेर हूँ ।
मैं अग्नि वसुओं में, पहाड़ों में पहाड़ सुमेरु हूँ ॥ १०.२३॥

मुझको बृहस्पति पार्थ! मुख्य पुरोहितों में जान तू ।
सेनानियों में स्कन्द, सागर सब सरों में मान तू ॥ १०.२४॥

भृगु श्रेष्ठ ऋषियों में, वचन में मैं सदा ॐकार हूँ ।
सब स्थावरों में गिरि हिमालय, यज्ञ में जप-सार हूँ ॥ १०.२५॥

मुनि कपिल सिद्धों बीच, नारद देव-ऋषियों में कहा ।
गन्धर्वगण में चित्ररथ, तरु-वर्ग में पीपल महा ॥ १०.२६॥

उच्चैःश्रवा सारे हयों में, अमृत-जन्य अनूप हूँ ।
मैं हाथियों में श्रेष्ठ ऐरावत, नरों में भूप हूँ ॥१०.२७॥

सुरधेनु गौओं में, भुजंगों बीच वासुकि सर्प हूँ ।
मैं वज्र शस्त्रों में, प्रजा उत्पत्ति-कर कन्दर्प हूँ ॥१०.२८॥

मैं पितर गण में, अर्यमा हूँ, नाग-गण में शेष हूँ ।
यम शासकों में, जलचरों में वरुण रूप विशेष हूँ ॥१०.२९॥

प्रह्लाद दैत्यों बीच, संख्या-सूचकों में काल हूँ ।
मैं पक्षियों में गरुड़, पशुओं में मृगेन्द्र विशाल हूँ ॥१०.३०॥

गंगा नदों में, शस्त्र-धारी-वर्ग में मैं राम हूँ ।
मैं पवन वेगों बीच, मीनों में मकर अभिराम हूँ ॥१०.३१॥

मैं आदि हूँ मध्यान्त हूँ हे पार्थ! सारे सर्ग का ।
विद्यागणों में ब्रह्मविद्या, वाद वादी-वर्ग का ॥१०.३२॥

सारे समासों बीच द्वन्द्व, अकार वर्णों में कहा ।
मैं काल अक्षय और अर्जुन विश्वमुख धाता महा ॥१०.३३॥

मैं सर्वहर्ता मृत्यु, सबका मूल जो होंगे अभी ।
तिय वर्ग में मेधा क्षमा धृति कीर्ति सुधि श्री वाक भी ॥१०.३४॥

हूँ साम में मैं बृहत्साम, वसन्त ऋतुओं में कहा ।
मंगसिर महीनों बीच, गायत्री सुछन्दों में महा ॥१०.३५॥

तेजस्वियों का तेज हूँ मैं और छलियों में जुआ ।
जय और निश्चय, सत्व सारे सत्वशीलों का हुआ ॥१०.३६॥

मैं वृष्णियों में वासुदेव व पाण्डवों में पार्थ हूँ ।
मैं मुनिजनों में व्यास, कवियों बीच शुक्र यथार्थ हूँ ॥१०.३७॥

मैं शासकों का दण्ड, विजयी की सुनीति प्रधान हूँ ।
हूँ मौन गुह्यों में सदा, मैं ज्ञानियों का ज्ञान हूँ ॥१०.३८॥

इस भाँति प्राणीमात्र का जो बीज है, मैं हूँ सभी ।
मेरे बिना अर्जुन! चराचर है नहीं कोई कभी ॥१०.३९॥

हे पार्थ! दिव्य विभूतियाँ मेरी अनन्त अपार हैं ।
कुछ कह दिये दिग्दर्शनार्थ विभूति के विस्तार हैं ॥१०.४०॥

जो जो जगत में वस्तु, शक्ति विभूति श्रीसम्पन्न हैं ।
वे जान मेरे तेज के ही अंश से उत्पन्न हैं ॥१०.४१॥

विस्तार से क्या काम तुमको जानलो यह सार है ।
इस एक मेरे अंश से व्यापा हुआ संसार है ॥१०.४२॥

दसवां अध्याय समाप्त हुआ ॥१०॥

१०.९९९॥

अर्जुन ने कहा --
उपदेश यह अति गुप्त जो तुमने कहा करके दया ।
अध्यात्म विषयक ज्ञान से सब मोह मेरा मिट गया ॥११.१॥

विस्तार से सब सुन लिया उत्पत्ति लय का तत्त्व है ।
मैंने सुना सब आपका अक्षय अनन्त महत्व है ॥११.२॥

हैं आप वैसे आपने जैसा कहा है हे प्रभो ।
मैं देखना हूं चाहता ऐश्वर्यमय उस रूप को ॥११.३॥

समझें प्रभो यदि आप, मैं वह देख सकता हूँ सभी ।
तो वह मुझे योगेश! अव्यय रूप दिखलादो अभी ॥११.४॥

श्रीभगवान ने कहा --
हे पार्थ! देखो दिव्य अनुपम विविध वर्णाकार के ।
शत-शत सहस्रों रूप मेरे भिन्न भिन्न प्रकार के ॥११.५॥

सब देख भारत! रुद्र वसु अश्विनि मरुत आदित्य भी ।
आश्चर्य देख अनेक अब पहले न देखे जो कभी ॥११.६॥

इस देह में एकत्र सारा जग चराचर देखले ।
जो और चाहे देखना इसमें बराबर देख ले ॥११.७॥

मुझको न अपनी आँख से तुम देख पाओगे कभी ।
मैं दिव्य देता दृष्टि, देखो योग का वैभव सभी ॥११.८॥

संजय ने कहा--
जब पार्थ से श्रीकृष्ण ने इस भाँति हे राजन! कहा ।
तब ही दिया ऐश्वर्य-युक्त स्वरूप का दर्शन महा ॥११.९॥

मुख नयन थे उसमें अनेकों ही अनोखा रूप था ।
पहिने अनेकों दिव्य गहने शस्त्र-साज अनूप था ॥११.१०॥

सीमा-रहित अद्भुत महा वह विश्वतोमुख रूप था ।
धारण किये अति दिव्य माला वस्त्र गन्ध अनूप था ।११.११॥

नभ में सहस रवि मिल उदय हों प्रभापुञ्ज महान हो ।
तब उस महात्मा कान्ति के कुछ कुछ प्रकाश समान हो ॥११.१२॥

उस देवदेव शरीर में देखा धनंजय ने तभी ।

बांटा विविध विध से जगत एकत्र उसमें है सभी ॥ ११.१३ ॥

रोमांच तन में हो उठा आश्चर्य से मानो जगे ।
तब यों धनंजय सिर झुका, कर जोड़ कर कहने लगे ॥ ११.१४ ॥

अर्जुन ने कहा --
भगवन! तुम्हारी देह में मैं देखता सुर-गण सभी ।
मैं देखता हूँ देव! इसमें प्राणियों का संघ भी ॥
शुभ कमल आसन पर इसी में ब्रह्मदेव विराजते ।
इसमें महेश्वर और ऋषिगण, दिव्य पन्नग साजते ॥ ११.१५ ॥

बहु बाहु इसमें हैं अनेकों ही उदरमय रूप है ।
मुख और आँखें हैं अनेकों, हरि-स्वरूप अनूप है ॥
दिखता न विश्वेश्वर तुम्हारा आदि मध्य न अन्त है ॥
मैं देखता सब ओर छाया विश्वरूप अनन्त है ॥ ११.१६ ॥

पहिने मुकुट, मञ्जुल गदा, शुभ चक्र धरते आप हैं ।
हो तेज-निधि, सारी दिशा दैदीप्त करते आप हैं ॥
तुम दुर्निरीक्षय महान अपरम्पार हे भगवान हो ॥
सब ओर दिखते दीप्त अग्नि दिनेश सम द्युतिवान हो ॥ ११.१७ ॥

तुम जानने के योग्य अक्षरब्रह्म अपरम्पार हो ।
जगदीश! सारे विश्व मण्डल के तुम्हीं आधार हो ॥
अव्यय सनातन धर्म के रक्षक सदैव महान हो ॥
मेरी समझ से तुम सनातन पुरुष हे भगवान हो ॥ ११.१८ ॥

नहिं आदि मध्य न अन्त और अनन्त बल-भण्डार है ।
शशि-सूर्य रूपी नेत्र और अपार भुज-विस्तार है ॥
प्रज्वलित अग्नि प्रचण्ड मुख में देखता मैं धर रहे ॥
संसार सारा तप्त अपने तेज से हरि कर रहे ॥ ११.१९ ॥

नभ भूमि अन्तर सब दिशा इस रूप से तुम व्यापते ।
यह उग्र अद्भुत रूप लखि त्रैलोक्य थर-थर काँपते ॥ ११.२० ॥

ये आप ही में देव-वृन्द प्रवेश करते जा रहे ।
डरते हुए कर जोड़ जय-जय देव शब्द सुना रहे ॥
सब सिद्ध-संघ महर्षिगण भी स्वस्ति कहते आ रहे ॥
पढ़ कर विविध विध स्तोत्र स्वामिन आपके गुण गा रहे ॥ ११.२१ ॥

सब रुद्रगण आदित्य वसु हैं साध्यगण सारे खड़े ।
सब पितर विश्वेदेव अश्विनि और सिद्ध बड़े बड़े ॥
गन्धर्वगण राक्षस मरुत समुदाय एवं यक्ष भी ॥
मन में चकित होकर हरे! वे देखते तुमको सभी ॥ ११.२२ ॥

बहु नेत्र मुखवाला महाबाहो! स्वरूप अपार है ।
हाथों तथा पैरों व जंघा का बड़ा विस्तार है ॥
बहु उदर इसमें और बहु विकराल डाढ़ें हैं महा ॥
भयभीत इसको देख सब हैं भय मुझे भी हो रहा ॥ ११.२३ ॥

यह गगनचुंबी जगमगाता हरि! अनेकों रंग का ।
आँखें बड़ी बलती, खुला मुख भी अनोखे ढ़ंग का ॥
यह देख ऐसा रूप मैं मन में हरे! घबरा रहा ॥
नहिं धैर्य धर पाता, न भगवन! शान्ति भी मैं पा रहा ॥ ११.२४ ॥

डाढ़ें भयंकर देख पड़ता मुख महाविकराल है ।
मानो धधकती यह प्रलय-पावक प्रचण्ड विशाल है ॥
सुख है न ऐसे देख मुख, भूला दिशायें भी सभी ॥
देवेश! जग-आधार! हे भगवन! करो करुणा अभी ॥ ११.२५ ॥

धृतराष्ट्र-सुत सब साथ उनके ये नृपति-समुदाय भी ।
श्री भीष्म द्रोणाचार्य कर्ण प्रधान अपने भट सभी ॥ ११.२६ ॥

विकराल डाड़ों युत भयानक आपके मुख में हरे ।
अतिवेग से सब दौड़ते जाते धड़ाधड़ हैं भरे ॥
ये दिख रहे कुछ दाँत में लटके हुए रण-शूर हैं ॥
इस डाढ़ में पिस कर अभी जिनके हुए शिर चूर हैं ॥ ११.२७ ॥

जिस भाँति बहु सरिता-प्रवाह समुद्र प्रति जाते बहे ।
ऐसे तुम्हारे ज्वाल-मुख में वेग से नर जा रहे ॥ ११.२८ ॥

जिस भाँति जलती ज्वाल में जाते पतंगे वेग से ।
यों मृत्यु हित ये नर, मुखों में आपके जाते बसे ॥ ११.२९ ॥

सब ओर से इस ज्वालमय मुख में नरों को धर रहे ।
देवेश! रसना चाटते भक्षण सभी का कर रहे ॥
विष्णो! प्रभाएँ आपकी अति उग्र जग में छा रहीं ॥
निज तेज से संसार सारा ही सुरेश तपा रही ॥ ११.३० ॥

तुम उग्र अद्भुत रूपधारी कौन हो बतलाइये ।
हे देवदेव ! नमामि देव! प्रसन्न अब हो जाइये ॥
तुम कौन आदि स्वरूप हो, यह जानना मैं चाहता ॥
कुछ भी न मुझको आपकी इस दिव्य करनी का पता ॥ ११.३१ ॥

श्रीभगवान ने कहा --
मैं काल हूँ सब लोक-नाशक उग्र अपने को किये ।
आया यहाँ संसार का संहार करने के लिये ॥
तू हो न हो तो भी धनंजय! देख बिन तेरे लड़े ॥
ये नष्ट होंगे वीरवर योधा बड़े सब जो खड़े ॥ ११.३२ ॥

अतएव उठ रिपुदल-विजय कर, प्राप्त कर सम्मान को ।
फिर भोग इस धन-धान्य से परिपूर्ण राज्य महान को ॥
हे पार्थ! मैंने वीर ये सब मार पहिले ही दिये ॥

आगे बढ़ो तुम युद्ध में बस नाम करने के लिये ॥ ११.३३ ॥

ये भीष्म द्रोण तथा जयद्रथ कर्ण योद्धा और भी ।
जो वीरवर हैं मार पहिले ही दिये मैंने सभी ॥
अब मार इन मारे हुओं को, वीरवर! व्याकुल न हो ॥
कर युद्ध रण में शत्रुओं को पार्थ! जीतेगा अहो ॥ ११.३४ ॥

संजय ने कहा --
तब मुकुटधारी पार्थ सुन केशव-कथन इस रीति से ।
अपने उभय कर जोड़ कर कँपते हुए भयभीत से ॥
नमते हुए, गद्‌गद गले से, और भी डरते हुए ॥
श्रीकृष्ण से बोले वचन, यों वन्दना करते हुए ॥। ११.३५ ॥

अर्जुन ने कहा --
होता जगत अनुरक्त हर्षित आपका कीर्तन किये ।
सब भागते राक्षस दिशाओं में तुम्हारा भय लिये ॥
नमता तुम्हें सब सिद्ध-संघ सुरेश ! बारम्बार है ॥
हे हृषीकेश! समस्त ये उनका उचित व्यवहार है ॥ ११.३६ ॥

तुम ब्रह्म के भी आदिकारण और उनसे श्रेष्ठ हो ।
फिर हे महात्मन! आपकी यों वन्दना कैसे न हो ॥
संसार के आधार हो, हे देवदेव! अनन्त हो ॥
तुम सत, असत इनसे परे अक्षर तुम्हीं भगवन्त हो ॥ ११.३७ ॥

भगवन! पुरातन पुरुष हो तुम विश्व के आधार हो ।
हो आदिदेव तथैव उत्तम धाम अपरम्पार हो ॥
ज्ञाता तुम्हीं हो जानने के योग्य भी भगवन्त हो ॥
संसार में व्यापे हुए हो देवदेव! अनन्त हो ॥ ११.३८ ॥

तुम वायु यम पावक वरुण एवं तुम्हीं राकेश हो ।
ब्रह्मा तथा उनके पिता भी आप ही अखिलेश हो ॥
हे देवदेव! प्रणाम देव! प्रणाम सहसों बार हो ॥
फिर फिर प्रणाम! प्रणाम! नाथ, प्रणाम! बारम्बार हो ॥ ११.३९ ॥

सानन्द सन्मुख और पीछे से प्रणाम सुरेश! हो ।
हरि बार-बार प्रणाम चारों ओर से सर्वेश! हो ॥
है वीर्य शौर्य अनन्त, बलधारी अतुल बलवन्त हो ॥
व्यापे हुए सबमें इसी से 'सर्व' हे भगवन्त! हो ॥ ११.४० ॥

तुमको समझ अपना सखा जाने बिना महिमा महा ।
यादव! सखा! हे कृष्ण! प्यार प्रमाद या हठ से कहा ॥ ११.४१ ॥

अच्युत! हँसाने के लिये आहार और विहार में ।
सोते अकेले बैठते सबमें किसी व्यवहार में ॥ ११.४२ ॥

सबकी क्षमा मैं मांगता जो कुछ हुआ अपराध हो ॥।
संसार में तुम अतुल अपरम्पार और अगाध हो ॥॥ ११.४२ ॥

सारे चराचर के पिता हैं आप जग-आधार हैं ।
हैं आप गुरुओं के गुरु अति पूज्य अपरम्पार हैं ॥
त्रैलोक्य में तुमसा प्रभो! कोई कहीं भी है नहीं ॥
अनुपम अतुल्य प्रभाव बढ़कर कौन फिर होगा कहीं ॥ ११.४३ ॥

इस हेतु वन्दन-योग्य ईश! शरीर चरणों में किये ।
मैं आपको करता प्रणाम प्रसन्न करने के लिये ॥
ज्यों तात सुत के, प्रिय प्रिया के, मित्र सहचर अर्थ हैं ॥
अपराध मेरा आप त्यों ही सहन हेतु समर्थ हैं ॥। ११.४४ ॥

यह रूप भगवन! देखकर, पहले न जो देखा कभी ।
हर्षित हुआ मैं किन्तु भय से है विकल भी मन अभी ॥
देवेश! विश्वाधार! देव! प्रसन्न अब हो जाइये ॥
हे नाथ! पहला रूप ही अपना मुझे दिखलाइये ॥ ११.४५ ॥

मैं चाहता हूँ देखना, तुमको मुकुट धारण किये ।
हे सहसबाहो! शुभ करों में चक्र और गदा लिये ॥
हे विश्वमूर्ते! फिर मुझे वह सौम्य दर्शन दीजिये ॥
वह ही चतुर्भुज रूप हे देवेश! अपना कीजिये ॥ ११.४६ ॥

श्रीभगवान ने कहा --
हे पार्थ! परम प्रसन्न हो तुझ पर अनुग्रह-भाव से ।
मैंने दिखाया विश्वरूप महान योग-प्रभाव से ॥
यह परम तेजोमय विराट अनंत आदि अनूप है ॥
तेरे सिवा देखा किसी ने भी नहीं यह रूप है ॥ ११.४७ ॥

हे कुरुप्रवीर! न वेद से, स्वाध्याय यज्ञ न दान से ।
दिखता नहीं मैं उग्र तप या क्रिया कर्म-विधान से ॥
मेरा विराट स्वरूप इस नर-लोक में अर्जुन! कहीं ॥
अतिरिक्त तेरे और कोई देख सकता है नहीं ॥ ११.४८ ॥

यह घोर-रूप निहार कर मत मूढ़ और अधीर हो ।
फिर रूप पहला देख, भय तज तुष्ट मन में वीर हो ॥ ११.४९ ॥

संजय ने कहा --
यों कह दिखाया रूप अपना सौम्य तन फिर धर लिया ।
भगवान ने भयभीत व्याकुल पार्थ को धीरज दिया ॥ ११.५० ॥

अर्जुन ने कहा--
यह सौम्य नर-तन देख भगवन! मन ठिकाने आ गया ।
जिस भाँति पहले था वही अपनी अवस्था पा गया ॥ ११.५१ ॥

श्रीभगवान ने कहा --
हे पार्थ! दुर्लभ रूप यह जिसके अभी दर्शन किये ।

सुर भी तरसते हैं इसी की लालसा मन में लिये ॥ ११.५२॥

दिखता न मैं तप, दान अथवा यज्ञ, वेदों से कहीं ।
देखा जिसे तूने उसे नर देख पाते हैं नहीं ॥ ११.५३॥

हे पार्थ! एक अनन्य मेरी भक्ति से सम्भव सभी ।
यह ज्ञान, दर्शन, और मुझमें तत्त्व जान प्रवेश भी ॥ ११.५४॥

मेरे लिये जो कर्म-तत्पर, नित्य मत्पर, भक्त है ।
पाता मुझे वह जो सभी से वैर हीन विरक्त है ॥ ११.५५॥

ग्यारहवां अध्याय समाप्त हुआ ॥ ११॥

११.९९९ ॥

अर्जुन ने कहा --
अव्यक्त को भजते कि जो धरते तुम्हारा ध्यान हैं ।
इन योगियों में योगवेत्ता कौन श्रेष्ठ महान हैं ॥ १२ . १ ॥

श्रीभगवान ने कहा --
कहता उन्हें मैं श्रेष्ठ मुझमें चित्त जो धरते सदा ।
जो युक्त हो श्रद्धा-सहित मेरा भजन करते सदा ॥ १२ . २ ॥

अव्यक्त, अक्षर, अनिर्देश्य, अचिन्त्य नित्य स्वरूप को ।
भजते अचल, कूटस्थ, उत्तम सर्वव्यापी रूप को ॥ १२ . ३ ॥

सब इन्द्रियाँ साधे सदा समबुद्धि ही धरते हुए ।
पाते मुझे वे पार्थ प्राणी मात्र हित करते हुए ॥ १२ . ४ ॥

अव्यक्त में आसक्त जो होता उन्हें अति क्लेश है ।
पाता पुरुष यह गति, सहन करके विपत्ति विशेष है ॥ १२ . ५ ॥

हो मत्परायण कर्म सब अर्पण मुझे करते हुए ।
भजते सदैव अनन्य मन से ध्यान जो धरते हुए ॥ १२ . ६ ॥

मुझमें लगाते चित्त उनका शीघ्र कर उद्धार मैं ।
इस मृत्युमय संसार से बेड़ा लगाता पार मैं ॥ १२ . ७ ॥

मुझमें लगाले मन, मुझी में बुद्धि को रख सब कहीं ।
मुझमें मिलेगा फिर तभी इसमें कभी संशय नहीं ॥ १२ . ८ ॥

मुझमें धनंजय! जो न ठीक प्रकार मन पाओ बसा ।
अभ्यास-योग प्रयत्न से मेरी लगालो लालसा ॥ १२ . ९ ॥

अभ्यास भी होता नहीं तो कर्म कर मेरे लिये ।
सब सिद्धि होगी कर्म भी मेरे लिये अर्जुन! किये ॥ १२ . १० ॥